माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
शिक्षाशास्त्र विषय में "डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी"
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशक

डा० बाबूलाल तिवारी

प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

अनुसंन्धित्सु

मृदुल कुमार वर्मा

एम०कॉम०, एम०एड

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

2003

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध
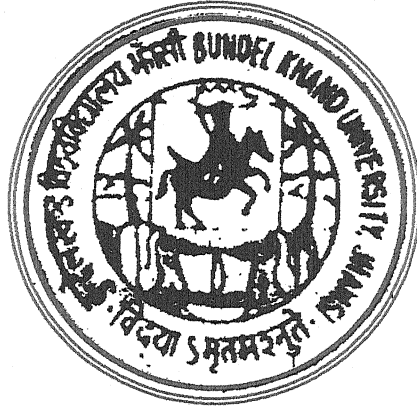
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
शिक्षाशास्त्र विषय में "डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी"
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

शोध निर्देशक-
डॉ० बाबूलाल तिवारी
प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

अनुसन्धित्सु-
मृदुल कुमार वर्मा
एम०कॉम०, एम०एड०

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

एम.कॉम., एम.एड.

प्रवक्ता, शिक्षा संकाय

आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद

☎ (05676) 234416 (कॉ.)
235312 (नि.)
9412168607

निवास

1105बी/1, शम्भूनगर, शिकोहाबाद

जनपद- फिरोजाबाद (उ.प्र.)

पत्रांक..............   दिनांक.......................

घोषणा-पत्र

मैं, मृदुल कुमार वर्मा घोषणा करता हूँ कि यह शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु स्वयं कार्य करके पूर्ण किया है। इसका शीर्षक ***''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध''*** था। यह मेरी निजी कृति है और अन्यत्र कहीं प्रस्तुत नहीं की गयी है।

M.K.Verma

(मृदुल कुमार वर्मा)

अनुसंधित्सु

प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी

☎ (0517) 2444192

शिक्षक आवास
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय परिसर, झाँसी
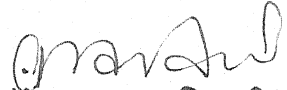
पत्रांक...............   दिनांक.......................

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध प्रबन्ध **''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध''** बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु **श्री मृदुल कुमार वर्मा** ने स्वयं पूर्ण किया है। यह इनका निजी कार्य है जो मेरे संरक्षण एवं निर्देशन में पूर्ण किया गया है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(डॉ. बाबूलाल तिवारी)
निर्देशक

समर्पण
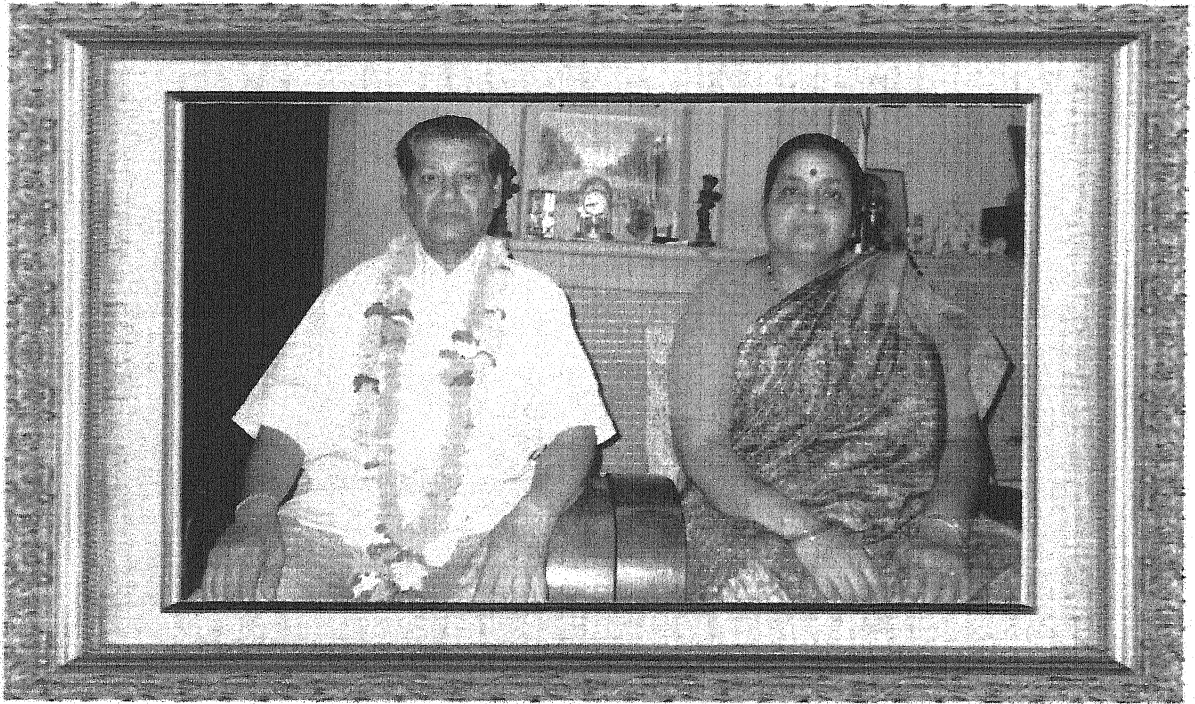
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध परम पूज्यनीय पिता जी
श्री ब्रह्मदत्त वर्मा एवं वन्दनीय माताजी श्रीमती बृजबाला वर्मा
के श्रीचरणों में असीम श्रद्धा
व शत् शत् नमन के साथ सादर समर्पित।

~ मृदुल कुमार वर्मा

इस शोध प्रबन्ध में ***''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध''*** का अध्ययन किया गया है। यह समस्या वर्तमान समय में एक ज्वलन्त समस्या है। इसका कारण है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि दिन प्रतिदिन निम्न स्तर की होती जा रही है। अतः शैक्षिक उपलब्धि के गिरते हुए स्तर को देखकर विद्यार्थी, अभिभावक, प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा प्रशासन सभी चिन्तित हैं, तथा यह चाहते हैं कि शैक्षिक-सम्प्राप्ति उच्च स्तर की हो। वस्तुतः शैक्षिक सम्प्राप्ति अनेक घटकों के परस्पर अर्न्तसम्बन्धों का प्रतिफल है। इसमें एक ओर तो माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि तथा उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित घटक कार्य करते हैं तथा दूसरी ओर उनके पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश से सम्बन्धित घटक होते हैं। इन तीनों आयामों में विद्यमान विभिन्न घटकों के परस्पर अर्न्तसम्बन्धों का प्रतिफल माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के रूप में देखने को मिलता है।

किसी राष्ट्र की उन्नति व अवनति उस राष्ट्र के व्यक्तियों द्वारा प्राप्त प्रेरकों पर आधारित होती है इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक राष्ट्र शिक्षा के माध्यम से अपने व्यक्तियों को विभिन्न उपलब्धियों को धारण करने के लिए प्रेरणा दें। इस प्रकार के गुणों और परिस्थितिक प्रभावों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। जो कि व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं और मुख्य रूप से उन्हें प्रभावित करते हैं जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं अथवा उसी आयु वर्ग में विचरण कर रहे हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इसी अवस्था में विद्यार्थी की रूचियाँ, अभिरूचियाँ, क्षमतायें आदि विकसित होती हैं तथा इसी अवस्था में वह अपने व्यवसाय के विषय में सोचने लगता है लेकिन वर्तमान समय में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में दिन प्रतिदिन अवनति होती जा रही है। इसके अनेक कारण हैं जैसे आज विद्यालय तथा परिवार कर्तव्यच्युत होते जा रहे हैं विद्यालय में शिक्षक भी विद्यार्थियों की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं तथा अभिभावक भी उनको प्रवेश दिलाने के पश्चात् अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

विद्यालय में शिक्षक सामान्य छात्रों को ध्यान में रखकर ही अध्यापन कार्य करते हैं परिणामस्वरूप प्रतिभाशाली छात्रों की प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है तथा पिछड़े और भी अधिक पिछड़ जाते हैं। इससे उनका व्यक्तित्व विघटित होने लगता है इसलिए वह विद्यालय, समाज तथा परिवार में समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं। इसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है इसके अतिरिक्त बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, सामाजिक आर्थिक स्तर, कक्षा का वातावरण, परिवार का वातावरण भी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। कुछ छात्रों को शिक्षकों के अतिरिक्त निर्देशन की आवश्यकता होती है किन्तु आज शिक्षक शिक्षा को रूपयों से तोलने लगे हैं। इसलिए सभी छात्र ट्यूशन नहीं पढ़ पाते हैं और इसका परिणाम निम्न शैक्षिक उपलब्धि होता है। निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण उन्हें उचित व्यवसाय नहीं मिल पाता है और परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए अभिशाप बन जाते हैं एवं अपनी शक्ति को समाज विरोधी कार्यों में लगा देते हैं।

वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने के प्रयास किए जायें। दिशाभ्रमित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को उनकी रूचिनुसार विषयों का चयन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जाये। प्रतिभाशाली तथा शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए छात्र-छात्राओं के अध्ययन की विशेष व्यवस्था की जाये। नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाये। अभिभावकों के द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार किया जाये जिससे माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उन्नत हो सके तथा वह विद्यालय, परिवार एवं समाज के साथ समायोजन स्थापित कर सकें एवं देश की उन्नति में योगदान प्रदान कर सकें।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर ही शोधकर्त्ता ने इस समस्या का चयन किया है।

प्रेरणा, सहानुभूति, स्नेह, उचित, मार्गदर्शन एवं परामर्श के अभाव में किसी महत्वपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जाना सम्भव नहीं होता। प्रस्तुत शोध कार्य को करने में जिन ग्रन्थरत्नों तथा विद्वान मनीषियों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता ली गई है उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना में अपना पावन कर्तव्य समझता हूँ।

कृतज्ञता ज्ञापन के इन क्षणों में सर्वप्रथम सुयोग्य, प्रतिभा सम्पन्न, प्रातः वन्दनीय गुरुदेव **डॉ० बाबूलाल तिवारी**, प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी को

श्रद्धा युक्त नमन करता हूँ। प्रस्तुत शोध आपके कुशल निर्देशन में ही इस स्वरुप को प्राप्त हो सकता है। जिस आत्मीय सहज भाव से आपने मुझ जैसे अल्पज्ञ का मार्ग निर्देशन किया, उनकी कृतज्ञता ज्ञापन की घृष्टता के लिए क्षमा याचना करता हूँ। साथ ही मैं गुरुदेव की सहचरी **डॉ० (श्रीमती) ममता तिवारी और श्री महेश कुमार तिवारी (बाबा)** एवं **श्री शिवशंकर तिवारी** का भी आभारी हूँ जिन्होंने आत्मीयता से शोध कार्य को पूर्ण करने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया।

इस शोध प्रबन्ध को मैं अपने **परम पूज्य पिता जी श्री ब्रह्मदत्त वर्मा एवं वन्दनीय माता जी श्रीमती बृजबाला वर्मा** के चरणों में समर्पित करने में अपना सौभाग्य समझता हूँ जिनकी प्रेरणा स्वरुप ही यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया।

मैं अपने सहोदर भाई **श्री अतुल कुमार वर्मा** एवं बहिन **श्रीमती चेतना** का भी ऋणी हूँ जिनके सत्परामर्श, प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन के परिणामस्वरुप प्रस्तुत शोध पूरा हो सका है।

मैं जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यो, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर प्रदत्तों के एकत्रीकरण में मुझे सहायता प्रदान की है। साथ ही मैं **श्री सुरेश चन्द्र जोशी** का भी आभारी हूँ जिसका सहयोग इस शोध प्रबन्ध के पूर्ण होने में मुझे प्राप्त हुआ है।

शोध कार्य में निरन्तर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने वाले अपने श्वसुर **श्री मथुरानन्दन सिंह** तथा परिवारजनों, इष्टमित्रों, शिक्षक साथियों एवं अन्य सभी शुभचिन्तकों के प्रति उनके अनुपम योगदान के लिए सभी का आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपनी सहचरी **श्रीमती शैल प्रभा**, पुत्री **कु० मृणालिनी** एवं पुत्र **मयंक** के अभूतपूर्व सहयोग के प्रतिदान में स्नेह सिंचित आशीष तथा सुख, समृद्धि एवं ज्ञानमय जीवन की कामना करता हूँ।

अन्त में, मैं **श्री विनय कुमार**, संचालक विनय कम्प्यूटर्स, माथुर काम्पलेक्स, शिकोहाबाद के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध के सुचारू रुप से टंकित किया है।

शोधकर्त्ता
मृदुल कुमार वर्मा

विषय सूची

❋❋❋❋❋❋

तालिका सूची

तालिका सं. | *पृष्ठ संख्या*

❋❋❋❋❋❋

चित्र सूची

❋❋❋❋❋❋

अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

1.1 समस्या का सूत्रपात :

किसी राष्ट्र की उन्नति व अवनति उस राष्ट्र के व्यक्तियों द्वारा प्रेरकों पर आधारित होती है इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक राष्ट्र शिक्षा के माध्यम से अपने व्यक्तियों को विभिन्न उपलब्धियों को धारण करने के लिए प्रेरणा दें। इस प्रकार के गुणों और परिस्थितिक प्रभावों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। जो कि व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं और मुख्यरूप से उन्हें प्रभावित करते हैं जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं अथवा उसी आयु वर्ग में विचरण कर रहे हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि इसी अवस्था में विद्यार्थी की कमियाँ, अभिरूचियाँ, क्षमतायें आदि विकसित होती हैं तथा इसी अवस्था में वह अपने व्यवसाय के विषय में सोचने लगता है लेकिन वर्तमान समय में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में दिन प्रतिदिन अवनति होती जा रही है। इसके अनेक कारण हैं- जैसे आज विद्यालय तथा परिवार कर्तव्यच्युत होते जा रहे हैं विद्यालय में शिक्षक भी विद्यार्थियों की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं तथा अभिभावक भी किशोरों को प्रवेश दिलाने के पश्चात अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

इस प्रकार इस अवस्था में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व किसी निश्चित दशा में विकसित होता है तथा उसमें अनेक शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था जीवन का वह संगम है। जहां एक ओर उमंग तरंग रूपी बसन्त यौवन के दरबाजे पर दस्तक देता है तो दूसरी ओर समस्या रूपी भूकम्प झटके देता है। इसलिए किशोरावस्था को जीवन का बसन्त कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि बसन्त के आने पर जिस प्रकार चौरों ओर हरियाली तथा बनस्पति में परिवर्तन दिखाई देते हैं। प्रकृति जिस प्रकार वृक्षों को पल्लवित करके

उन्हें फल-फूलों से लादकर सुन्दर और सम्पन्न बनाती है। ठीक उसी प्रकार किशोरावस्था में किशोर यौवन के भार से लद जाते हैं तथा उनका शरीर सुन्दर, शक्तिशाली एवं लावण्य से युक्त हो जाता है लेकिन इस अवस्था का एक पहलू और भी है जिसे **स्टेनलेहॉल** ने- ''संधर्ष, तूफान, दबाव एवं तनाव का दौर बताया है।''[1]

उनके अनुसार जीवन के इस नाजुक दौर में किशोर-किशोरियों के जीवन में भयंकर उथल-पुथल होती रहती है। इस अवस्था में संवेगों का उतार-चढ़ाव बहुत ही अनिश्चित होता है। एक पल में वे प्रसन्न दिखाई देते हैं तो दूसरे ही पल वह उदास दिखाई देते हैं। चिन्ता का संवेग उन्हें हर समय घेरे रहता है। इसलिए कभी-कभी किशोर-किशोरियों में संवेग इतना प्रचण्ड हो जाता है कि उस पर नियन्त्रण कर पाना कठिन हो जाता है। अतः अध्यापकों के लिए संवेगों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है जिससे वह अपने विद्यार्थियों की मनःस्थिति को समझ सकें एवं संवेगों को उचित दिशा प्रदान कर सकें क्योंकि नियन्त्रित संवेगों के फलस्वरूप ही छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखा जा सकता है, चूँकि आज के विद्यार्थियों की अधिकांश समस्यायें हमारे आधुनिक, सांस्कृतिक एवं औद्योगिक वातावरण की देन है। उनकी चिंताओं संघर्षों एवं मानसिक तनाव का कारण समाज एवं संस्कृति द्वारा थोपी गई मान्यतायें हैं। इसलिए आधुनिक समाज की मान्यताओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें अपना भविष्य सुधारने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। इस अवस्था में वह एक प्रकार के तूफानी दौर से गुजर रहे होते है परिणामस्वरूप उन्हें अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जो इनका सामना नहीं कर पाते उनका व्यक्तित्व विघटित होने लगता है तथा वे शरारती व भगोड़े छात्र बनकर स्थाई रूप से पढ़ाई, स्कूल एवं शिक्षकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपना लेते हैं तथा बालपराधी तक की सीमा को पार कर जाते हैं। अतः अध्यापकों अभिभावकों एवं समाज का यह कर्तव्य है कि वह उनकी भावनाओं का यथोचित सम्मान करके उनके व्यक्तित्व विकास की नींव को सुदृढ़ बनाये रखें।

इसी तथ्य को पुष्ट करते हुए **ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन** ने लिखा है कि- ''किशोर की कुछ विशिष्ट समस्यायें होती हैं। यदि शिक्षक एवं अभिभावक किशोरों को वयस्कावस्था में सरलतापूर्वक प्रवेश करने में सहायता देना चाहते हैं तो उनको समान

रूप से किशोरों की अनोखी समस्याओं से अवगत होना चाहिए। इस कार्य के लिए आधारभूत व्यवहार सिद्धान्त किशोरावस्था एवं किशोर से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान का होना पहली शर्त हैं।''[2]

किन्तु वर्तमान समय में विद्यालय, अभिभावक एवं समाज अपने कर्तव्यों को भूल गये हैं। इसलिए आज के विद्यार्थी असन्तोष के शिकार हो रहे हैं। इस असन्तोष के कारण ही वह विद्यालय, समाज एवं परिवार के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं जिसका परिणाम निम्न शैक्षिक उपलब्धि होता है। अतः शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने के लिए असन्तोष से सम्बन्धित कारणों के विषय में जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार के असन्तोष से सम्बन्धित कारण निम्नलिखित हैं–

1. आज का विद्यार्थी अपने भविष्य के प्रति चिन्तित है उसे आशा की किरण कहीं दिखाई नहीं दे रही है शिक्षित बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण किए हुए है परिणाम स्वरूप आज का विद्यार्थी लक्ष्य विहीन हो गया है।

2. बालक का पहला विद्यालय घर होता है एवं माता–पिता उसके शिक्षक होते हैं किन्तु जीवन में व्यस्तता बढ़ने के कारण माता–पिता एवं अन्य सम्बन्धियों के मध्य दरार पड़ गई है। जिसे बालक प्रारम्भ से ही देखता है इससे उसके प्रत्यय नकारात्मक बन जाते हैं इनका प्रकटीकरण समूह प्रवृत्ति के रूप में विद्यालय में होता है।

3. सारा समाज अनुशासनहीनता से ग्रसित है। समाज का प्रत्येक वर्ग अनुशासन हीनता का द्योतक है कोई भी कार्य नियमानुसार होता प्रतीत नहीं होता है। चारों ओर रिश्वत तथा अनैतिकता का बोलबाला है। शहरीकरण तथा औद्योगीकरण के कारण नवीन सामाजिक मूल्यों का विकास हो रहा है एवं पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय आदर्शों का अवमूल्यन हो रहा है। विद्यार्थियों से आशा तो की जाती है किन्तु माता–पिता, अधिकारी, शिक्षक, राजनेता आदि सभी आदर्शों का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने में असमर्थ हैं। इन सबकी कमजोरियों का लाभ उठाकर ही विद्यार्थी अनुशासनहीनता प्रदर्शित करते हैं।

4. शिक्षण व्यवसाय को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है। भौतिकवादी परम्परायें बढ़ रहीं हैं अतः अधिक सृजनात्मकता बाले लोग तो प्रशासनिक या अन्य सेवाओं में जाना पसन्द करते हैं। जिन्हें कोई चारा नहीं रहता वह अध्यापन व्यवसाय स्वीकार कर लेते हैं। ऐसे लोगों का न व्यवसाय के प्रति लगाव होता है, न विषय पर अधिकार और न ही छात्र प्रेम होता है। निराशावादी दृष्टिकोण के लोग छात्रों का नेतृत्व प्रदान करने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं। ऐसे शिक्षकों में अध्यावसाय की प्रवृत्ति नहीं होती है अतः छात्र भी उनसे प्रभावित नहीं होते हैं। इसके अतिरिक्त अध्यापकों में एक व्यापारिक दृष्टिकोण भी विकसित हुआ है वे शिक्षा को बिक्री का सौदा मानने लगे है। बढ़ती हुई ट्यूशन की प्रवृत्ति ने छात्र शिक्षक सम्बन्धों को बिगाड़कर रख दिया है। क्योंकि ये किशोरों की जिज्ञासाओं को शान्त नहीं कर पाते हैं। अतः उन पर उचित नियन्त्रण रखने में असफल हो जाते हैं।

5. वर्तमान शिक्षा प्रणाली भी उद्देश्य विहीन है। वह केवल डिग्री की प्राप्ति पर बल देती है। व्यावहारिक ज्ञान प्रदान नहीं किया जाता है। विद्यार्थियों का उद्देश्य किसी प्रकार परीक्षा उत्तीर्ण करना होता है। रटने की प्रवृत्ति पाई जाती है। अनुचित साधनों का प्रयोग होता है। अतः विद्यार्थियों में आत्म विश्वास का विकास नहीं हो पाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में असन्तोष उत्पन्न हो जाता है जिसका प्रतिफल कुसमायोजन होता है।

6. विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का पूर्णतः अभाव है। परिणामतः विद्यार्थियों का सांवेगिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास अधूरा रह जाता है।

यद्यपि कोठारी आयोग ने माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की सिफारिश की है किन्तु फिर भी हमारे माध्यमिक विद्यालयों में इन मूल्यों की शिक्षा का अभाव है। अतः उपरोक्त सभी कारणों के परिणाम स्वरूप माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कुसमायोजित हो जाते हैं और इस कुसमायोजन का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। विद्यालय, समाज तथा परिवार का यह कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों की समस्याओं को समझें तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत

करने का प्रयास करें, क्योंकि किशोरावस्था ही वह समय है जबकि व्यक्ति की रूचियां, अभिरूचियां, मूल्य आदि विकसित होते हैं उनका मानसिक विकास तेजी से तथा बहुत अधिक मात्रा में होता है तथा बुद्धि अपने विकास के चरम बिन्दु पर पहुँचती है एवं इसी अवस्था में वह अपने व्यवसाय के विषय में सोचना प्रारम्भ कर देते हैं। अतः अध्यापकों का यह कर्तव्य है कि वह उनकी रूचियों, अभिरूचियों तथा बुद्धि को ध्यान में रखते हुए अध्यापन कार्य करें।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस बात पर बल देते हुए सिफारिश की है कि "हमारे माध्यमिक विद्यालयों को छात्रों की विभिन्न प्रवृत्तियों, रूचियों और योग्यताओं को पूर्ण करने के लिए विभिन्न शैक्षिक व्यवसायों की व्यवस्था करनी चाहिए।"[3]

किन्तु अनेक आयोगों की सिफारिशों के बावजूद भी हमारी माध्यमिक शिक्षा में कोई सुधार नहीं हो सका है। आज भी शिक्षक सामान्य कक्षा को ध्यान में रखकर ही शिक्षण कार्य करते हैं, जबकि कक्षा में विभिन्न प्रकार के छात्र अध्ययन करते हैं। कुछ की बुद्धिलब्धि अधिक होती है तथा कुछ की कम तथा कुछ शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए होते हैं, लेकिन विद्यालयों में इन छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है परिणाम स्वरूप प्रतिभाशाली छात्रों की प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है तथा पिछड़े छात्र और भी अधिक पिछड़ जाते हैं। इससे उनका व्यक्तित्व विघटित होने लगता है तथा वह कुसमायोजित हो जाते हैं। इस प्रकार शिक्षण तथा अधिगम एक समस्या मूलक प्रक्रिया है जिसका मूल उद्देश्य छात्रों के अधिगम को उन्नत करना है इस प्रक्रिया हेतु अनेक कारक उत्तरदायी है वास्तव में अध्यापक और छात्र शिक्षण अधिगम क्रियाओं को अपनाकर अपने-अपने उद्देश्यों सिखाना और सीखना को प्राप्त करते हैं फिर भी अधिगम चर, अध्यापक चर, कक्षा-कक्ष अन्तःक्रिया, सामूहिक विशेषताएं, भौतिक विशेषताऐं, पर्यावरण जन्य विशेषताएं, आदि छात्रों के अधिगम को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं की सम्प्राप्ति में भिन्नता का प्रमुख कारण अध्यापकों की क्षमताओं, रूचियों, व्यक्तित्व के गुणों, प्रतिभाओं, कौशलों और शैक्षिक योग्यताओं पर आधारित होती है। इसी प्रकार छात्र-छात्राएं कक्षा-कक्ष के वातावरण में अधिगम के साथ-साथ व्यक्तित्व के गुणों, योग्यताओं, क्षमताओं का विकास विभिन्न परिस्थितियों में करते हैं

क्योंकि विद्यालयी वातावरण छात्र–छात्राओं को विभिन्न प्रकार के वातावरण और अवसर प्रदान करते हैं। इसलिए अध्यापक अधिगम सिद्धान्तों और शिक्षण सिद्धान्तों का उपयोग करके यह प्रयास करते हैं कि छात्र–छात्राओं के व्यवहारों को किस प्रकार प्रभावित किया जा सकता है। इसलिए छात्र विविध रूप से शैक्षिक क्रियाओं से प्रभावित होते है। कुछ शिक्षण अधिगम सिद्धान्त छात्र–छात्राओं को विषयवस्तु सीखने में सफलता प्रदान करते हैं, किन्तु फिर भी बालक–बालिकाऐं अपने वंशानुक्रम से प्राप्त प्रतिभाओं, रूचियों, दृष्टिकोणों, जीवन सम्बन्धी मूल्यों, बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा विभिन्न प्रकार के कौशलों को प्राप्त करके विद्यालय, परिवार तथा समाज के साथ समायोजन स्थापित करते हैं। इन सभी कारणों के अतिरिक्त छात्र–छात्राऐं अपने परिवार के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर से भी प्रभावित होते हैं। उनके अभिभावक उन्हें विभिन्न प्रकार की सुविधाओं प्रेरकों व पृष्ठभूमि से उन्हें प्रभावित करते है। इस प्रकार बालक विभिन्न प्रकार के विद्यालयों जैसे– कॉन्वेन्ट, पब्लिक स्कूल, सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। इन विद्यालयों का चयन छात्र–छात्राऐं अपने माता–पिता के निर्देशन में रहकर अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के अनुसार करते हैं। ये सभी विद्यालय बालकों को अलग–अलग प्रकार की शैक्षिक सम्प्राप्ति प्रदान करने में सहायक होते हैं। ऐसा अनुभव किया गया है कि अच्छे विद्यालय केवल समाज के उच्च वर्ग के छात्र–छात्राओं को ही शिक्षित करने में सफल हुए हैं तथा ऐसे बालकों ने ही उच्च श्रेणी के व्यवसायों को प्राप्त किया है। जबकि अधिकांश बालक ऐसे विद्यालयों में प्रवेश करते हैं जहां कि सुविधाएं उच्चस्तरीय विद्यालयों के समकक्ष नहीं होती हैं तथा यह शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त बालक–बालिकाएं व्यक्तिगत विभिन्नतायें रखते हैं और इन विभिन्निताओं के कारण वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी योग्यताओं, क्षमताओं व रूचियों का विकास करते हैं, चूंकि बालक समाज के विभिन्न वर्गों से आते हैं इसलिए वे अधिगम प्रक्रियाओं से विभिन्न प्रकार से प्रभावित होते हैं। शिक्षा द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि छात्र–छात्राएं शिक्षण सिद्धान्तों को अपनाकर शिक्षा के उच्च स्तरों को ग्रहण करें। प्रत्येक विद्यालय इस ओर प्रयासरत रहता है, किन्तु यह प्रयास तब तक सम्भव नहीं होता जब तक कि छात्र–छात्राएं अपनी सामाजिक आवश्यकताओं को समझकर अपनी–अपनी क्षमताओं, रूचियों और योग्यताओं का सही उपयोग न करें, क्योंकि कई दशकों तक अध्यापक यह सोचते रहे

कि उनके द्वारा सही शिक्षण सिद्धान्त को अपनाये जाने से ही कक्षागत वातावरण सही उपलब्धि दे सकता है तथा बालक-बालिकायें अधिगम करके अच्छी शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यह धारणा केवल कुछ समय तक ही रहीं। वर्तमान परिस्थितियों में यह समझा जाने लगा है कि छात्र-छात्राओं की विशेषताओं को समझना आवश्यक है, क्योंकि यदि सभी बालकों को सामान्य वातावरण व परिस्थितियां प्रदान की जायें तथा अधिक से अधिक सुविधायें प्रदान की जायें तब भी वह विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं जो कि उनके सामाजिक वातावरण, व्यक्तिगत विभिन्नताओं, बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा समायोजन तथा शारीरिक विकास पर आधारित होती है। जिनके द्वारा उनका अध्यवसाय, दायित्व, गतिशीलता आदि प्रभावित होती है तथा इन सबका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है और शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव छात्रों के परिवार, समाज तथा विद्यालय में समायोजन पर पड़ता है। कोई समाज इतना अधिक सामाजिक तथा आर्थिक विकास क्यों कर सका जबकि अन्य समाज या राष्ट्र इतने क्यों पिछड़ गए? यह एक विचारणीय प्रश्न है इसी प्रकार कई राष्ट्र शिक्षा के माध्यम से अत्यधिक तकनीकी, वैज्ञानिक तथा आर्थिक विकास कर सके और अन्य राष्ट्र उन पर आश्रित हो गए। इसका कारण है कि ये शिक्षित राष्ट्र केवल शिक्षा के माध्यम से ही अधिक सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति कर सके। यदि समस्या का गहनता से अध्ययन किया जाये तो प्रतीत होता है कि इन राष्ट्रों ने अपनी शिक्षा नीति को अधिक सबल बनाया है और छात्र-छात्राओं को कक्षागत परिस्थितियों में अधिक सुविधायें प्रदान करके तथा शिक्षण क्रियाओं को अधिक प्रभावशाली बनाकर उन्हें शैक्षिक उपलब्धियों के द्वारा सुअवसर प्रदान कर नवीन खोजें, अनुसंधान की विभिन्न प्रक्रियाओं, मशीनों, यन्त्रों और विद्याओं को खोजने में प्रेरणा प्रदान की। इन सभी क्रियाओं को समझने के लिए आवश्यक है कि ऐसे राष्ट्रों के व्यक्तियों, बालक-बालिकाओं के द्वारा अपनाये गये प्रेरकों, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक संस्कृति आदि का हाथ रहा है जो कि राष्ट्र की उन्नति व अवनति को प्रभावित करते हैं। अनुसंधान प्रक्रिया और अन्य साधनों से स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी राष्ट्र उस सीमा तक उन्नति नहीं कर सकता है जबकि उसके व्यक्ति निष्पत्ति प्रेरकों को धारण न करें, **मैक्लीलैन्ड** ने अपनी पुस्तक **''दी अचीविंग सोसाइटी''** में इसी प्रकार के कारकों का वर्णन किया है-

"A tremendous economic growth has been registered by the developed countries and the progress made by them could provide an increase in the material welfare that produced these effects? How did it happen? Why did a particular country decline in importance both commercially and artistically until at the present time. It is not particularly distinguished as compared with many other regions of the world was it just luck or a peculiar combination of circumstances? Perhaps, we can find something in the motives customs or institution in the economic sphere."[4]

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि किसी राष्ट्र की उन्नति व अवनति उस राष्ट्र के व्यक्तियों द्वारा प्राप्त प्रेरकों पर आधारित होती है। इसलिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक राष्ट्र शिक्षा के माध्यम से अपने व्यक्तियों को विभिन्न उपलब्धियों को धारण करने के लिए प्रेरणा दे इस प्रकार के गुणों और पारिस्थितिक प्रभावों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है जो कि व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं का हल इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों तथा भूगोलवेत्ताओं के पास नहीं है। इन सभी समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों के पास है। यद्यपि बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन, आत्मप्रत्यय, चिन्तन तथा व्यक्तित्व के अन्य गुणों से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हो चुके हैं किन्तु फिर भी इस क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता है। चूंकि वर्तमान समय में राष्ट्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जाए। दिशा भ्रमित किशोरों को उनकी रूचि के अनुसार विषयों का चयन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जाए तथा शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए किशोरों के लिए अध्ययन की विशेष व्यवस्था की जाये, व्यवसाय चयन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जाये, समय-समय पर पुरस्कार प्रदान करके बालकों को प्रोत्साहित किया जाये। जिससे वे परिवार, विद्यालय तथा समाज के साथ समायोजन स्थापित कर सकें एवं देश की उन्नति में योगदान दे सकें।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया था। इस प्रकार यह समस्या वर्तमान समय की एक ज्वलन्त समस्या है।

१.२ समस्या का कथन :

''माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध।''

१.३ समस्या का औचित्य तथा महत्व :

वर्तमान युग विज्ञान का युग है विज्ञान के द्वारा देश की चहुंमुखी प्रगति हुई है। नई तकनीक का विकास हुआ है। मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच गया है तथा असाध्य से असाध्य रोगों का इलाज सम्भव हुआ है। वहीं दूसरी ओर अनेक समस्याओं का सूत्रपात हुआ है, जिनमें प्रमुख समस्या बेरोजगारी की है और उसमें भी महत्वपूर्ण शिक्षित बेरोजगारी है। यद्यपि इसके अनेक कारण हैं किन्तु प्रमुख कारण निम्न शैक्षिक उपलब्धि का होना लगता है, क्योंकि जिन छात्रों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि होती है। वह डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि बन जाते हैं, किन्तु जिन छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है वह बेरोजगार ही रह जाते हैं। शिक्षित हो जाने के कारण एक ओर तो वह शारीरिक परिश्रम नहीं कर पाते हैं ओर दूसरी ओर नौकरी न मिलने के कारण उन्हें जीवनयापन करने में कठिनाई का अनुभव होता है। फलस्वरूप वह अनैतिक कार्यो में लिप्त हो जाते हैं। अतः वर्तमान समय में यह ज्वलन्त समस्या है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार उन्नत किया जाये क्योंकि शैक्षिक उपलबिध पर केवल बुद्धि का ही प्रभाव नहीं पड़ता है अपितु माता-पिता, शिक्षक, वातावरण आदि का भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए वर्तमान समय में शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों को खोजना अत्यन्त आवश्यक है जिससे कि शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सके क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि के उन्नत होने से छात्रों को उचित व्यवहार मिल सकेगा तथा वह कुसमायोजित होने से बच जायेंगे। यह सर्वमान्य सत्य है कि यदि व्यक्ति को उसकी रूचि एवं क्षमताओं के अनुरूप व्यवसाय का चयन करने में सफलता मिल जाती है तो उसका सर्वांगीण विकास होता है तथा उसे सुखी जीवन व्यतीत करने में सफलता मिल जाती है। सुखी व्यक्ति का समायोजन अच्छा होता है परिणामस्वरूप उसकी आर्थिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि अच्छी होती है। इसलिए अध्यापकों तथा अभिभावकों का कर्तव्य है कि वे किशोरों को उचित परामर्श प्रदान करें। जिसके द्वारा छात्र-छात्राऐं अपनी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत कर

सकें क्योंकि पूर्व माध्यमिक स्तर को पार कर लेने के बाद जब छात्र माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश लेते हैं उस समय उनमें सोचने, कार्य करने एवं नई बातों के प्रति जिज्ञासा की प्रवृत्ति उत्पन्न हो चुकी होती है। उनकी रूचियां, अभिरूचियां आदि काफी कुछ स्पष्ट हो जाती हैं तथा उनकी क्षमताओं एवं बुद्धि के स्तर को समझा जा सकता है। किशोरावस्था में व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषतायें स्थिर होने लगती हैं। वे अपने भविष्य के कार्यक्रम के विषय में सोच सकते है। अपनी क्षमताओं को समझ सकते हैं तथा पाठ्यक्रम के चयन में अपने विवेक का प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु हमारे देश में किशोरों को बच्चा ही समझा जाता है। उनकी रूचियों, अभिरूचियों क्षमताओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। अभिभावक तथा अध्यापक छात्रों को अपनी रूचिनुसार विषय दे देते हैं अथवा अधिकांश विद्यालयों में वह विषय ही नहीं होते हैं। जिनको किशोर पढ़ना चाहते हैं। कुछ विद्यालयों में उपकरण, प्रयोगशाला, सहायक सामग्री एवं पुस्तकालय का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त विद्यालय में अध्यापक भी छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताओं पर कोई ध्यान नहीं देते हैं। अध्यापक सामान्य छात्रों को ध्यान में रखकर ही अध्यापन कार्य करते हैं परिणाम स्वरूप प्रतिभाशाली छात्रों को उससे कोई लाभ नहीं हो पाता है तथा पिछड़े छात्र और भी अधिक पिछड़ जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में शिक्षक अपने दायित्व को भूल गये हैं। वह येन केन प्रकारेण पैसा कमाना चाहते हैं तथा छात्रों को ट्यूशन पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिन छात्रों के पास पैसा होता है वह तो ट्यूशन पढ़ लेते हैं लेकिन जिनके पास पैसा नहीं होता है वह ट्यूशन नहीं पढ़ पाते हैं और उन्हें कम अंक प्राप्त होते हैं। किन्तु इसमें अध्यापकों को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि कुछ निजी संस्थाओं में तो अध्यापकों का अत्यधिक शोषण होता है प्रबन्धक अध्यापकों से काम अधिक लेते हैं तथा पैसा कम देते हैं फलस्वरूप उन्हें अपने जीवनयापन के लिए विभिन्न प्रकार से पैसा कमाना पड़ता है। क्योंकि आर्थिक अभाव के कारण वह स्वयं कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं तथा इसका प्रभाव छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ता है और उन्हें मनोनुकूल व्यवहार नहीं मिल पाता है। इसीलिए वह भगोड़े, लुटेरे तथा अपराधी बन जाते हैं तथा देश के लिए घातक सिद्ध होते हैं अतः यह आवश्यक है कि प्रारम्भ से ही ऐसे प्रयास किये जायें जिससे उनकी शैक्षिक निष्पत्ति को बढ़ाया जा सके क्योंकि यदि किशोरों की शैक्षिक निष्पत्ति प्रारम्भ

से ही अच्छी होगी तो उन्हें उचित व्यवसाय मिल सकेगा। परिणांम स्वरूप वह समाज तथा राष्ट्र के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र के लिए लाभ होगा।

(अ) <u>विद्यार्थियों के लिए महत्व</u> :

प्रस्तुत समस्या छात्रों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान समय में सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या निम्न शैक्षिक उपलब्धि की है अतः निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण उन्हें मनोनुकूल व्यवसाय नहीं मिल पाता है फलस्वरूप उनका कहीं पर भी समायोजन स्थापित नहीं हो पाता है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के द्वारा छात्रों को यह लाभ होगा कि शिक्षक उनकी रूचियों, अभिरूचियों तथा बुद्धि के स्तर के अनुसार शिक्षा प्रदान करेंगे। जिससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होगी तथा उन्हें मनोनुकूल व्यवसाय मिल सकेगा। परिणाम स्वरूप वह विभिन्न प्रकार की हताशाओं तथा कुण्ठाओं का सामना कने से बच जायेंगे तथा परिवार, विद्यालय तथा समाज के साथ उचित प्रकार से समायोजन स्थापित कर सकेंगे।

(ब) <u>अभिभावकों के लिए महत्व</u> :

समाज एक वृहद् समुदाय है तथा परिवार उस वृहद् समुदाय के अन्तर्गत एक लघु समुदाय है अतः यह आवश्यक है कि परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के सुख-दुख को समझें तथा समय-समय पर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करें लेकिन वर्तमान समय में परिवार के सदस्य अपने कर्तव्यों को भूल गए हैं। वह एक दूसरे के हित को ध्यान में नहीं रखते हैं तथा एक दूसरे से बात करने तक का समय नहीं है। इसका प्रमुख कारण भौतिकता का बढ़ना है। वर्तमान समय में माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय में प्रवेश कराना मात्र ही अपना कर्तव्य समझते हैं तथा उन्हें किसी प्रकार का उचित मार्गदर्शन प्रदान नहीं किया जाता है। इसके साथ ही साथ वह अपने बच्चों को अपनी सुविधानुसार तथा रूचिनुसार विषय दिला देते हैं तथा बच्चों की रूचियों, अभिरूचियों की ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है तथा उन्हें उचित व्यवसाय नहीं मिल पाता है तो

अभिभावक उन्हें विभिन्न प्रकार से लज्जित करते हैं तथा प्रताड़ित करते हैं, परिणाम स्वरूप बालक माता-पिता से घृणा करने लगते हैं और गलत लोगों के सम्पर्क में आ जाते हैं। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन से यह लाभ होगा कि माता-पिता अपने बच्चों को उनकी बुद्धि के स्तर के अनुसार तथा रूचिनुसार विषय दिलायेंगे तथा उचित निर्देशन प्रदान करेंगे। जिससे बच्चों की उपलब्धि उच्च स्तर की होगी तथा उन्हें मनचाहा व्यवसाय मिल सकेगा और वह सभी जगह समायोजित हो सकेंगे।

(स) शिक्षकों के लिए महत्व :

प्रत्येक शिक्षक प्रयासरत रहता है कि उसके छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की हो किन्तु जब शैक्षिक उपलब्धि में सुधार नहीं होता है तो उन्हें निराशा घेरने लगती है और उनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है इसलिए आवश्यक है कि उसका मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहे। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन द्वारा शिक्षकों को यह लाभ होगा कि वह अपने अध्यापन कार्य में सुधार ला सकेगें, नवीन विधियों आदि से परिचित होंगे तथा छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान कर सकेंगे। परिणाम स्वरूप छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होगी। जिससे छात्रों को उचित व्यवसाय मिल सकेगा तथा शिक्षक भी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे।

(द) राष्ट्र के लिए महत्व :

आज का विद्यार्थी ही कल राष्ट्र का नागरिक होगा और जब विद्यार्थी ही पथभ्रष्ट हो गया तो देश अवनति के गर्त में गिर जायेगा। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन से छात्र अपनी शैक्षिक उपलब्धि को उच्च स्तर की कर सकेंगे तथा कुसमायोजन से बच सकेंगे परिणाम स्वरूप वह समाज तथा राष्ट्र के लिए एक अच्छे नागरिक सिद्ध होंगे और देश को उन्नति के शिखर पर अग्रसर करने के लिए हर समय प्रयत्नशील रहेंगे। उनकी हताशायें, कुण्ठायें समाप्त हो जायेंगी तथा वह अभिभावक समाज तथा विद्यालय के साथ समायोजन स्थापित कर सकेंगे और राष्ट्र के लिए वरदान सिद्ध होगें।

१.४ समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :

प्रस्तुत समस्या में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग किया गया था-

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी
2. शैक्षिक उपलब्धि
3. बुद्धि
4. समायोजन
5. उपलब्धि प्रेरणा

(१) माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी :

प्रस्तुत शोध में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को लिया गया है क्योंकि इस कक्षा के छात्र–छात्राऐं किशोरावस्था के होते हैं। इस समस्या में किशोर किशोरियां तथा छात्र–छात्राएं पर्यायवाची के रूप में लिए गए हैं विद्यार्थी शब्द का प्रयोग भी किशोर–किशोरियों के लिए किया गया है।

(२) शैक्षिक उपलब्धि :

प्रत्येक विद्यालय में विभिन्न प्रकार के छात्र शिक्षा ग्रहण कने के लिए आते हैं समान मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न न होने पर भी वह समय की एक ही अवधि में विभिन्न विषयों और कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं।उनकी इसी प्रगति, प्राप्ति या उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए उपलब्धि परीक्षाओं की व्यवस्था की जाती है। अतः उपलब्धि परीक्षायें वे परीक्षायें हैं जिनकी सहायता से विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

सी.वी. गुड के अनुसार– ‘‘स्कूल के विषयों से उत्पन्न ज्ञान की क्षमता, परीक्षांक अथवा अध्यापक द्वारा प्रदत्त अंकों से मानी जाती है।’’[5]

इसके अतिरिक्त निष्पत्ति परीक्षा के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थी द्वारा किसी विषय का कितना अध्ययन किया गया है बुद्धि एवं शारीरिक क्षमता दोनों के उपयोग की परीक्षा ली जाती है निष्पत्ति परीक्षा द्वारा यह मापन किया जाता है कि मस्तिष्क कहां तक ज्ञान प्राप्त करने में सहायक हुआ है।

इबेल के अनुसार– ‘‘उपलब्धि परीक्षण अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किए गए ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।’’[6]

इस प्रकार उपलब्धि परीक्षणों द्वारा एक निश्चित समयावधि के प्रशिक्षण एवं सीखने के पश्चात् व्यक्ति के ज्ञान एवं समझने का किसी एक विषय या विभिन्न विषयों में मापन किया जाता है प्रायः विद्यालय के समस्त विषयों में ज्ञान का मापन करने हेतु इसका प्रयोग होता है क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य ज्ञान के मापन के साथ-साथ शैक्षिक क्षेत्र में पूर्व कथन भी होता है।

सुपर के अनुसार- "एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा वह कोई कार्य कितनी भली भांति कर लेता है।"[7]

प्रस्तुत शोध कार्य में हाईस्कूल के प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है। यद्यपि वर्तमान समय में नकल को देखते हुए इन प्राप्तांकों को लेना उचित नहीं लगता किन्तु इन प्राप्तांकों को लेते समय यह सोचा गया कि जब राज्य सरकार ही इन प्राप्तांकों को स्वीकार करती है तो अपने शोधकार्य में इन प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लेने में कोई हानि नहीं है।

(3) बुद्धि :

शिक्षा के ही नहीं अपितु सामाजिक तथा भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र में बुद्धि तथा उसकी मापन क्रिया अत्यधिक महत्वपूर्ण है। किसी समस्या को बिना किसी कठिनाई के विधिपूर्वक हल करना बुद्धिमत्ता का प्रतीक समझा जाता है। विश्व के महान साहित्यकार, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा महान राजनीतिज्ञ बुद्धि के सन्दर्भ में विशेष योग्यता प्राप्त कर रहे हैं।

अनेक विद्वानों ने बुद्धि की परिभाषा अपने-अपने ढंग से दी है। उनका मूल विचार भी उसी प्रकार का रहा है। **टर्मन** ने बुद्धि को अमूर्त कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता माना है। **बुड्रा** ने इसे योग्यता ग्रहण करने के रूप में स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों ने इसे सूक्ष्म विश्लेषण एवं आविष्कार करने की प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार किया है। अतः बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति अनुक्रिया करता है। वह वातावरण तथा परिस्थितियों का शिकार नहीं बनता। वह स्वयं को समायोजित करता है तथा स्वयं वातावरण के अनुकूल बन जाता

है। इस प्रकार बुद्धि के स्वरूप एवं अर्थ को प्रकट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने समय-समय पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। **राइल** ने सन् 1949 में यह तर्क प्रस्तुत किया था कि बुद्धि द्वारा किसी गुण का बोध न होकर एक प्रवृत्ति की सूचना मिलती है। यह शब्द व्यक्ति की क्षमताओं या संज्ञानात्मक शक्तियों की सूचना देने के लिए प्रायः प्रयुक्त किया जाता है। बुद्धि के सम्प्रत्यय को विकसित करने की दृष्टि से उन्नीसवीं शताब्दी के सुविख्यात विचारक **हरवर्ट स्पेन्सर** तथा **फ्रान्सिस गाल्टन** का विशेष हाथ रहा है। इन्होंने बुद्धि को व्यक्ति की विशिष्ट योग्यताओं से भिन्न एक सामान्य योग्यता के रूप में परिकल्पित किया था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में **जैक्सन** तथा प्रसिद्ध तन्त्रिका विज्ञानी **सेरिंगटन** ने इस दृष्टिकोण को अपनाया था और इसे परिवर्तित किया था तत्पश्चात् **बर्ट** ने बुद्धि को सामान्य योग्यता के रूप में उपकल्पित करने वाले उक्त सिद्धान्त को स्वीकृति दे दी तथा यह माना कि व्यक्ति की बुद्धि उसके प्रमस्तिष्क बल्कुट में तन्त्रिका कोशिकाओं की व्यवस्था, उनके सम्बन्धों की जटिलता एवं संख्या पर निर्भर करती है। इस प्रकार बुद्धि की अनेक परिभाषायें दी गई हैं तथा अनेकों सभाओं में यह तय किया गया है कि बुद्धि की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा ही मान ली जाये। लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हो पाया है सदस्यगण इस बात पर तो सहमत हो गए कि बुद्धि क्या नहीं है, जैसे बुद्धि, चरित्र अथवा व्यक्तित्व नहीं है। फिर भी **बेलार्ड** ने चार बातें कही हैं-

1. बुद्धि किसी विशेष आयु तक ही बढ़ती है उसके बाद केवल अनुभव बढ़ता है।
2. बुद्धि तथा आयु में एक अनुपात होता है जो लगभग एक सा रहता है।
3. बुद्धि किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण से नहीं बढ़ सकती।
4. बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि और जीवन की सफलता के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

इस प्रकार बुद्धि की विशेषता यह है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन दोनों को प्रभावित करती है। बुद्धि सर्वांगिक क्षमता है जिसमें चिन्तन तथा पर्यावरण आदि से समायोजन की क्षमता है। बुद्धि व्यक्ति को समायोजन करने में सहायता करती है। जब समन्वय हो जाता है तो व्यक्ति सन्तुलित हो जाता है तथा सभी कार्यों को सही

ढंग से करता है। प्रायः देखा गया है कि यदि व्यक्ति संवेगात्मक स्थिति में है जैसे-भय, क्रोध आदि तो ऐसे समय में वह सामान्य रूप से कार्य नहीं कर सकता है। बुद्धि अधिक होने पर व्यक्ति अपने संवेगों पर नियन्त्रण कर लेता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग कर लेता है। बुद्धिमान व्यक्ति के लिए कोई समस्या नहीं होती है यदि होती भी है तो वह उसे सुलझा लेता है. जबकि मूर्ख को तो समस्या ही दिखाई नहीं देता है फिर उसके उपचार का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। बुद्धि को केन्द्र बिन्दु मानकर, आत्मविश्वास, समन्वय, शैक्षिक उपलब्धि आदि के क्षेत्र में अनेकों कार्य हुए हैं। गेट्स ने तो यहां तक कह दिया कि जीवन की सफलता वास्तव में व्यक्ति की बुद्धि तथा उसके प्रयोग पर ही आधारित है। यह जन्म से ही आती है किसी भी प्रशिक्षण अथवा दवा से इसे बढ़ाया नहीं जा सकता और स्कूल तथा कालेज में भी जो उपलब्धि है। वह भी बुद्धि से प्रभावित होती है।

इस प्रकार कुछ विद्वानों ने समायोजन की योग्यता माना है कुछ ने अधिगम की योग्यता, अमूर्त चिन्तन की योग्यता तथा कुछ विद्वानों ने समस्या समाधान की योग्यता के रूप में स्वीकार किया है।

समायोजन तथा बुद्धि :

कुछ विद्वानों ने बुद्धि को समायोजन के लिए आवश्यक माना है। जो व्यक्ति जितना अधिक अपने आपको वातावरण के प्रति समायोजित कर लेताहै वह उतना ही बुद्धिमान होता है इस मत से प्रभावित विद्वानों द्वारा प्रस्तुत परिभाषायें इस प्रकार हैं-

स्टर्न के अनुसार- "बुद्धि जीवन की नवीन समस्याओं के समायोजन की सामान्य योग्यता है।"[8]

कालविन के अनुसार- "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि रखता है जिस अनुपात में नये वातावरण में समायोजित होने की क्रिया सीख चुका होता है या सीख सकता है।"[9]

अधिगम की योग्यता :

कुछ मनोवैज्ञानिक बुद्धि को अधिगम की योग्यता मानते है बुद्धि से ही व्यक्ति अधिगम की योग्यता, तथा अनुभव ग्राहण करता है, जो आदमी अपने पूर्वानुभवों द्वारा

भविष्य में कुशलता पूर्वक लाभ उठाने की क्षमता रखता है, वह उतना ही अधिक बुद्धिमान समझा जाता है इस दृष्टि से बुद्धि की परिभाषायें इस प्रकार हैं-

बंकिंघम के अनुसार- "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"[10]

डियर बोर्न के अनुसार- "बुद्धि सीखने या अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है।"[11]

<u>समस्या समाधान</u> :

बर्ट के अनुसार- "बुद्धि से अच्छी तरह निर्णय करने, समझने तथा तर्क करने की योग्यता है।"

इसके अतिरिक्त **वैश्लर** तथा **स्टोडार्ड** ने बुद्धि की व्यापक परिभाषा दी है-

बैश्लर के अनुसार- "बुद्धि व्यक्ति की वह सार्वभौम शक्ति है जो उसे ध्येय युक्त करने, तर्कपूर्ण चिन्तन करने तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण समायोजन करने में सहायता देती है।"[12]

स्टोडार्ड के अनुसार- "बुद्धि वह योग्यता है जिसमें 1. कठिनाई, 2. जटिलता, 3. मित्व्ययता, 4. उद्देश्य के प्रति अनुकूलता, 5. सामाजिक मूल्य, 6. मौलिकता की आवश्यकताओं की विशेषतायें हों। वे शक्ति के केन्द्रीयकरण की मांग की पूर्ति करती हों तथा भावात्मक शक्तियों के प्रति सहनशील हों।"[13]

<u>बुद्धि का आधुनिक सम्प्रत्यय</u> :

मनोविज्ञान के **प्रोफेसर डॉ. हण्ट** ने बुद्धि के आधुनिक सम्प्रत्यय को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि-

"Intelligence is the ability to solve problems, but it is not a simple unitary faculty. It in hierarchy of successively learned abilities the latter ones incorporating those acquired earlier. The brain may be conceived as great information processor, vastly more complex than any man-made computer information pours into it through sound, sight, touch smell and taste. The brain appears to reduce this vast jumble to coded symbols

which can be logically organized to solve problems achieve goals and carry on a meaningful existence. ....his senses."[14]

(४) समायोजन :

समायोजन के दो अर्थ हैं। पहला वह प्रक्रिया जिससे व्यक्ति अपने और अपने पर्यावरण के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है और दूसरा ऐसे सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धों की दशा व अवस्था जिसमें व्यक्ति निरन्तर बाहरी पर्यावरण की मांगों और शारीरिक और मानसिक संरचनाओं की आवश्यताओं के प्रति समायोजन करता चला जाता है क्योंकि व्यक्ति का जीवन पर्यावरण से प्रभावित होता रहता है। उसकी आन्तरिक शक्तियां पर्यावरण की बाह्य शक्तियों के सम्पर्क में आती हैं और फिर इन शक्तियों के मध्य एक प्रकार का संतुलन स्थापित होता रहता है। इसी संतुलन का परिणाम समायोजन है। यदि किन्हीं कारणों से पर्यावरण की बाह्य शक्तियां और व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों के मध्य संतुलन बिगड़ जाता है तो इसका प्रभाव व्यक्ति के समायोजन पर पड़ता है और इसके फलस्वरूप व्यक्तित्व में असन्तुलन आ जाता है।

जेम्स सी. कोल मैन ने समायोजन की परिभाषा इस प्रकार दी है–

"समायोजन व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कठिनाइयों का सामना करने के प्रयास का परिणाम है।"[15]

शेफर तथा शोबेन ने समायोजन को एक प्रक्रिया माना है। **गेट्स** तथा उनके सहयोगियों ने भी समायोजन को प्रक्रिया मानते हुए उसके साथ यह भी लिखा है कि समायोजन एक दशा का भी परिचायक है।

गेट्स तथा उनके सहयोगियों के अनुसार– "समायोजन शब्द के दो अर्थ होते हैं। पहले अर्थ में तो यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हुए अपने पर्यावरण से अपना सम्बन्ध अच्छा बनाता है उसकी यह कोशिश होती है कि वह अपने व्यवहार एवं रवैये में बांछनीय संशोधन करे या अपने पर्यावरण को बदले अथवा दोनों में ही संशोधन करे।"[16]

समायोजन के दूसरे अर्थ के विषय में गेट्स एवं उनके सहयोगियों ने लिखा है-

"समायोजन एक दशा है अर्थात् सामंजस्य की वह परिस्थिति है जो कि एक ऐसा व्यक्ति अपने लिए बनाता है जिसे हम कुसमायोजित कहते हैं और अधिक स्पष्ट करने के लिए यह कह सकत हैं कि वह व्यक्ति साधारण रूप से अधिक कुशल एवं प्रसन्न रहता है विशेषकर एक ऐसे पर्यावरण में जिसे हम सामांन्य रूप से सन्तोषप्रद मानते हैं।"[17]

ब्राउन के अनुसार एक ही व्यक्ति में अलग-अलग समय में समायोजन व कुसमायोजन दोनों ही होते हैं जैसे किसी व्यक्ति पर कोई घनघोर विपत्ति पड़ी हो तो वह फूट-फूट कर रोता है वैसे यह उसके स्वभाव में नहीं है। यदि कोई समस्या है और व्यक्ति स्वयं उसे सुलझा लेता है तब फिर कोई समस्या ही नहीं है और यदि इसके विपरीत कोई समस्या है और किसी भी तरह से समन्वय नहीं होता है। तब वह समस्या ही बनी रहेगी और व्यक्ति आराम से बैठ नहीं सकेगा। यही कुसमायोजन का कारण बन जायेगा व्यक्ति के अन्दर समायोजन तथा कुसमायोजन दोनों ही होते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति प्रत्येक व्यक्ति करता है लेकिन उसके प्रकार अलग-अलग होते हैं उदाहरणार्थ एक विद्यार्थी मानो लंगड़ा है वह भाग नहीं सकता तो उसकी निम्न दशायें हो सकती हैं-

1. स्कूल के मैदान में बैठकर दूसरों को दौड़ता हुआ देखकर खुश हो।
2. वह कुछ ऐसे खेल-खेले जो बैठकर खेले जाते हैं जैसे- शतरंज, कैरम आदि।
3. वह प्रत्येक खिलाड़ी से घृणा करें, जो खिलाड़ी हैं।
4. इसमें तीसरी स्थिति सबसे निकृष्ट है। इसमें समायोजन नहीं है वह अपने व्यवहार के लिए कारण भी होता है।

यह प्रक्रिया केवल इसी एक आवश्यकता के साथ नहीं है अपितु सभी आवश्यकताओं के साथ यही प्रक्रिया होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति तथा नई आवश्यकतायें बनने पर यदि वह पूर्ण नहीं है तो व्यक्ति का असामान्य व्यवहार हो जायेगा। परन्तु उस असामान्य व्यवहार को भी व्यक्ति छिपाने का प्रयत्न करता है। उसके व्यवहार में कुछ विशेषतायें पैदा हो जाती हैं। जिनको प्रक्षेपण कहा जाता है

और ये व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित कर देती है। यही नहीं बल्कि व्यक्ति में अर्न्तद्वन्द्व भी उत्पन्न हो जाते हैं। इनका भी एक सक्रिय योगदान व्यक्ति के व्यक्तित्व में होता है। जब मानसिक अर्न्तद्वन्द्व होते हैं तब किसी भी प्रकार से व्यक्ति का व्यवहार सामान्य नहीं होगा। अर्न्तद्वन्द्व क्षेत्रीय सिद्धान्त पर आधारित होते हैं। क्षेत्रीय सिद्धान्त तीन प्रकार के होते हैं। मानसिक अर्न्तद्वन्द्व व्यक्ति को जीने नहीं देते हैं यदि जीना भी चाहे तो उसके अन्दर भावना ग्रन्थियां बन जाती हैं जो उसके सामान्य व्यक्तित्व को तोड़कर रख देती है। भावावेश में व्यक्ति अनेकों ऐसे निर्णय ले लेता है जिन्हें वह सामान्य रूप से कभी नहीं लेगा। यह भावना ग्रन्थियां कभी-कभी बड़ा ही विचित्र रूप धारण कर लेती है जैसे किसी को अन्धेरे में डर लगे और वह अन्धेरे में न जा सके, बहते हुए पानी से इतना डर लगे कि कभी भी उसे देखना पसन्द नहीं करे आदि।

वास्तविकता यह है कि भावना ग्रन्थियां मानसिक अर्न्तद्वन्द्व का निर्माण व्यक्ति के मस्तिष्क में करती है। इसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ता है। उसके बात करने के ढंग पर या व्यवहार पर स्पष्ट प्रभाव होता है। ध्यान से देखें तो यह प्रभाव दृष्टिगत होता है। यद्यपि व्यक्तित्व की संरचना अपने आप में अत्यन्त दुरूह है जिसके विषय में जानना अत्यन्त कठिन है किन्तु कुछ परीक्षण ऐसे बने हैं जिनके द्वारा व्यक्तित्व को नापा जा सकता है।

समायोजन केवल पशुओं और पेड़-पौधों में नहीं हो पाता है वहां डार्विन का सिद्धान्त लागू होता है जन्तु और पेड़ पौधों में वातावरण के अनुसार अनुकूलन होता है उनके जीवन और मरण पर्यावरण पर आधारित होते है। प्रत्येक जीव जन्तु अथवा वनस्पति प्रत्येक स्थान पर नहीं हो सकती हैं, जैसे देवदारू अथवा चीड़ के पेड़ मैदान में नहीं हो सकते पहाड़ों की ऊंचाई पर ही होते हैं।

लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें यह क्षमता है कि वह हर वातावरण में अपने को समायोजित कर लेता है अर्थात् मनुष्य में प्रतिकूल वातावरण को अनुकूल करने की क्षमता है।

(५) उपलब्धि प्रेरणा :

मरे ने 1948 में व्यक्तित्व की आवश्यकताओं का स्पष्टीकरण करते हुए ''अचीवमेन्ट मोटिव'' शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है निष्पत्ति के लिए आवश्यकता। **मैकलीलैन्ड**[18] ने 1953 में इस क्षेत्र में अत्यधिक कार्य किया है। उसके अनुसार प्रेरक एक ऐसी प्रवृत्ति है जो कि व्यक्ति को किसी भी उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उचित सहायता प्रदान करती है और इन प्रेरकों का प्रयोग व्यक्ति की चिन्तन प्रक्रियाओं को जानकर किया जाता है, क्योंकि प्रेरक विभिन्न प्रकार के विचारों, प्रारूपों में सम्बन्धित हैं। जो कि विशेष लक्ष्यों से जुड़े हुए होते हैं। इसलिए इनको वर्गीकृत किया जा सकता है।

एटकिन्सन तथा उसके सहयोगियों के अनुसार– ''सामान्य रूप से यह अभिप्रेरण व्यक्ति को जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रकर्षता स्तर प्राप्त करने के लिए सक्रिय रहता है।''[19]

इस प्रकार उपलब्धि प्रेरणा से उद्वेलित व्यक्ति चुने हुए क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं एवं अपने उपलब्धि स्तर को उन्नत करने का प्रयत्न करते हैं। प्रतियोगिता में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने की लालसा रखते हैं तथा अपने जीवन को सदैव प्रगतिशील बनाने के लिए संघर्ष करते हैं ऐसे व्यक्ति अपनी सफलता पर गर्व का अनुभव करते हैं तथा प्रसन्न होते हैं। वे कार्यक्षेत्र में होने वाली सफलता एवं विफलता के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हैं।

१.५ अध्ययन के उद्‌देश्य :

वर्तमान अध्ययन के उद्‌देश्य निम्नलिखित थे–

1. विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तरों की सार्थकता ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्धों की सार्थकता ज्ञात करना।
3. लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।

4. कला एवं विज्ञान के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।
5. यह ज्ञात करना कि यदि बुद्धि को नियन्त्रित कर दें तो उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है।
6. समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा को अलग-अलग नियन्त्रित करके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

१.६ उपकल्पनाऐं :

वर्तमान अध्ययन की उपकल्पनाऐं निम्नलिखित थीं-

1. विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।
4. कला तथा विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।
5. बुद्धि को नियन्त्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
6. समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा को अलग-अलग नियन्त्रित करने पर शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

१.७ सीमाऐं :

प्रस्तुत शोधकार्य की निम्नलिखित सीमाएं थीं-

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल जनपद फिरोजाबाद तक ही सीमित था।
2. इस अध्ययन में कला एवं विज्ञान के छात्र-छात्राओं को लिया गया था।
3. 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया था।

१.८ उपकरण :

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित उपकरणों को प्रयोग किया गया था–

1. सामूहिक बुद्धि परीक्षण–डा. एस.एस. जलोटा
2. समायोजन अनुसूची– डा. ए.के.पी. सिन्हा तथा डा. आर.पी. सिंह
3. उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण–डा. वी.पी. भार्गव
4. शैक्षिक उपलब्धि के लिए (हाईस्कूल के प्राप्तांकों को विद्यालय के रिकार्ड से लिया गया था)

१.९ अध्ययन की योजना :

(१) पूर्व शोधकार्यों का विवरण :

किसी भी शोधकार्य को करने से पूर्व यह ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है कि उसकी समस्या से सम्बन्धित क्षेत्र में कितने शोधकार्य हो चुके हैं तथा इन शोधकार्यों के निष्कर्ष तथा परिणाम क्या रहे। उसके अन्तर्गत कितने व्यक्तियों से तथ्य संकलित किए गए थे कौन से स्थान पर किए गए थे तथा कितने स्वतन्त्र चरों को विचारार्थ रखा था। यह इसलिए करना आवश्यक है क्योंकि देशकाल तथा परिस्थितियों के अनुसार सूचनाएं परिवर्तित हो सकती है।

अतः इस प्रकार की सभी सूचनायें एकत्र की गई थीं तथ उनको क्रमानुसार लिखकर प्रस्तुत किया गया था।

इसका सम्पूर्ण विवरण इसी रपट के अध्याय दो में प्रस्तुत किया गया है।

(२) न्यादर्श :

प्रस्तुत शोधकार्य में जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न इण्टरमीडिएट् विद्यालयों से न्यादर्श का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया था। न्यादर्श के रूप में कला एवं विज्ञान के 600 छात्र–छात्राओं को लिया गया था। विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया था।

(३) विधि :

प्रस्तुत शोधकार्य में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। चूंकि इस समस्या का अध्ययन वर्तमान समय में किया गया था तथा वर्तमान में ही यह

देखा गया था, कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पडता है। अतः यहां पर ऐतिहासिक विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता था क्योंकि ऐतिहासिक विधि का सम्बन्ध भूत से होता है तथा यह भविष्य को समझाने के लिए भूत का विश्लेषण करती है। प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग भी नहीं किया जा सकता था क्योंकि इसमें परिस्थिति को नियन्त्रित किया जाता है जबकि यहां पर परिस्थिति को नियन्त्रित करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

(४) प्रदत्तों का संकलन :

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों का संकलन जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न इण्टरमीडिएट विद्यालयों से किया गया था। छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया था तथा विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया था; सर्वप्रथम विद्यालयों के प्रधानाचार्यों से अनुमति ली गई थी तथा उन्हें अपने उद्देश्यों से अवगत कराया था। उद्देश्य से अवगत होने के पश्चात् प्रधानाचार्यों ने प्रदत्त संकलन की सहर्ष अनुमति प्रदान कर दी थी। इसके पश्चात् कक्षाध्यापकों से मिला गया था तथा उनका सहयोग प्राप्त करके किशोर-किशोरियों से प्रदत्तों को संकलित किया गया था। सभी तीनों परीक्षणों को सभी छात्र-छात्राओं को दिया गया था तथा उनको आवश्यक निर्देश भी दिए गए थे। निर्देश देने के पश्चात् छात्र-छात्राओं को परीक्षण पुस्तिकाओं की पूर्ति करने का आदेश दिया गया था। आदेश सुनकर सभी छात्र-छात्राओं द्वारा परीक्षण पुस्तिकाओं की पूर्ति करना प्रारम्भ कर दिया गया था। जब कार्य समाप्त हो गया तथा तब छात्र-छात्राओं से सभी परीक्षण पुस्तिकाओं एवं उत्तर पुस्तिकाओं को एकत्रित कर लिया गया था। प्रदत्तों का संकलन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था, कि कक्षा-कक्ष में शोर न हो तथा प्रकाश की उचित व्यवस्था हो एवं यह भी ध्यान रखा गया था कि परीक्षण के समय थकान का प्रभाव छात्र-छात्राओं की निष्पत्ति पर न पड़े। इस प्रभाव को दूर करने के लिए एक परीक्षण देने के पश्चात् जब दूसरा परीक्षण दिया गया तब वह कुछ अन्तराल पश्चात् ही दिया गया। इसी प्रकार दूसरे परीक्षण तथा तीसरे परीक्षण के मध्य भी कुछ अन्तराल रखा गया था। नकल के प्रभाव को दूर करने के लिए यह ध्यान रखा गया था कि

छात्र-छात्रायें एक दूसरे से बातचीत न करें। हाईस्कूल के प्राप्तांकों को विद्यालय के रिकार्ड से शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया था।

(५) प्रदत्तों का विश्लेषण एवं सारणीयन :

प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण एवं सारणीयन किया गया था। विभिन्न समूहों के सभी चरों को लेकर सांख्यिकीय गणना की गई थी एवं उचित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया था। मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, आलोचनात्मक-अनुपात, सहसम्बन्ध, आंशिक सहसम्बन्ध, प्रसरण विश्लेषण आदि की गणना की गई थी। इन गणनाओं के आधार पर परिणाम ज्ञात किए गए थे। परिणाम ज्ञात करने के पश्चात् उनका विवेचन किया गया था तथा इसी विश्लेषण के आधार पर परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया था।

(६) निष्कर्ष तथा सुझाव :

तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्षो को स्पष्ट किया गया था। इस कार्य हेतु पूर्व निर्धारित उद्देश्यों एवं उपकल्पनाओं का सत्यापन किया गया था तथा उसी आधार पर उन्हें स्वीकृत एवं अस्वीकृत किया गया था। इस संदर्भ में जो भी तथ्य संकलित किए गये थे उनका विश्लेषण किया गया था। इन उद्देश्यों के सत्यापन के पश्चात् यह उल्लेख किया गया है कि वस्तुतः इस शोध के क्या परिणाम रहे हैं तथा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष छात्र-छात्राओं, अभिभावकों, समाज तथा राष्ट्र के लिए किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इसके लिए अपने सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

(७) कमियाँ :

शोधकार्य करते समय बहुत सी कमियों का अनुभव हुआ था जिन्हें सरलता पूर्वक पूर्णरूपेण दूर नहीं किया जा सकता था किन्तु यथासंभव सीमित करने का प्रयास किया गया था। इसके लिए कुछ संकेत भी रपट में दिए गए हैं।

(८) भविष्य में शोधकार्य की रूपरेखा :

कोई भी शोधकार्य अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। कुछ अंश अथवा दिशायें ऐसी रह जाती हैं जिन की ओर शोधकार्य के अन्तर्गत विचार नहीं किया गया होता

है। किन्तु अपने आप में वह दिशायें महत्वपूर्ण होती हैं। इसलिए अन्त में उन दिशाओं अथवा समस्याओं की ओर संकेत भी दिये गये हैं जिससे कि भविष्य में उन समस्याओं पर शोधकार्य किया जा सके।

प्रस्तुत शोधकार्य में भी उन समस्याओं का उल्लेख किया गया है जिन पर भविष्य में शोधकार्य होना आवश्यक है तथा भावी शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सुझाव भी प्रस्तुत किए गये हैं।

१.१० शोध प्रबन्ध की रूपरेखा :

प्रस्तुत शोधकार्य को निम्नलिखित रूपरेखा के अनुसार प्रस्तुत किया गया है–

1. प्राक्कथन
2. अध्याय सूची
3. तालिका सूची

१.११ अध्याय :

1. प्रस्तावना
2. सम्बन्धित शोधकार्य का विवरण
3. शोध प्रक्रिया तथा विधि
4. तथ्यों का विश्लेषण एवं निर्वचन
5. निष्कर्ष, सुझाव तथा भविष्य में शोधकार्य की रूपरेखा

१.१२ परिशिष्ट :

1. शोध–पत्र, पत्रिकाओं की सूची
2. पुस्तक सूची
3. सामूहिक बुद्धि परीक्षण
4. समायोजन परीक्षण
5. उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण।

****

REFERENCES

(1) Stanley Hall- "Adolesence is a period of great stress and strain, strom and strife."
- Stanley Hall- "Adolesence" citied from– P.D. Pathak "Educational Psychology", Vinod Pustak Mandir, Agra, p.118.

(2) Blair, Jones & Simpson- "The adolescent has social problems Teachers and parents alike should understand the unique problems of the adolescents, if they are to help them make a smooth transition into adulthood knowledge of basic theory plus specialized information regarding the period of adolescence and the individual adolesecent are pre-requistites for this task." (PP. 99-100). Cited from P.D. Patak, Educational Pychology, Vinod Pustak Mandir, Agra p.195.

(3) माध्यमिक शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ. 30

(4) D.C. Mec Lelland- The Achiving society D. Van Nostrand company, Inc. Preinceton New Jersey (1966) p. 4-27.

(5) सी.बी. गुड, डिक्शनरी ऑफ ऐजूकेशन मैक–ग्रो–हिल कम्पनी, आई.एन.सी. न्यूयार्क लन्दन।

(6) R.L. Ebel, "An achievement test is one designed to measure a student's grasp of somebody knowledge or his proficiency in certain skills." Cited from Mahesh Bhargava 'Modern Psychological Testing & Measurement.' 4/230 Kachari Ghat, Agra, p.390.

(7) Super "An achievement or proficiency test is used to ascertain what and how much has been learnt or how well a task has been performed." Ibid.

(8) Stern- "Intelligence is the general adaptibility to new problem of life"- Bhatnagar Suresh, Educational Psychology, Afficiant Printers, New Delhi.

(9) Calvin- "An Individual posses intelligence is so far as he has learnet or can learn to adjust himself to his new environment, (Ibid).

(10) Buckingham,- "Intelligence in the ability to learn" (Ibid).

(11) Dear Born- "Intelligence in the capacity to learn or to profit by experience" (Ibid).

(12) Wechsler- "Intelligence is the aggregate or global capacity of an individual to act purposefully to think rationally and to deal effectively with his environment.

- Wechsler- Cited from S.S. Mathur educational Psychology. Vinod Pustak Mandir, Agra, page no. 145.

(13) G.D. Stoddard- "The ability to undertake activities that are characterized by. 1. Difficultuy, 2. Complexity, 3. Abstractness, 4. Economy, (Speed), 5. Adoptiveness to a goal, 6. Social value, 7. The emergence of originals (Inventiveness) and to main such activities under conditions that demand a concentration of energy and a resistance to emotional forces."

- G.D. Stoddard- The meaning of intelligence, New York Macmillan Company, 1943, p.63.

(14) John Koard Lagemonn- "Can we make our children more intelligent." Interview with Dr. Joseph, Mc Vicker Hunt, Published in Reader's Digest, Aug. 1966.

(15) J.C. Coleman- "Adjustment is the out come of the individual's efforts to deal with stress and meet his needs."

- J.C. Coleman- 'Abnormal Psychology and modern life- Bombay, D.B. Taraperva sons and co. p. 656 (1959).

(16) A. Gates and others- Educational Psychology, New York, The Mc Millan & Co. 1948, p.614-615.

(17) I bid.

(18) Cited from Mahesh Bhargava, Modern Psychological Testing & Measurement, 8/230 Kachhari Ghat, Agra.

(19) D.C. Meclelland- "Need for achievement refers to a relatively stable acquired disposition to strive for success". Achievement motive is a need for achievement.

- D.C. Meclelland- The achievement society, cited from B. Kuppaswamy- A Text Book of child behaviours and development, vikas Pub. House Pvt. Ltd., p.58.

अध्याय-द्वितीय
शोध से सम्बन्धित
साहित्य का अध्ययन
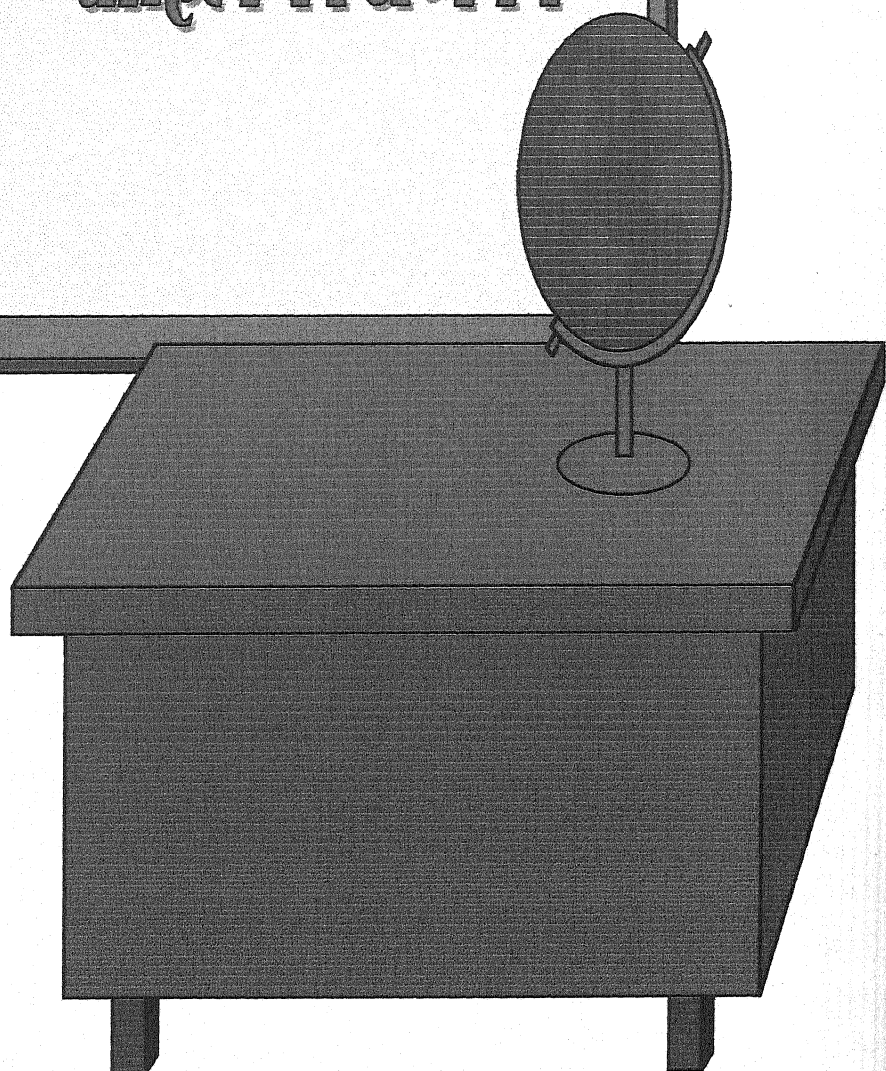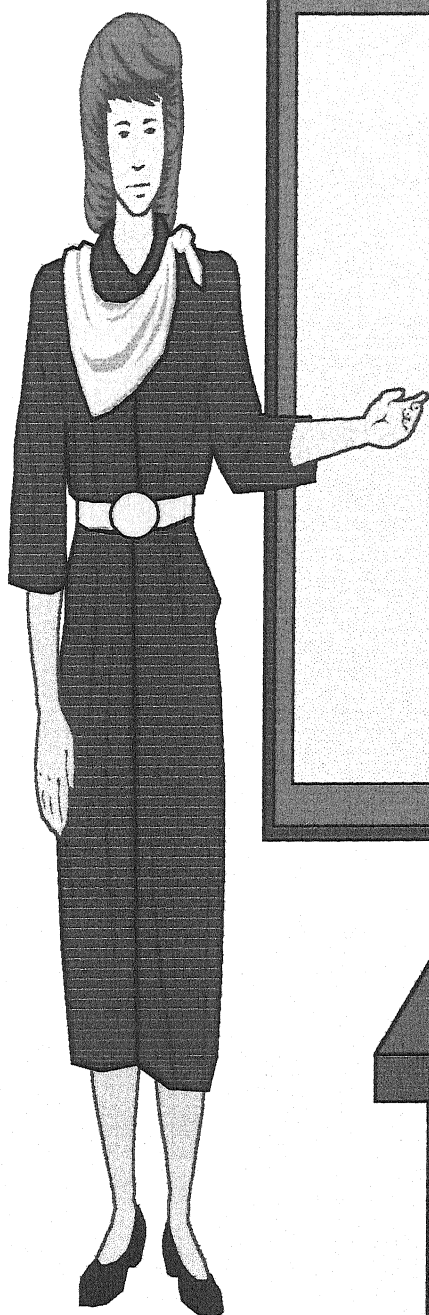
अध्याय-द्वितीय

शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

२.१ प्रस्तावना :

मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र किए गए ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं। ज्ञान को एकत्र करना, एक दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में बृद्धि करना। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर कार्य पहले भी हो चुका है अथवा नहीं। क्योंकि सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकर्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता हैं। जब तक कि उसे यह ज्ञात न हो जाय कि इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है। किस विधि से किया गया था तथा उसके निष्कर्ष क्या आऐ थे। तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और नहीं इसकी रूपरेखा तैयार करके कार्य को आगे बढ़ा सकता है।

गुड, **बार** तथा **स्केट्स** ने लिखा है- "एक चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी खोजों से परिचित होता रहे। उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसन्धान कर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"[1]

बैस्ट के अनुसार- "व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से आरम्भ करते हैं मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत एवं

सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अपार भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"[2]

इस प्रकार किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है। जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते है, तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना रहती है अथवा इसकी पुनरावृत्ति भी हो सकती है।

वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से सम्बन्धित अनेक समस्याऐं उत्पन्न हो रही हैं। वर्तमान समस्या शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी। प्रत्येक अभिभावक, शिक्षक तथा छात्र स्वयं यह चाहते हैं कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की हो जिससे कि वे उचित व्यवसाय का चयन कर सकें। इसके लिए शिक्षक तथा अभिभावक हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। अभिभावक अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूलों में अध्ययन कराते हैं तथा असीमित धन व्यय करते हैं तथा शिक्षक भी विभिन्न प्रविधियों का प्रयोग करके तथा अतिरिक्त समय देकर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने का प्रयास करते है। किन्तु जब छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उन्नत नहीं होती है तो शिक्षक, छात्र तथा अभिभावक निराश हो जाते हैं। उनमें कुंठाऐं जन्म लेने लगती हैं। फलस्वरूप वह कहीं भी समायोजित नहीं हो पाते हैं। अतः वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि उन कारणों की खोज की जाऐ जो कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, क्योंकि शैक्षिक उपलब्धि को कोई एक कारक प्रभावित नहीं करता है, अपितु अनेकों कारक जैसे– विद्यालय का वातारण, घर का वातावरण, अध्यापक, बुद्धि, समायोजन, उपलब्धि प्रेरणा, चिन्ता, आत्मप्रत्यय, मूल्य व्यक्तित्व सम्बन्धी कारक, सामाजिक वातावरण आदि प्रभावित करते हैं। वर्तमान शोध में इनमें से कुछ कारणों को खोजने का प्रयास किया गया था जिससे कि उनके विषय में पूर्णरूपेण ज्ञान प्राप्त करके शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धि, समायोजन, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि चार चरों को लिया गया था। इन चारों चरों से सम्बन्धित अध्ययन भारत वर्ष तथा विदेशों में हुए हैं, जिनमें से कुछ अध्ययनों का वर्णन इस अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है।

२.२ भारत तथा विदेशों में किये गये बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन :

भारतवर्ष में किए गए बुद्धि से सम्बन्धित अध्ययन

माथुर[3] (1963)

उनकी उपकल्पना थी कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि होती है। शैक्षिक उपलब्धि बुद्धि पर धनात्मक रूप से प्रभाव डालती है। इस अध्ययन में पाया गया कि-

1. शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य 0.70 फाई कौफीसिऐन्ट था।
2. बुद्धि सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य 0.84 सहसम्बन्ध था।
3. बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थी।

चौपड़ा[4] (1964)

उद्देश्य था- बुद्धि को स्थिर रखते हुए सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित कारकों तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध ज्ञात करना इन्होंने अपने अध्ययन में निम्न निष्कर्ष निकाले थे-

1. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्रों का उपलब्धि मध्यमान निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्रों से उच्च था।
2. विभिन्न जातियों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में .05 स्तर सार्थक अन्तर था।

राव[5]

देहली के आठवीं कक्षा के छात्रों की बुद्धि, अध्ययन की आदतों, सामाजिक आर्थिक स्तर, एवं स्कूल अभिवृत्तियों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाले कि-

शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि अध्ययन की आदतों व स्कूल अभिवृत्तियों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध 0.81 था।

जैन[6] (1965)

पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया था।

1. बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्रभावित करती है।
2. इसका लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च सहसम्बन्ध होता है।
3. पारिवारिक वातावरण धनात्मक व सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करना है।
4. इसका सामाजिक आर्थिक स्तर से कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

विधु[7] (1968)

मनस्तापी तथा बहिर्मुखी छात्रों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि का विभिन्न आयु स्तरों पर अध्ययन किया और पाया था, कि बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध था।

वसन्त[8] (1969)

आत्मप्रत्यय, बुद्धि व विद्यालयी विषयों में उपलब्धि का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध 0.25 था।

वी.झा.[9] (1970)

सैकेन्ड्री विद्यालयों के विज्ञान के छात्रों की उपलब्धि से सम्बन्धित कारकों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला था, कि सामान्य ज्ञान व विज्ञान की उपलब्धि के मध्य धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध था।

गुप्ता[10] (1973)

शैक्षिक उपलब्धि और स्वभावगत गुणों पर स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला-

1. छात्रों के स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं था।

2. लड़कों की बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .5 से .6 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था।
3. लड़कियों की बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .3 से .35 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था।

मखीजा[11] (1973)

मूल्यों, रूचियों और बुद्धि के मध्य अन्तः क्रिया एवं उनका शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाले थे कि–

1. बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. बुद्धिमान विद्यार्थी विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में रूचि रखते हैं।
3. धार्मिक मूल्य इनकी कार्य क्षमता में सहायक होते हैं लेकिन यदि ये मनोरंजनात्मक कार्यों में रूचि रखते हैं तो बाधक होते हैं।
4. जो विद्यार्थी खेलों में अधिक रूचि रखते हैं वे उच्च उपलब्धि वाले कम होते हैं।

अग्रवाल[12] (1973)

उ0प्र0 के पाँच विभिन्न मैडीकल कॉलेजों के 629 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य था, कि मनोवैज्ञानिक चर जैसे चिकित्सकीय अभिवृत्ति, समायोजन बुद्धि तथा रूचि का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. समायोजन का मैडीकल के नम्बरों से सहसम्बन्ध नगण्य था।
2. बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि से उच्च रूप से सहसम्बन्धित थी।
3. रूचि का मैडीकल के इम्तहानों की क्षमता से उच्च सहसम्बन्ध था।
4. बुद्धि, अभिक्षमता एवं मैडीकल के नम्बरों में धनात्मक सहसम्बन्ध था।
5. बुद्धि, अभिक्षमता, रूचि एवं समायोजन का सहसम्बन्ध मैडीकल की परीक्षाओं के विरूद्ध उच्च था।
6. सत्रह से चौबीस वर्ष की आयु के विद्यार्थियों की आयु तथा समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।
7. रूचि और आयु के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

8. सामाजिक आर्थिक स्तर की वृद्धि का समायोजन तथा बुद्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है किन्तु रूचि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
9. बुद्धि, अभिक्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था।
10. बुद्धि, रूचि, अभिक्षमता, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध था।

धमी[13] (1974)

पंजाब के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा नवीं तथा दसवीं के विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया इनके अध्ययन की उपकल्पनाऐं निम्नलिखित थीं–

1. बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि में समान रूप से योगदान होता है।
2. बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता में अत्यधिक सम्बन्ध होता है।
3. सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में अत्यधिक सम्बन्ध होता है।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान था तथा बुद्धि का योगदान सामाजिक आर्थिक स्तर से अधिक था।
2. बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता में घनिष्ठ तथा उच्च सहसम्बन्ध था।
3. सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध सांख्यकीय रूप से सार्थक था किन्तु उच्च नहीं था।
4. शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न थे।
5. सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा व्यक्तिगत संस्थाओं के विद्यार्थियों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में उच्च सम्बन्ध था।

सीथा[14] (1975)

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले मनोविज्ञान और सामाजिक कारकों का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाले कि–

1. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में उच्च बुद्धि रखते हैं।
2. अध्ययन की आदतों का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सम्बन्ध था।
3. उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की अध्ययन की आदतें निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में बहुत अच्छी थीं।

प्रकाश चन्द्र[15] (1975)

अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष थे-

1. समस्या व बुद्धि, बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन की आदतें व शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृति स्तर के मध्य 0.13 से 0.46 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था।
2. समस्या व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था।

मेहता[16] (1976)

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के 100 छात्रों पर किए गए शोध में पाया कि विभिन्न विद्यालयी वातावरण में पढ़ने वाले, सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित छात्रों की बुद्धि, शैक्षिक सम्प्राप्ति अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर में अंतर था।

मिश्रा[17] (1976)

जिला मुख्यालयों पर अध्ययन कर रहे 2687 छात्रों की सृजनात्मक, बुद्धि एवं दुश्चिन्तता के सन्दर्भ में कला, विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय की अधिक एवं न्यून सम्प्राप्ति का अध्ययन किया, तथा पाया कि-

1. अधिक सम्प्राप्ति वाले तीनों संकायों के छात्र एवं छात्राऐं सृजनात्मकता एवं बुद्धि में उच्च पाऐ गए तथा सामान्यतः चिन्ता की मात्रा कम पाई गई।
2. न्यून सम्प्राप्ति वाले तीनों संकायों के छात्र एवं छात्राओं में सृजनात्मकता एवं बुद्धि कम तथा सामान्य चिन्ता की अधिक मात्रा पाई गई।
3. बुद्धि एवं सृजनात्मकता का विज्ञान एवं वाणिज्य के साथ भी सहसम्बन्ध पाया गया।

4. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के न्यून सम्प्राप्ति वाले छात्र-छात्राओं के साथ भी सृजनात्मकता एवं सामान्य चिन्ता का सहसम्बन्ध पाया गया।

रवीन्द्र[18] (1977)

कक्षा 9 की 240 लड़कियों पर एक अध्ययन किया और पाया कि-

1. सामान्य विज्ञान और गणित को छोड़कर चिन्ता शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सम्बन्धित नहीं थी।
2. चिन्ता के स्तर पर उच्च अभिक्षमता वाले छात्रों की कार्यक्षमता निम्न अभिक्षमता वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक थी।
3. सामान्यतः चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर कम प्रभाव पड़ता है किन्तु चिन्ता एवं बुद्धि का एक साथ प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

गुप्ता[19] (1977)

कक्षा 9,10,11 तथा 12 के 240 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया। जिनमें 120 लड़के तथा 120 लड़कियों थीं। उनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. बुद्धि, सृजनात्मकता, रूचि तथा निराशा के सम्बन्ध में शैक्षिक उपलब्धि लिंग तथा आयु के कार्य को निश्चित करना।
2. नई वैज्ञानिक उपलब्धियों के द्वारा किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि की बृद्धि करना।
3. विभिन्न शैक्षिक स्तरों के किशोर लड़कों और लड़कियों की बुद्धि, सृजनात्मकता, रूचि और निराशा की वृद्धि को पहचानना।
4. भारतीय परिस्थितियों में सृजनात्मकता की शिक्षा के लिए वैज्ञानिक तथ्य प्रदान करना।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

1. 13,15, और 17 साल के लड़के और लड़कियों की बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती है।
2. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले लड़कों की तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली लड़कियों की बुद्धि 15 वर्ष तक बढ़ती है और उसके पश्चात् कम होती है।

3. निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले लड़कों की तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली लड़कियों की बुद्धि 15 वर्ष तक घटती है और उसके पश्चात् बढ़ती है।
4. 15 वर्ष की आयु तक वैज्ञानिक, मैडीकल, तकनीकी रूचि शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा बढ़ती और उसके पश्चात् कम होती है।
5. आयु का प्रभाव रूचि पर पड़ता है, फाइन आर्ट्स और तकनीकी रूचि पन्द्रह वर्ष की आयु तक बढ़ती है और उसके पश्चात् कम होती है। खेलों में रूचि तथा मैडीकल तथा वैज्ञानिक रूचि भी पन्द्रह वर्ष तक बढ़ती है और उसके पश्चात् कम होती जाती है।
6. शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव निराशा पर पड़ता है।
7. आयु का प्रभाव निराशा पर पड़ता है।

सिन्हा[20] (1978)

अपने अध्ययन में पाया कि–

1. बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि (0.01) स्तर पर सार्थक रूप से सहसम्बन्ध रखती है।
2. विज्ञान वर्ग के बालकों की बुद्धि के प्राप्तांक कलावर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च थे।
3. शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि प्रेरणा से सार्थक रूप से सम्बन्ध रखती है।

आचार्यालू[21] (1978)

आन्ध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले के गुन्टूर शहर के 400 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया और पाया कि–

1. बुद्धि आकृतिकारक सृजनात्मकता परीक्षण और तेलगू, सामान्य विज्ञान और सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग भेद नहीं था।
2. शाब्दिक सृजनात्मकता और अंग्रेजी तथा गणित की उपलब्धि में सार्थक लिंग भेद थे लेकिन इसमें लड़कियों की उपलब्धि अच्छी थी।
3. बुद्धि तथा शाब्दिक सृजनात्मकता परीक्षण के मध्य सहसम्बन्ध .21 था तथा बुद्धि तथा आकृतिकारक सृजनात्मकता परीक्षण के मध्य सहसम्बन्ध .10 था। यह सहसम्बन्ध लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में उच्च थे।

4. उच्च बुद्धि तथा उच्च सृजनात्मकता वाले समूह की विद्यालयी विषयों की उपलब्धि धनात्मक रूप से सार्थक थी।
5. शाब्दिक सृजनात्मक परीक्षण तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सहसम्बन्ध था।

भागीरथ[22] (1978)

रोपड़ जिले के नवीं तथा दसवीं के 901 विद्यार्थियों तथा उनके शिक्षकों पर एक अध्ययन किया और यह पाया था कि–

1. शिक्षक और विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कारकों जैसे– बुद्धि, चरित्र, सृजनात्मकता, सक्रियता तथा सामाजिक और संवेगात्मक समायोजन को मानते हैं।
2. सभी विद्यार्थी तथा शिक्षक बुद्धि, सामाजिक, शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन के पक्ष में थे लेकिन सृजनात्मकता तथा निरन्तरता के विषय में विचारों में भिन्नता थी।
3. सामान्य से उच्च बुद्धिलब्धि वाले तथा कुसमायोजित सामान्य से उच्च बुद्धि वाले तथा सुसमायोजित शिक्षकों के विचार बुद्धि तथा चरित्र के विषय में समान थे किन्तु सामाजिक संवेगात्मक तथा शैक्षिक समायोजन के विषय में भिन्न थे।
4. पुरुष तथा महिला शिक्षक बुद्धि, चरित्र, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन से सहमत थे किन्तु पुरुष अध्यापक सृजनात्मकता एवं क्रियाशीलता से सहमत थे जबकि महिला शिक्षक संवेगात्मक समायोजन से सहमत थीं।
5. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के विचार सभी कारकों के विषय में समान थें। लेकिन कुछ में थोड़ी भिन्नता थी। शहरी विद्यार्थी सक्रियता को देखते थे जबकि ग्रामीण सक्रियता एवं कार्यक्षमता को देखते थे।

मिश्रा[23] (1978)

600 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया और पाया था कि–

1. कला के कम उपलब्धि के छात्रों की अपेक्षा कला में उच्च उपलब्धि के छात्र सृजनात्मकता के स्तर पर उच्च थे।

2. बुद्धि के स्तर पर कला के उच्च उपलब्धि के छात्र कम उपलब्धि के छात्रों की अपेक्षा उच्च थे।
3. वाणिज्य के उच्च उपलब्धि के छात्रों की बुद्धि तीव्र थी।
4. विज्ञान के उच्च उपलब्धि के छात्रों की बुद्धि कम उपलब्धि के छात्रों की अपेक्षा तीव्र थी।
5. उच्च उपलब्धि की लड़कियों की बुद्धि कम उपलब्धि की लड़कियों की अपेक्षा तीव्र थी।

श्रीवास्तव[24] (1980)

गोरखपुर के 14 इन्टरमीडिएट विद्यालयों के 500 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया जिनमें 415 लड़के तथा 85 लड़कियों थीं। इनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

1. सामान्य मानसिक योग्यता, समायोजन, रूचि तथा पारिवारिक स्तर तथा हाईस्कूल की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
2. भविष्यवाणी करने के लिए सक्षम चरों का निर्धारण करना तथा चयनित किए गए चरों तथा विज्ञान समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य बहुचर सहसम्बन्ध ज्ञात करना।
3. शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी के लिए बहुचर प्रतिगमन समीकरण का निर्माण करना।

इस शोधकार्य के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध उच्च स्तर का था, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर एवं बुद्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सहसम्बन्ध मध्यम स्तर का था।
2. वैज्ञानिक, क्लैरीकल रूचि तथा शैक्षिक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि से उच्च रूप से सहसम्बन्धित थे।
3. यान्त्रिक अभिरूचि, संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित होता है।

मेनन[25] (1980)

अंग्रेजी माध्यम के 6 विद्यालयों के 301 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया जिसमें 165 लड़कियों तथा 135 लड़के थे। उनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. अंग्रेजी भाषा में सृजनात्मकता के विस्तार तथा अस्तित्व को पहचानना।
2. लड़के और लड़कियों की सृजनात्मकता के अन्तर का अध्ययन करना।
3. बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा बच्चों की भाषा की योग्यता के सम्बन्ध में सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. सृजनात्मकता, भाषा का शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि से उच्च सहसम्बन्ध था।
2. भाषा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सहसम्बन्ध .56 था तथा बुद्धि और भाषा के मध्य .32 था।
3. बुद्धि का भाषा के साथ सहसम्बन्ध .32 था सृजनात्मकता के साथ 0.29 तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ 0.24 था।

रंगारी[26] (1981)

अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के कॉलेज के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि-

1. बुद्धि में सामान्य जाति वाले छात्र अनुसूचित जाति वाले छात्रों से अच्छे थे।
2. सामान्य जाति के विद्यार्थियों में लड़के, लड़कियों से अच्छे थे।
3. अनुसूचित जाति की छात्रायें, छात्रों से अच्छी थीं।
4. ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्र अधिक अच्छे थे।

चौपड़ा[27] (1982)

कक्षा 10 की 300 लड़कियों तथा 598 लड़कों पर एक अध्ययन किया और पाया था कि-

1. शिक्षा की निरन्तरता में सामाजिक आर्थिक स्तर एक महत्वपूर्ण कारक था निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बहुत से छात्र हाई स्कूल की परीक्षा में

असफल हो जाते हैं तथा प्रथम श्रेणी के छात्र उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित होते हैं इसका कारण यह है कि उनके माता पिता उनके अध्ययन में उनकी सहायता करते हैं तथा उन्हें उत्सांहित करते हैं।

2. अध्ययन की आदतें शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थीं।
3. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी उच्च शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाऐं रखते हैं।
4. संवेगात्मक, स्वास्थ्य तथा सामाजिक समायोजन की अपेक्षा घर का समायोजन शैक्षिक उपलब्धि से अधिक सम्बन्धित था।
5. शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर, अध्ययन की आदतें घर का सामयोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, और शिक्षा की ओर अभिवृत्तियों के मध्य बहुचर सहसम्बन्ध 0.08 था तथा कौफीसिऐन्ट ऑफ मल्टीपल डिटरमेन्ट्स 0.764 था।
6. उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के अधिकांश लड़के अपने भविष्य की योजना का निर्माण पहले से ही कर लेते हैं।

देशपाण्डे[28] (1984)

अपने अध्ययन में पाया कि–

1. कम उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि उच्च थी।
2. कम उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थी उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक जागरूक थे।
3. कम उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा अधिक उच्च थी।
4. दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों में अन्तर नहीं था।
5. उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की बुद्धि, चिन्ता तथा उपलब्धि प्रेरणा में अन्तर था।

दीक्षित[29] (1985)

कक्षा 9 तथा 11 के 800 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया और पाया कि–

1. बौद्धिक रूप से उच्च तथा बौद्धिक रूप से अत्यधिक उच्च कक्षा 9 के लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं था।
2. सभी बौद्धिक स्तरों पर लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि लड़कों से उच्च थी।
3. सामान्यतः लड़कों के बुद्धि परीक्षण के अंक लड़कियों के अंकों से उच्च थे।
4. लड़कों के बुद्धि परीक्षण के अंक तथा शैक्षिक उपलब्धि में उच्च सहसम्बन्ध था।
5. लड़कियों की बुद्धि परीक्षण के अंकों तथा शैक्षिक उपलब्धि में सामान्य सहसम्बन्ध था।

राजपूत[30] (1985)

अपने अध्ययन में पाया कि–

1. उच्च, सामान्य तथा निम्न तीनों स्तरों पर बुद्धि विद्यार्थियों की गणित की उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।
2. उच्च बुद्धि वाले लड़कों की गणित की उपलब्धि सामान्य बुद्धि वाले तथा निम्न बुद्धि वाले लड़कों से अच्छी थी।
3. सामान्य बुद्धि वाले लड़के निम्न बुद्धि वाले लड़कों से अच्छे थे।
4. बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा सामाजिक आर्थिकस्तर के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

मित्रा[31] (1985)

अध्ययन किया और पाया कि–

1. बुद्धि सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी।
2. लड़के और लड़कियों की उपलब्धि प्रेरणा तथा बर्हिमुखता सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी।
3. जब बुद्धि को अलग कर दिया गया तब उपलब्धि प्रेरणा तथा बर्हिमुखता का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं रहा।
4. पूर्व किशोरावस्था में बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बर्हिमुखता के मध्य लिंग भेद नहीं था किन्तु लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक मनस्तापी थे।

कुमार[32] (1986)

उत्तर प्रदेश के 730 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जिनमें 280 कला, 250 जीवविज्ञान तथा 200 गणित के विद्यार्थी थे।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. कला और जीव विज्ञान के लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं था।
2. विज्ञान के विद्यार्थी कला के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अहं केन्द्रित थे।
3. कला के विद्यार्थियों की अपेक्षा गणित के विद्यार्थियों की उच्च आकांक्षाऐं थीं।
4. जीव विज्ञान और गणित के विद्यार्थियों के बुद्धि परीक्षण के अंक दूसरे समूहों में उच्च थे।
5. बी.ए., बी.एस.सी. के नम्बर तथा चारों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।
6. प्रतिगमन गुणांक के द्वारा पता चलता है कि लड़के और लड़कियों की स्नातक परीक्षा की सफलता में आत्मकेन्द्रितता तथा बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान था।

<u>विदेशों के किये गए बुद्धि से सम्बन्धित अध्ययन :</u>

विदेशों में बुद्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन किये गये हैं। जिनका विवेरण निम्नलिखित प्रकार से है–

जोर्डन[33] (1923), थर्सटन[34] (1925), टूप्स[35] (1926)

अध्ययन में बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .31 से .60 तक सहसम्बन्ध पाया।

डब्ल्यू डी कुकिंग तथा टी.सी. होली[36] (1927)

अध्ययन किया और यह पाया कि छात्रों की कॉलेज की परीक्षा श्रेणियों उनके बुद्धि प्राप्तांकों की अपेक्षा उनकी हाईस्कूल की परीक्षा श्रेणियों के साथ अधिक मात्रा में सहसम्बन्धित थीं।

हार्टसन तथा स्प्रा[37] (1941)

अध्ययन में पाया कि बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध 0.31 से 0.60 था।

आरोन[38] (1946)

अध्ययन में पाया कि बौद्धिक योग्यता एवं स्कूल या कॉलेज की परीक्षा श्रेणियों के मध्य .40 से .50 तक सार्थक सहसम्बन्ध था।

क्रॉन बैंक[39] (1949)

अध्ययन में पाया कि बुद्धि एवं स्कूल की परीक्षा श्रेणियों के मध्य .55 तक सार्थक सहसम्बन्ध था।

ट्रावर्स[40] (1949)

अध्ययन में पाया कि आठवीं तथा दसवीं कक्षा के स्तर पर बुद्धि एवं परीक्षा श्रेणियों के मध्य .50 से .75 तक सहसम्बन्ध था।

सुपर[41] (1949)

अध्ययन के अन्तर्गत बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पारस्परिक सहसम्बन्ध का उल्लेख किया है।

डब्ल्यू ग्रिपथ्स[42] (1952)

अभिभावकों, अध्यापकों तथा स्वयं बालकों द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयों का अध्ययन किया और यह पाया कि–

1. मध्यम श्रेणी के बालक उच्च एवं निम्न श्रेणी के बालकों की अपेक्षा शीघ्रता से सीख जाते हैं।
2. बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

गौग[43] (1953)

अपने अध्ययन में पाया कि हाईस्कूल के वरिष्ठ छात्रों के तीन प्रतिदर्शो में सहसम्बन्ध का विस्तार .62 से .80 था।

जे.पी. मैकक्वैरी[44] (1954)

अध्ययन में विश्वविद्यालय के उच्च तथा निम्न उपलब्धि के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया था। उन्होंने समूह को उनकी अभिरूचि प्राप्तांकों के आधार पर चुना था। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. उच्च उपलब्धि के छात्र अच्छी पारिवारिक स्थिति से कम ही आते हैं।
2. जिनके माता-पिता कम शिक्षित होते हैं वे अधिकांशतः व्यावसायिक कक्षाओं को कम महत्व देते हैं।
3. कम उपलब्धि के छात्रों की हाईस्कूल की परीक्षा की उपलब्धि अच्छी नहीं होती है।
4. वे व्यवहारिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान को अध्ययन के विषय के रूप में चुनते हैं।

नासन[45] (1958)

अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि का परीक्षा श्रेणियों के पूर्व सूचक के रूप में उपयोग करने पर छात्रों के सन्दर्भ में .34 तथा छात्राओं के सन्दर्भ में .39 सहसम्बन्ध था।

जैकोब[46] (1959)

अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था।

कार्टर[47] (1961)

अपने अध्ययन में तीनों प्रतिदर्शो में प्रायः .60 सहसम्बन्ध पाया था।

टायलर[48] (1965)

अपने अध्ययन में पाया कि स्कूल के छात्रों के बुद्धिलब्धांक तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .70 सहसम्बन्ध था।

हार्पर[49] (1967)

अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता में सार्थक सहसम्बन्ध .315 से .600 के मध्य था।

बी.आर. मैक कैन्डिल्स, ए रॉबर्टस तथा टी स्टर्नस[50] (1972)

सातवीं कक्षा के 443 बच्चों पर एक अध्ययन किया और पाया कि बुद्धि तथा पाठन, भाषा, गणित, सामाजिक विषय एवं विज्ञान की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .56 सहसम्बन्ध था।

गिलॉसप एपीलयार्ड तथा रॉबर्टस[51] (1979)

शैक्षिक उपलब्धि का सामान्य बुद्धि से सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया था कि–

1. बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक रेखीय सहसम्बन्ध था।
2. बुद्धि तथा गणित की योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.85 था।
3. बुद्धि तथा पठन की योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध 0.815 था।

क्रेनो, मैसी एण्ड राइस[52] (1979)

इंग्लैन्ड तथा बैल्स के प्राथमिक विद्यालयों के 5,200 बच्चों पर एक अध्ययन किया और यह पाया था कि मानसिक योग्यता परीक्षण के प्राप्तांकों तथा कक्षा–कक्ष की कार्यक्षमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 474 से .505 था।

एम. मकसूद[53] (1980)

बर्हिमुखता, मनस्ताप तथा बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन किया। उनके अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. बौद्धिक योग्यता तथा बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।
2. बर्हिमुखता तथा शैखिक उपलब्धि के मध्य सार्थक नकारात्मक सहसम्बन्ध था।

रौबर्ज और फ्लैक्जर[54] (1981)

बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित एक अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. पठन तथा गणित के प्राप्तांक, बुद्धि के प्राप्तांकों से सम्बन्धित थे।
2. मानसिक योग्यता, गणित तथा पठन से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थी।
3. तीनों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .58, .61 तथा .61 थे।

यूल, लैन्स डाउन तथा अरवैनौविस्ज[55] (1982)

बुद्धि के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी का अध्ययन किया और यह पाया कि–

1. बुद्धि के प्राप्तांकों तथा उपलब्धि प्राप्तांकों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

2. पठन योग्यता के विभिन्न स्तरों तथा गणित के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .457 से .911 था।

भारतवर्ष में किए गए उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्धित अध्ययन

मेहता[56] (1976)

अध्ययन में 32 हायर सैकेन्ड्री स्कूलों में पढ़ने वाले नवीं कक्षा के 975 बालकों का चुनाव सामाजिक, आर्थिक स्तर, आयु एवं संकाय के आधार पर किया और पाया था कि-

1. विद्यालय की स्थिति का निष्पत्ति प्रेरणा से महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।
2. सामाजिक आर्थिक स्तर का निष्पत्ति प्रेरणा से महत्वपूर्ण सम्बन्ध था।
3. पिता के सामाजिक आर्थिक स्तर का बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा से विशेष सम्बन्ध नहीं था।
4. बुद्धि से निष्पत्ति प्रेरणा का धनात्मक सम्बन्ध था।

पी. मेहता[57] (1969)

एक अध्ययन किया था। उनके अध्ययन के निम्नलिखित निष्कर्ष थे-

1. ग्रामीण व शहरी हाईस्कूल के लड़कों की उपलब्धि प्रेरणा के स्तर में कोई अन्तर नहीं था।
2. जिन लड़कों के पिताओं का शैक्षिक स्तर उच्च अथवा निम्न था उनका उपलब्धि प्रेरणा स्तर उच्च था तथा जिन लड़कों के पिताओं का शैक्षिक स्तर सैकेन्ड्री तक था। उनका उपलब्धि प्रेरणा स्तर निम्न था।
3. उपलब्धि सम्पूर्ण विद्यालय की वार्षिक परीक्षा की उपलब्धि से धनात्मक सहसम्बन्ध रखती है।
4. शैक्षिक उपलब्धि आवश्यकता उपलब्धि से नकारात्मक सम्बन्ध रखती है।

प्रयाग मेहता[58] (1969)

निष्पत्ति आवश्यकता और विद्यालय उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया था कि-

1. स्कूल उपलब्धि तथा निष्पत्ति प्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

वी.के. मित्तल[59] (1969)

हाईस्कूल के छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा एवं समायोजन पर एक अध्ययन किया और पाया कि छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा एवं समायोजन में समानान्तर सम्बन्ध या अर्थात् निष्पत्ति प्रेरणा जितनी उच्च होगी उतना ही अच्छा समायोजन होगा।

पी.पी.गोकुल नाथन[60] (1972)

उपलब्धि प्रेरणा एवं दुश्चिन्ता के सम्बन्धों का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में डिब्रूगढ़ तथा लखीमपुर के 14 सैकेन्ड्री स्कूलों के 294 छात्र एवं 89 छात्राओं पर एक अध्ययन किया था इनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा ज्ञात करना।
2. निष्पत्ति प्रेरणा की दुश्चिन्ता से सम्बन्ध ज्ञात करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. जनजातियों की निष्पत्ति प्रेरणा नॉन ट्राइवल बालकों से उच्च थीं।
2. छात्राओं की निष्पत्ति प्रेरणा छात्रों से उच्च थी।
3. जनजाति के बालक जो विभिन्न क्षेत्रों में रह रहे थे उनकी निष्पत्ति नॉन ट्राइवल क्षेत्र में रहने बालों से उच्च पाई गई।
4. ग्रामीण निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर वाले बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा शहरी निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा के मध्यमान अंकों से सार्थक रूप से उच्च थी।

ठाकुर[61] (1972)

अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाले थे कि-

1. सभी शाखाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।
2. शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि सार्थक रूप से सहसम्बन्धित थे।
3. उपलब्धि प्रेरणा एवं वैज्ञानिक अभिक्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था।

सिन्हा[62] (1970)

ऐकेडेमिक अचीवर्स तथा नौन अचीवर्स पर अध्ययन किया। इन्होंने कुछ व्यक्तित्व कारक जो कि विश्वविद्यालयी शिक्षा में सफलता तथा असफलता से सम्बन्धित थे को ज्ञात करने का प्रयास किया। निष्पत्ति प्रेरणा उनमें से एक थी। इन्होंने अपना अध्ययन 185 उच्च उपलब्धि प्राप्त तथा 185 निम्न उपलब्धि के विद्यार्थियों पर किया था। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. उच्च उपलब्धि वालों की तुलना में निम्न उपलब्धि वालों को निष्पत्ति प्रेरणा की अधिक आवश्यकता होती है।
2. निष्पत्ति प्रेरणा स्कूल उपलब्धि के साथ ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित थी।

देसाई[63] (1972)

उपलब्धि प्रेरणा पर एक अध्ययन किया इनके अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे–

1. उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. असफलता का डर, चिन्ता आदि चरों का उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध ज्ञात करना।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सम्बन्ध होता है।

ग्यानेन[64] (1973)

उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले छात्र शिक्षकों के निष्पत्ति प्रेरक का अध्ययन किया इन्होंने अपने अध्ययन में 150 छात्र शिक्षक 114 पुरुष तथा 36 स्त्री शिक्षकों को लिया इनका चयन स्थानीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से किया गया। अध्ययन का उद्देश्य था–

छात्र शिक्षकों की उच्च तथा निम्न उपलब्धि से निष्पत्ति प्रेरणा का सम्बन्ध ज्ञात करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. उच्च उपलब्धि वाले पुरुष छात्र शिक्षकों की निष्पत्ति प्रेरणा निम्न उपलब्धि वाले पुरुष छात्र शिक्षकों की अपेक्षा अधिक थी।
2. उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाली स्त्री छात्र शिक्षकों में निष्पत्ति प्रेरणा समान थी।
3. पुरुष तथा स्त्री छात्र शिक्षकों, उच्च तथा निम्न उपलब्धि वालों में निष्पत्ति प्रेरणा लगभग समान थीं।

देसाई[65] (1974)

केरा जिले के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की निष्पत्ति प्रेरणा का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में विभिन्न विद्यालयों से 1000 विद्यार्थियों को लिया जिसमें 755 लड़के एवं 265 लड़कियाँ थीं।

इनके अध्ययन का उद्देश्य था–

1. निष्पत्ति प्रेरणा, बुद्धि और स्कूल के वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन करना।

इस शोध के निष्कर्ष थे–

1. कक्षा उपलब्धि स्तर तथा छात्रों की निष्पत्ति में धनात्मक सहसम्बन्ध था।
2. कक्षा उपलब्धि स्तर तथा छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा में धनात्मक सहसम्बन्ध था।

राय[66] (1974)

उच्च व निम्न उपलब्धि में अन्तर करने वाली विशेषताओं का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला–

1. आवश्यकता, उपलब्धि, अच्छी उपलब्धि के लिए प्रथम शर्त है यह बालकों की शैक्षिक क्रियाओं को प्रोत्साहित करती है।

पाठक[67] (1974)

हाईस्कूल के बालकों पर एक अध्ययन किया और पाया कि–

1. उच्च स्तर के स्कूल में पढ़ने वाले बालक विभिन्न स्तर के स्कूलों में पढ़ने वाले बालकों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवश्यकता उपलब्धि रखते हैं।
2. बालक–बालिकाओं की आवश्यकता उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं होता है।

3. उपलब्धि प्रेरणा के प्राप्तांक बालकों की विद्यालय की उपलब्धि, अध्ययन की ओर अभिवृत्तियों तथा बुद्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थे।

प्रकाश[68] (1975)

स्कूल उपलब्धि और बुद्धि का निष्पत्ति प्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में हाईस्कूल के विज्ञान के 98 लड़कों को लिया था। इनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. बुद्धि के विभिन्न स्तरों से निष्पत्ति प्रेरणा का सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. स्कूल उपलब्धि के विभिन्न स्तरों पर निष्पत्ति प्रेरणा का सम्बन्ध ज्ञात करना।
3. निष्पत्ति प्रेरणा का बुद्धि उपलब्धि से सम्बन्ध ज्ञात करना

इस शोधकार्य के निम्नलिखित निष्कर्ष थे-

1. औसत और सुपीरियर बच्चों की अपेक्षा औसत से कम बुद्धि के बच्चों में निष्पत्ति प्रेरणा कम थी।
2. निम्न उपलब्धि वाले सार्थक रूप से उच्च उपलब्धि वालों की अपेक्षा निम्न निष्पत्ति प्रेरणा रखते थे। परन्तु उच्च उपलब्धि वालों की निष्पत्ति प्रेरणा उच्च थी।
3. निष्पत्ति प्रेरणा का बुद्धि एवं उपलब्धि के विभिन्न स्तरों से उच्च सम्बन्ध था।

सिद्दीकी[69] (1979)

अहमदाबाद के विभिन्न कालेजों के 450 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया। इनके अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. बुद्धि, व्यक्तित्व तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
2. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, आवश्यकता उपलबिध, प्रेरणा के मध्य अन्तर ज्ञात करना।
3. व्यक्तित्व तथा आवश्यकता उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।
4. बुद्धि को स्थिर रखते हुए पारिवारिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में पारस्परिक सहसम्बन्ध था।
2. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा उपलब्धि प्रेरणा में भिन्नता थी।
3. व्यक्तित्व का उपलब्धि प्रेरणा से धनात्मक सम्बन्ध था।
4. जब बुद्धि को स्थिर रखा गया तो यह पाया गया कि पारिवारिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सहसम्बन्ध था।

शिवप्पा[70] (1980)

उत्तरी बंगलौर, दक्षिण तथा ग्रामीण जिलों के 27 विद्यालयों के 900 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया जिसमें 510 लड़के तथा 390 लड़कियां थीं।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. अध्ययन की आदतें, शैक्षिक आकांक्षाऐं, सामाजिक आर्थिक स्तर उपलब्धि प्रेरणा और बुद्धिलब्धि सार्थक रूप से तथा धनात्मक रूप से सम्बन्धित थे जबकि व्यक्तित्व, समायोजन तथा चिन्ता सार्थक रूप से तथा नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थे।
2. शैक्षिक उपलबिध की भविष्यवाणी करने में बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, चिन्ता, शैक्षिक आकांक्षाओं तथा अध्ययन की आदतों का अत्यधिक योगदान रहता है। जिनमें बुद्धि का अत्यधिक योगदान रहता है तथा उपलब्धि प्रेरणा का उससे कम रहता है।
3. शहरी हाईस्कूल के विद्यार्थियों के सन्दर्भ में अध्ययन की आदतें शैक्षिक आकांक्षाएं, आर्थिक स्तर, आवश्यकता उपलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि धनात्मक रूप से सम्बन्धित थे तथा व्यक्तित्व समायोजन व चिन्ता नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थे।
4. जब बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक आकांक्षाओं को दसवीं कक्षा के शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी के लिए लिया गया तब बुद्धि और उपलब्धि प्रेरणा का अधिक तथा कम समान योगदान था।
5. ग्रामीण विद्यार्थियों के संदर्भ में अध्यन की आदतें, शैक्षिक आकांक्षाएं, उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि सार्थक रूप से सम्बन्धित थे। जब बुद्धिलब्धि, शैक्षिक

आकांक्षाएं, उपलब्धि प्रेरणा को शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी के लिए लिया गया तब बुद्धिलब्धि का अत्यधिक योगदान था।

6. कक्षा दस के विद्यार्थियों के इम्तहान की सफलता में अध्ययन की आदतें, शैक्षिक आकांक्षाऐं, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा आवश्यकता उपलब्धि धनात्मक तथा सार्थक रूप से सम्बन्धित थी तथा चिन्ता नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थी हाईस्कूल की लड़कियों के इम्तहान की सफलता में अध्ययन की आदतें, शैक्षिक आकांक्षाऐं, आवश्यकता उपलब्धि और बुद्धिलब्धि सार्थक व धनात्मक रूप से सम्बन्धित थी व व्यक्तित्व समायोजन तथा चिन्ता नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थे।

एन.एस. अरूणा[71] (1981)

अध्ययन किया तथा पाया कि-

1. अनुसूचित एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम थी।
2. अनुसूचित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जनजाति के विद्यार्थियों से कम थी।
3. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं से कम थी।
4. सामाजिक आर्थिक स्तर, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

सक्सैना[72] (1981)

अध्ययन किया और पाया कि-

1. आवश्यकता, प्रेरणा तथा सृजनात्मकता के मध्य उच्च सहसम्बन्ध था।
2. छात्र एवं छात्राओं में जिनके मूल्य अधिक थे अथवा कम थे उनकी आवश्यकता, प्रेरणा में अन्तर नहीं था।
3. आवश्यकता, प्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर में धनात्मक सहसम्बन्ध था।

शर्मा[73] (1981)

हरियाणा के हायर सैकेन्ड्री स्कूलों की 1225 ग्रामीण छात्राओं का अध्ययन किया, अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे-

1. हरियाणा के विभिन्न सैकेन्ड्री स्कूलों में गांवों से आने वाली लड़कियों की उच्च उपलब्धि तथा निम्न उपलब्धि से सम्बन्धित कारकों का अध्ययन करना।
2. उच्च उपलब्धि तथा निम्न उपलब्धि में विभिन्न चरों के योगदान को ज्ञात करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन की योजना, समायोजन तथा संवेगात्मक असुरक्षा निम्न उपलब्धि में योगदान देती है।
2. निम्न उपलब्धि को इन सभी चरों में शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है।
3. इस अध्ययन के सभी चर सहसम्बन्धित थे इसलिए निम्न उपलब्धकों के लिए उपचारात्मक शिक्षण अत्यधिक आवश्यक था।

गान्धी[74] (1982)

अध्ययन में पाया कि-

1. उपलब्धि प्रेरणा के सन्दर्भ में लिंगभेद नहीं था।
2. हाईस्कूल की लड़कियों की अपेक्षा हाईस्कूल के लड़के सार्थक रूप से किन्तु नकारात्मक रूप से ऐफीलिऐशन प्रेरणा से सम्बन्धित थे।
3. लड़के और लड़कियों की शक्ति प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था।
4. उपलब्धि प्रेरणा के उच्च सामान्य और निम्न स्तर के प्राप्तांकों का प्रभाव लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक रूप से पड़ता है।
5. हाईस्कूल के लड़के और लड़कियों की उच्च सामान्य और निम्न स्तर की उपलब्धि प्रेरणा और ऐफीलिऐशन प्रेरणा, उपलब्धि प्रेरणा और शक्ति प्रेरणा, ऐफीलिऐशन प्रेरणा और शक्ति प्रेरणा के अंकों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ कोई सार्थक अन्तःक्रिया नहीं थी।

शनमुग सुन्दरम[75] (1983)

मद्रास विश्वविद्यालय के 620 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया जिनमें 330 उच्च उपलबिध वाले तथा 290 कम उपलब्धि वाले विद्यार्थी थे।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

1. निम्न उपलब्धि वालों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वालों की अध्ययन की आदतें अच्छी थीं उच्च बुद्धि थी तथा उपलब्धि प्रेरणा उच्च थी।
2. उच्च तथा निम्न उपलब्धि वालों के आत्म प्रत्यय में सार्थक रूप से अन्तर नहीं था।
3. अर्द्ध ग्रामीण तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें अच्छी थीं बुद्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा उच्च स्तर की थी तथा शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी।
4. उच्च उपलब्धि वाले शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें, बुद्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा का सार्थक प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर था।
5. समायोजन का नकारात्मक प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर था।
6. लड़कियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, अध्ययन की आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि लड़कों से अच्छी थी।

स्वीन[76] (1984)

चण्डीगढ़ के 25 विद्यार्थियों के 1401 विद्यालयों पर एक अध्ययन किया।

इनके अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित थे-

1. छात्रों की उपलब्धि पर अनुदेशानात्मक प्रारूप की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना।
2. छात्रों की उपलब्धि पर आत्म प्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. छात्रों की उपलब्धि पर बुद्धि के प्रभाव की अध्ययन करना।
4. छात्रों की उपलब्धि पर आवश्यकता उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. छात्रों की उपलबिध पर अनुदेशनात्मक प्रारूप, बुद्धि, आत्म प्रत्यय तथा आवश्यकता उपलब्धि के अन्तः प्रभाव का अध्ययन करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. उच्च उपलब्धि वाले छात्रों के नम्बर निम्न उपलब्धि वाले छात्रों से सार्थक रूप से अच्छे थे।

2. उच्च आत्म प्रत्यय वाले छात्रों के नम्बर निम्न आत्म प्रत्यय वाले छात्रों से अच्छे थे।
3. उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न उपलब्धि प्रेरणा वाले छात्रों से अच्छी थी।
4. किसी परीक्षण में विद्यार्थियों के मध्यमान प्राप्तांकों पर बुद्धि तथा आवश्यकता उपलब्धि का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
5. छात्रों की उपलब्धि पर आत्म प्रत्यय तथा आवश्यकता उपलब्धि का एक साथ प्रभाव पड़ता है।
6. वह विद्यार्थी जिनकी उपलब्धि प्रेरणा तथा आत्म प्रत्यय उच्च स्तर का होताहै उनकी उपलब्धि उन विद्यार्थियों से अच्छी होती है जिनकी उपलब्धि प्रेरणा तथा आत्म प्रत्यय निम्न स्तर का होता है।

उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्धित विदेशों में किए गए अध्ययन

उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्धित विदेशों में अनेक अध्ययन किए गए हैं जिनका विवरण इस प्रकार है।

लॉवेल[77] (1952), मॉर्गन[78] (1952), रिसीयूटी[79] (1954) तथा जॉन्सटन[80] (1955)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

ब्राउन तथा हॉल्ट्जमेन[81] (1956)

अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व तथा दूसरे मनोवैज्ञानिक चरों की अपेक्षा अध्ययन की आदतें, अभिवृत्यात्मक तथा अभिप्रेरणात्मक कारक शैक्षिक कार्यक्षमता को अधिक प्रभावित करते हैं।

फ्रेन्च एण्ड थॉमस[82] (1958)

अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्र निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में किसी समस्या को अधिक शीघ्रता से हल करने की क्षमता रखते हैं।

चार्मस एण्ड जौर्डन[83] (1959)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

पीयर्स और बोमेन[84] (1960)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

स्मिथ[85] (1960)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा, लगनशीलता एवं कार्यक्षमता में बहुत कम सम्बन्ध था और सांख्यकीय रूप से सार्थक नहीं था।

मिथाइल[86] (1961)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा कार्य क्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

करन[87] (1963)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा कार्यक्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।

एट किन्सन तथा टिमैन[88] (1965)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा से सार्थक रूप से सहसम्बन्धित थी।

कॉफल हॉर्न और सदन एवं कलिंगर[89] (1966)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध मध्यम दर्जे का था किन्तु सार्थक नहीं था।

ब्राउन[90] (1974)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षणों के मध्य सहसम्बन्ध कम था तथा कुछ परिस्थितियों में शून्य था।

कोल[91] (1974)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा वर्तनी को छोड़कर शैक्षिक उपलब्धि के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित थी।

शुल्ज[92] (1976), पारीख[93] (1978)

अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि से अत्यधिक सम्बन्धित थी।

भारत वर्ष में किए गए समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन

श्रीवास्तव[94] (1957)

अध्ययन किया और यह पाया कि- निम्न उपलब्धि निम्न सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित थी।

जार्ज[95] (1966)

अध्ययन किया इनके शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. लड़के तथा लड़कियां कक्षा में प्रोन्नति से समान रूप से प्रभावित होते है।
2. पिता का शैक्षिक और आर्थिक स्तर बालकों की उन्नति को प्रभावित करता है।
3. उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालक समायोजित थे तथा अध्ययन के सभी समूहों में उच्च उपलब्धि प्राप्त करते थे।
4. बुद्धि के प्राप्तांक विद्यालय और स्वास्थ्य समायोजन के साथ सार्थक रूप से सम्बन्धित थे।
5. बर्हिमुखी विद्यार्थी कुछ क्षेत्रों में ही सुसमायोजित थे तथा उनका उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं था।
6. कम मनस्तापी विद्यार्थी सभी क्षेत्रों में सुसमायोजित थे।
7. मनस्ताप का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं था।
8. समूह के प्राप्तांक समूह से सार्थक रूप से उच्च थे लेकिन उन सभी में आपस में भिन्नता नहीं थी।

शर्मा[96] (1967)

व्यक्तित्व समायोजन तथा भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित की सम्प्राप्ति के मध्य .25, .05 तथा .29 सहसम्बन्ध ज्ञात किया।

पारीक[97] (1968)

किशोरावस्था के समय विभिन्न विषयों की सम्प्राप्ति पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि समायोजन का विभिन्न विषयों की सम्प्राप्ति पर तद्भव प्रभाव पड़ता है।

मित्तल[98] (1969)

हाईस्कूल के छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा एवं समायोजन पर एक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला था–

1. छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा तथा समायोजन में समानान्तर सम्बन्ध था।
2. निष्पत्ति प्रेरणा जितनी उच्च होगी समायोजन भी उतना अच्छा होगा।

जैन[99] (1969)

विद्यालय एवं परिवार में कुसमायोजन का विद्यार्थियों की निम्न सम्प्राप्ति से सीधा सम्बन्ध पाया।

शर्मा[100] (1971)

अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि–

1. विभिन्न क्षेत्रों में कुसमायोजन का प्रभाव उच्च सम्प्राप्ति वाले विद्यार्थियों पर पड़ता है।
2. निम्न स्तर की सम्प्राप्ति का कारण घर, विद्यालय तथा समाज में कुसमायोजन था।

शर्मा[101] (1968)

अध्ययन में पाया कि–

1. शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों तथा छात्राओं में उत्तरदायित्व की भावना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

2. उत्तरदायित्व की भावना का धनात्मक और सार्थक सहसम्बन्ध शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं सामाजिक स्वीकृति के साथ था।
3. समायोजन के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति का सहसम्बन्ध ऋणात्मक था।

जैन[102] (1969)

अध्ययन में पाया कि–

1. लोक प्रिय एवं अस्वीकृत छात्रों के गृह, स्वास्थ्य संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।
2. अध्यापकों एवं कक्षा के साथियों से उनके सम्बन्धों, खेलकूद, भ्रमण, कैम्प तथा शैक्षिक कार्यों में सार्थक अन्तर था।
3. अस्वीकृत छात्रों को उनके अभिभावकों द्वारा सलाह दी जाती थी।
4. उनमें बीमारी के चिन्ह पाये गये।
5. अजनबी लोगों से बातचीत करने में हिचकिचाते थे।
6. संवेगात्मक अस्थिरता पाई गई।

सुश्री रेखा[103] (1974)

आवश्यकता व समायोजन को क्षेत्र मानकर छात्रावास में रहने वाले एवं अन्य किशोर विद्यार्थियों की आवश्यकता व समायोजन का तुलनातमक अध्ययन किया और पाया कि–

1. छात्रावास में रहने वाली छात्राओं का घर में रहने वाली छात्राओं से उपलब्धि एवं प्रदर्शन अच्छा था।
2. छात्रावास में रहने वाली छात्राओं का गृह, समाज तथा संवेगात्मक समायोजन घर पर रहने वाली छात्राओं से अच्छा पाया गया।
3. उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी।

श्रीवास्तव[104] (1975)

अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि कला तथा विज्ञान के इण्टरमीडिएट तथा स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

रेडी[108] (1978)

कक्षा आठ के शहरी, ग्रामीण तथा अर्द्ध ग्रामीण विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया। यह अध्ययन तब तक चला जब तक कि विद्यार्थी कक्षा 10 में न पहुंच गए।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलखित थे-

1. शैक्षिक समायोजन सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित था।
2. मानसिक योग्यता से शैक्षिक उपलब्धि कम सम्बन्धित थी।
3. अधिगम, शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावक, शिक्षक, साथियों की अभिवृत्ति तथा शैक्षिक समायोजन शैक्षिक निष्पत्ति से सार्थक रूप से सम्बन्धित थे।
4. शैक्षिक समायोजन स्वतन्त्र था तथा सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक निष्पत्ति तथा व्यावसायिक प्राथमिकता में अन्तः सम्बन्ध था।

सिंह[106] (1978)

अध्ययन किया और पाया कि-

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व्यक्तित्व व समायोजन के मध्य सार्थक व धनात्मक सहसम्बन्ध था।
2. खिलाड़ी के न खेलने वाले छात्र शैक्षिक सम्प्राप्ति की दृष्टि से समान स्तर के थे।
3. स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक व विद्यालयी समायोजन की दृष्टि से दोनों समूहों में सहसम्बन्ध था।

सिंह[107] (1979)

छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति और समायोजन का अध्यन किया और पाया कि-

1. उच्च समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति उच्च थी।
2. उच्च शैक्षिक सम्प्राप्ति वाले छात्रों का सामाजिक, विद्यालयी तथा संवेगात्मक समायोजन अच्छा था किन्तु उनका स्वास्थ्य समायोजन निम्न स्तर का था।

पाण्डेय[108] (1979)

अध्ययन में पाया कि-

1. ग्रामीण छात्रों ने संवेगात्मक, स्वास्थ्य तथा शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में अधिक अंक प्राप्त किए।
2. सौन्दर्यात्मक समायोजन के क्षेत्र में शहरी छात्रों के अंक अधिक थे।
3. समायोजन, आकांक्षा स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध था।
4. शहरी छात्र, संवेगात्मक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन के क्षेत्र में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

शशिधर[109] (1981)

अध्ययन में पाया कि–

1. अनुसूचित जाति की आठवीं, नवीं तथा दसवीं कक्षा की लड़कियों का सामाजिक आर्थिक स्तर शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नहीं था।
2. तीनों स्तरों पर अनुसूचित जाति के छात्रों की बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी।
3. कक्षा आठ तथा दस के विद्यार्थियों की समायोजन अनुसूची तथा शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध पाया गया।
4. कक्षा 9 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था।
5. शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था।

ग्रायत्री[110] (1981)

अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर का संवेगात्मक समायोजन था।

शर्मा[111] (1982)

हाईस्कूल के विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया अध्ययन के उद्देश्य थे–

1. पिछड़े तथा बिना पिछड़े हुए विद्यार्थियों को पहिचानना।
2. पिछड़े तथा बिना पिछड़े हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की विभिन्नताओं का अध्ययन करना।

3. समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में पिछड़े हुए विद्यार्थियों के समायोजन मे सार्थक विभिन्नता ज्ञात करना।
4. सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में पिछड़े तथा बिना पिछड़े हुए विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
5. पिछड़े तथा बिना पिछड़े लड़के लड़कियों की सृजनात्मक के अंकों के अन्तर का अध्ययन करना।
6. सृजनात्मकता, सामाजिक आर्थिक स्तर, लिंग तथा विद्यार्थियों के प्रकार के आधार पर समायोजन के अन्तर का अध्ययन करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. लड़के तथा लड़कियों के समायोजन के अंकों में सार्थक अन्तर नहीं था।
2. पिछड़े तथा बिना पिछड़े विद्यार्थी जो कि दूसरे स्वतन्त्र कारकों में सामान्य से ऊपर थे, समायोजन के अंकों में एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न थे।
3. सृजनात्मकता तथा सामाजिक आर्थिक स्तर समायोजन से स्वतन्त्र थे।
4. छह प्रथम आर्डर सहसम्बन्धों में से केवल दो सार्थक थे।
5. पिछड़ी लड़कियां उच्च रूप से समायोजित थी।
6. चार द्विस्तरीय सहसम्बन्धों में से केवल दो सार्थक थे। इन कारकों के सामूहिक सहसम्बन्धों का प्रभाव समायोजन के प्राप्तांकों पर पड़ता है।
7. सभी चरों के मध्य सहसम्बन्ध सार्थक थे इससे प्रतीत होता है कि जब चारों कारकों को एक साथ लिया गया तो सभी स्तरों पर समायोजन के प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर था।

राजपूत[112] (1985)

मान्डवी, भुज तथा गान्धीधाम के हायर सैकेन्ड्री स्कूल के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया अध्ययन की उपकल्पनाऐं निम्नलखित थी-

1. विभिन्न संकायों के आधार पर लड़के और लड़कियों के भविष्यवाणी करने वाले चरों तथा प्रमाणिक चरों में अन्तर होगा।
2. कला, वाणिज्य और विज्ञान के विद्यार्थियों के मूल्यों को देखा जायेगा।
3. आश्रितता शैक्षिक उपलब्धि से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित होगी।

4. शैक्षिक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होगा।
5. अभिभावकों का सामाजिक आर्थिक स्तर शैक्षिक उपलब्धि से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित होगा।
6. लड़के और लड़कियों के मूल्यों में विभिन्नता होगी।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. विज्ञान, गणित, अंक गणित तथा सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि में पिता का व्यवसाय सम्बन्धित था।
2. छह मूल्यों में से केवल सैद्धान्तिक मूल्य विभिन्न संकायों के अन्तरों के लिए उत्तरदायी था।
3. सामाजिक मूल्य, माता की शिक्षा और गुजराती में उपलब्धि लिंग भेद के लिए उत्तरदाई थी।
4. कला संकाय के संदर्भ में मूल्यों तथा पिता के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. आश्रितता सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नहीं थी।
6. शैक्षिक समायोजन सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नहीं था।

सिंह[113] (1986)

नवीं कक्षा के 370 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया अध्ययन की उपकल्पनाऐं निम्नलिखित थीं।

1. गणित की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक रूप से बुद्धि, वैज्ञानिक रुचि, यान्त्रिक रुचि, कृषि, व्यावसायिक रुचि, समाज सेवा में रुचि, कार्यालय के कार्यो में रुचि, प्रशासनिक कार्यो में रुचि, सामाजिक आर्थिक स्तर, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सम्बन्ध, संवेगात्मक स्थिरता वास्तविकता के साथ समायोजन, अवस्था नेतागीरी, अध्ययन की आदतें, अध्ययन तथा अभिवृत्तियों से सम्बन्धित होती है।
2. बुद्धि, वैज्ञानिक रुचि, यान्त्रिक रुचि, कृषि में रुचि, व्यावसायिक रुचि, समाज सेवा में रुचि, कला में रुचि, कार्यालय के कार्यो में रुचि, प्रशासनिक कार्यो में रुचि, सामाजिक आर्थिक स्तर, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सम्बन्ध,

संवेगात्मक स्थिरता, वास्तविकता के साथ समायोजन, अवस्था नेतागीरी, अध्ययन की आदतें, अध्ययन, अभिवृत्ति आदि में से कम से कम दो चर उच्च उपलब्धि वाले समूह तथा निम्न उपलब्धि वाले समूहों की गणित की उपलब्धि से सम्बन्धित होते हैं।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे-

1. गणित की उपलब्धि सार्थक रूप से तथा धनात्मक रूप से बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा अध्ययन की अभिवृत्ति से सम्बन्धित थी।
2. गणित की उपलब्धि वैज्ञानिक रूचि, यान्त्रिक रूचि, कृषि में रूचि व्यावसायिक रूचि, समाज सेवा में रूचि, कला में रूचि, कार्यालय के कार्यो में रूचि, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक सम्बन्ध, संवेगात्मक स्थिरता, समायोजन, अवस्था, नेतागीरी, अध्ययन की आदतों से सम्बन्धित नहीं थी।
3. प्रतिगमन समीकरण से ज्ञात होता है अध्ययन की आदतें तथा कृषि में रूचि सार्थक रूप से गणित की उपलब्धि से सम्बन्धित थे।
4. उच्च उपलब्धि वालों के अध्यन की अभिवृत्तियों में उच्च नम्बर थे जबकि निम्न उपलब्धि वालों के कम नम्बर थे उच्च उपलब्धि वाले निम्न उपलब्धि वालों से अधिक बुद्धिमान थे तथा उच्च उपलब्धि वाले निम्न उपलब्धि वालों की अपेक्षा सामान्यता उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के थे।
5. उच्च उपलब्धि वाले समूह तथा निम्न वाले समूहों में विभेद करने में बुद्धि, अध्ययन की अभिवृत्ति तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का महत्वपूर्ण योगदान था।

महरोत्रा[114] (1986)

कक्षा 10 के 535 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया जिसमें 260 लड़के तथा 275 लड़कियां थीं।

इनके अध्ययन का उद्देश्य कक्षा दस के विद्यार्थियों की बुद्धि, परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर व्यक्तित्व समायोजन, चिन्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना था।

इस शोध के निष्कर्ष थे–

1. लड़के और लड़कियों की चिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि में नकारात्मक सम्बन्ध था।
2. लड़के और लड़कियों के सामाजिक आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध था।
3. बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध था।
4. समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध था।
5. लड़कियों की चिन्ता का स्तर लड़कों की तुलना में उच्च था।

कपूर[115] (1987)

लखनऊ के जूनियर हाईस्कूल के कक्षा आठ के 1936 विद्यार्थियों पर एक अध्ययन किया। जिसमें 696 लड़के तथा 700 लड़कियाँ थीं जिनकी आयु 13 से 14 वर्ष थी।

इनके अध्ययन का उद्देश्य था जूनियर हाईस्कूल स्तर की उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कारकों का अध्ययन करना।

इस शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. उच्च उपलब्धि वाले लड़के और लड़कियों की बुद्धि का स्तर सामान्य तथा निम्न उपलब्धि वाले लड़के और लड़कियों की अपेक्षा उच्च था।
2. अधिकांशतः उच्च उपलब्धि वाले उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर से सम्बन्धित थे तथा निम्न उपलब्धि वाले निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित थे।
3. उच्च उपलब्धि वालों का गृह, समाज, स्वास्थ्य, संवेगात्मक तथा शैक्षिक समायोजन अच्छा था।
4. सामान्य तथा निम्न समूह के समायोजन के अंकों की अपेक्षा उच्च समूह वालों के समायोजन के अंक उच्च थे।
5. सामान्य व निम्न समूह वाले लड़के, लड़कियों की अपेक्षा उच्च समूह वाले विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें अच्छी थीं।

6. उच्च उपलब्धि वाले अपना अध्ययन उचित प्रकार से तथा योजनानुसार करते है अध्ययन की आदतें अच्छी होती है तथा इम्तहान की तैयारी उचित प्रकार से योजनानुसार करते हैं।

विदेशों में किए गए समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन

हॉलिंग वर्थ[116] (1926)

प्रतिभाशाली बालकों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक समायोजन की समस्या का अध्ययन किया उनके अनुसार लगभग 140 बुद्धिलब्धि के बच्चे साधारणतः विद्यालयी कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न करते हैं लेकिन अत्यधिक उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालक विद्यालयी कार्य को उचित रूप से सम्पन्न नहीं कर पाते हैं।

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया था कि-

1. प्रतिभाशाली बालक सब उम्र के बालकों से हार्दिक मित्रता नहीं रखते हैं।
2. प्रतिभाशाली बालकों के समायोजन की समस्यायें प्राथमिक रूप से अपरिपक्वता के कारण होती है।
3. कोई भी बालक जिसकी मानसिक आयु प्रौढ़ के समान है किन्तु उसके संवेग बालकों के समान है तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।
4. 125 से 155 बुद्धिलब्धि वाले बालक सामाजिक एवं व्यक्तिगत समायोजन में सामान्य व्यक्तियों से श्रेष्ठ होते हैं।

लैकॉक[117] (1933)

व्यक्तित्व और व्यवहार के सम्बन्ध में 51 श्रेष्ठ बालकों पर एक अनुसंधान किया और पाया था कि बाद वाले समूह ने अधिक कुसमायोजन प्रदर्शित किया।

बिंटी[118] (1940)

100 प्रभावशाली बालकों के चरित्र का अनुसरण करते हुए पाया कि-

1. उनका समूह धैर्य और स्थिरता में श्रेष्ठ था।
2. 100 प्रतिभाशाली असमायोजित थे जिनमें दो प्रकार के थे-

   (अ) चिन्तित, पलायनवादी एवं असुरक्षित।

   (ब) उदासीन एवं सामाजिक रूप से अनुपयुक्त।

मुसलमान[119] (1962)

अध्ययन में पाया था–

1. हाईस्कूल के देदीप्यमान छात्रों के समूह में अच्छा समायोजन उच्च औसत उपलब्धि से सम्बन्धित था।
2. अल्प समायोजन बहुत अधिक उच्च उपलब्धि से सम्बन्धित था।
3. श्रेष्ठ बालक सामाजिक तथा शारीरिक गतिविधियों में अधिक सफल नहीं थे।
4. वे अपने अध्ययन के लिए अधिक प्रयत्नशील थे तथा अधिक समय देते थे।

मैकगी[120] (1942)

युनाइटेड स्टेट के 36 राज्यों, 310 समुदायों तथा 455 विद्यालयों के 4797 बालकों तथा 4264 बालिकाओं पर एक अध्ययन किया और पाया कि–

बौद्धिक रूप से न्यून बालकों की अपेक्षा श्रेष्ठ बालकों के पास बांछनीय व्यक्तित्व को विकसित करने के अधिक अवसर थे।

लैविस[121] (1947)

अध्ययन में उन बालकों की संवेगात्मक स्थिरता की तुलना की जो कि शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन के आधार पर प्रतिभाशाली, मानसिक रूप से दुर्बल और समस्यात्मक बालक समझे गये थे उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. श्रेष्ठ और प्रतिभाशाली बालकों ने मानसिक रूप से दुर्बल और समस्यात्मक बालकों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक स्थिरता प्रदर्शित की।
2. देदीप्यमान बालक संवेगात्मक और सामाजिक समायोजन की दृष्टि से श्रेष्ठ थे।

लैविस, टरमन एण्ड जोर्डन[122] (1947)

अध्ययन किया जो विस्तृत पैमाने पर 1921 से प्रारम्भ होकर 30 वर्ष तक चला इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. प्रतिभाशाली बालक प्रत्येक चरित्र परीक्षण पर औसत से उच्च थे।
2. अवचयनित बालकों की अपेक्षा वह आत्म प्रशंसा कम करते थे तथा अपने ज्ञान को बढ़ा चढ़ाकर नहीं कहते थे।

3. उनकी सामाजिक अभिवृत्तियां और चरित्र की प्राथमिकताएं अधिक उच्च थीं और वे संवेगात्मक स्थिरता के एक परीक्षण में भी उच्च स्थान पर थे।
4. एक विशेष रूप से 9 वर्ष के प्रतिभाशाली छात्र के प्राप्तांक उतने ही ऊंचे थे जितने कि 12 अथवा 13 वर्ष के औसत छात्र के प्राप्तांक।

वैल्स[123] (1949)

श्रेष्ठ बालकों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया और पाया था–

किसी भाषा के परीक्षा में अमूर्त बुद्धि पर प्राप्त उच्च प्राप्तांक सामाजिक पर्यावरण के साथ सफल समायोजन से सम्बद्ध नहीं थे।

बारबरा, डौथी, जौन्सन, लेविस, टरमन[124]

अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे–

1. असाधारण रूप से उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालकों के सम्बन्ध में सामाजिक समस्यायें तीव्र रूप से पाई जाती हैं।
2. यदि बुद्धिलब्धि 180 है और 6 वर्ष की अवस्था में बौद्धिक स्तर लगभग 11 वर्ष के औसत बालकों के बराबर हैं और 10 अथवा 11 वर्ष की अवस्था औसत हाईस्कूल, स्नातकों की अवस्था से भिन्न नहीं है।
3. शारीरिक विकास 10 प्रतिशत सामाजिक विकास 20 प्रतिशत अथवा 30 प्रतिशत से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता।
4. अटलनीय परिणाम यह था कि 180 बुद्धिलब्धि के बालक की सर्वाधिक समस्या सामाजिक समायोजन की थी जो प्रत्येक मानव से आशा की जाती है।

नीविल[125] (1951)

प्रतिभाशाली बालकों की व्यवहारात्मक समसया सम्बन्धी अध्ययन किया और पाया था–

1. बुद्धिलब्धि और संवेगात्मक कठिनाई अथवा समायोजन में कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।
2. ऊंची बुद्धिलब्धि सामान्यतः अच्छा समायोजन प्राप्त करने के लिए लाभप्रद थी।

3. प्रतिभाशाली बालक सामान्य बालकों से स्थिरता में एक कदम आगे थे किन्तु वह भी संवेगात्मक और सामाजिक समायोजन की कठिनाइयों से मुक्त नहीं थे।

२.३ शोध से सम्बन्धित अध्ययनों का सारांश :

प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धि, उपलबिध प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि, चार चर थे। इन चरों से सम्बन्धित अध्ययनों को इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। उन्हीं अध्ययनों से सम्बन्धित सारांश इस प्रकार हैं–

(क) बुद्धि से सम्बन्धित अध्ययनों का सारांश :

के माथुर (1963) ने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य .70 फाइकॉफीसिऐन्ट था। बुद्धि तथा आर्थिक स्तर के मध्य .84 तथा बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थी। **एस.एल. चौपड़ा** (1964) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्रों का उपलब्धि मध्यमान निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित छात्रों से उच्च था। **डी.जी. राव** (1965) ने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि, अध्ययन की आदतों व स्कूल अभिवृत्तियों के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध 0.81 था। **जैन** (1965) ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्रभावित करती है, इसका लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च सहसम्बन्ध होता है, पारिवारिक वातावरण धनात्मक तथा सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है किन्तु इसका सामाजिक-आर्थिक स्तर से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। **विधु** (1968) ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक व सार्थक सहसम्बन्ध था। **रामकुमार वसन्त** (1969) ने बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध 0.25 पाया। **वी.झा** (1970) ने अपने अध्ययन में पाया कि सामान्य ज्ञान व विज्ञान की उपलब्धि के मध्य धनात्मक सार्थक सहसम्बन्ध था सामाजिक आर्थिक स्तर व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था एवं बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था। **पी.एस. गुप्ता** (1973) ने अध्ययन में पाया कि छात्रों के स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलबिध के मध्य

कोई सम्बन्ध नहीं था। लड़कों की बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .05 से .06 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा लड़कियों की बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .3 से .35 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था। **जी.के. मखीजा (1973)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है। बुद्धिमान विद्यार्थी विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में रूचि रखते है। वे उच्च उपलब्धि वाले कम होते हैं। **एस. अग्रवाल (1973)** ने अपने अध्ययन में पाया कि समायोजन का मैडीकल के नम्बरों से नगण्य सहसम्बन्ध था बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि से उच रूप से सहसम्बन्धित थी। बुद्धि, अभिक्षमता, रूचि एवं समायोजन का सहसम्बन्ध मैडीकल के इम्तहानों के विरूद्ध उच्च था। रूचि और आयु के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। सामाजिक आर्थिक स्तर की बृद्धि का समायोजन तथा बुद्धि पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है किन्तु रूचि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बुद्धि, अभिक्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था। बुद्धि, रूचि, अभिक्षमता, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध था। **जी.एस. धर्मी (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता में घनिष्ठ तथा उच्च सहसम्बन्ध था। सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध सांख्यिकीय रूप से सार्थक था किन्तु उच्च नहीं था। शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता, शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर एक दूसरे से सार्थक रूप से भिन्न थे। **बी.सी. सीथा (1975)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में उच्च बुद्धि रखते हैं। अध्ययन की आदतों का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सम्बन्ध था। उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की अध्ययन की आदतें निम्न उपलब्धि वाले छात्रों की तुलना में बहुत अच्छी थी। **प्रकाश चन्द्र (1975)** ने अपने अध्ययन में पाया कि- समस्या व बुद्धि, बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन की आदतें व शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धि व सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर के मध्य 13 से 46 तक धनात्मक सहसम्बन्ध था। **मेहता (1976)** ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न विद्यालयी वातावरण में पढ़ने वाले, सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित छात्रों की बुद्धि, शैक्षिक सम्प्राप्ति, अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर में अन्तर था। **पी.एल. मिश्रा (1976)** ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिक सम्प्राप्ति वाले

तीनों संकायों के छात्र एवं छात्राएं सृजनात्मकता एवं बुद्धि में उच्च पाये गए तथा सामान्यतः चिन्ता की मात्रा कम पाई गई न्यून सम्प्राप्ति वाले तीनों संकायों के छात्र एवं छात्राएं सृजनात्मकता एवं बुद्धि में कम तथा चिन्ता की मात्रा अधिक पाई गई। बुद्धि एवं सृजनात्मकता का विज्ञान एवं वाणिज्य के साथ भी सहसम्बन्ध पाया गया। विज्ञान एवं वाणिज्य के न्यून सम्प्राप्ति वाले छात्र-छात्राओं के साथ भी सृजनात्मकता एवं चिन्ता का सहसम्बन्ध पाया गया। **रवींद्र (1977)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सामान्य विज्ञान और गणित को छोड़कर चिन्ता शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नहीं थी। चिन्ता के स्तर पर उच्च अभिक्षमता वाले छात्रों की कार्यक्षमता निम्न अभिक्षमता वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। सामान्यतः चिन्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर कम प्रभाव पड़ता है किन्तु चिन्ता व बुद्धि का एक साथ प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। **ओ.वी. गुप्ता (1977)** ने अपने अध्ययन में पाया कि 13, 15 और 17 साल के लड़के-लड़कियों की बुद्धि शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले लड़कों की तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली लड़कियों की बुद्धि 15 वर्ष तक बढ़ती है और उसके पश्चात् कम होती है। निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले लड़कों की तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली लड़कियों की बुद्धि 15 वर्ष तक घटती है और उसके पश्चात् बढ़ती है। आयु का प्रभाव रूचि पर पड़ता है। फाइन आर्ट्स और तकनीकी रूचि पन्द्रह वर्ष की आयु तक बढ़ती है और उसके पश्चात् कम होती है शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव निराशा पर पड़ता है एवं आयु का प्रभाव भी निराशा पर पड़ता है। **एन.सी. पी. सिन्हा (1978)** ने अपने अध्ययन में पाया कि- बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि .01 स्तर पर सार्थक रूप से सहसम्बन्ध रखती है। विज्ञान वर्ग के बालकों की बुद्धि के प्राप्तांक कलावर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा सार्थक रूप से उच्च था। शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा से सार्थक रूप से सम्बन्ध रखती है।

एस.टी.वी.जी. आचार्यालू (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि- बुद्धि, आकृति कारक सृजनात्मकता परीक्षण और तेलगू, सामान्य विज्ञान और सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि में लिंगभेद नहीं था। बुद्धि तथा शाब्दिक सृजनात्मकता परीक्षण के मध्य सहसम्बन्ध .21 था एवं बृद्धि तथा आकृतिकारक सृजनात्मकता परीक्षण के मध्य सहसम्बन्ध .10 था। यह सम्बन्ध लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में उच्च था। उच्च बुद्धि

तथा उच्च सृजनात्मकता वाले समूह की विद्यालयी विषयों की उपलब्धि धनात्मक रूप से सार्थक थी एवं शाब्दिक सृजनात्मकता परीक्षण उपलब्धि एवं बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य उच्च सहसम्बन्ध था।

जी.एस. भागीरथ (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि सभी विद्यार्थी तथा शिक्षक बुद्धि, सामाजिक, शैक्षिक तथा संवेगात्मक समायोजन के पक्ष में थे लेकिन सृजनात्मकता तथा निरन्तरता के विषय में विचारों में भिन्नता थी। सामान्य से उच्च बुद्धिलब्धि वाले तथा कुसमायोजित, सामान्य से उच्च बुद्धिलब्धि वाले तथा सुसमायोजित शिक्षकों के विचार बुद्धि तथा चरित्र के विषय में समान थे किन्तु सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक समायोजन के विषय में भिन्न थे। पुरूष तथा महिला शिक्षक बुद्धि, चरित्र, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन से सहमत थे। किन्तु पुरूष अध्यापक सृजनात्मक एवं क्रियाशीलता से सहमत थे जबकि महिला शिक्षक संवेगात्मक समायोजन से सहमत थी। **एस.पी. मिश्र** (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि– कला के उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की बुद्धि कम उपलब्धि वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च थी वाणिज्य के उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की बुद्धि तीव्र थी। विज्ञान के उच्च उपलब्धि वाले छात्रों की बुद्धि कम उपलब्धि वाले छात्रों की अपेक्षा तीव्र थी एवं उच्च उपलब्धि वाली लड़कियों की बुद्धि कम उपलब्धि वाली लड़कियों की तुलना में तीव्र थी।

एन. श्रीवास्तव (1980) ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध उच्च स्तर का था। वैज्ञानिक क्लैरीकल रूचि तथा शैक्षिक समायोजन शैक्षिक उपलब्धि से उच्च रूप से सहसम्बन्धित थे। यान्त्रिक अभिरूचि संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित थें पी.ए. मैनन ने (1980) में अपने अध्ययन में पाया कि सृजनात्मकता एवं भाषा, शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि से उच्च सहसम्बन्ध रखती है। भाषा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध .56 तथा बुद्धि और भाषा के मध्य .32 था एवं सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ क्रमशः .29 तथा .24 था। **ए.डी. रंगारी** (1981) ने अपने अध्ययन में पाया कि– बुद्धि में सामान्य जाति वाले छात्र अनुसूचित जाति वाले छात्रों से उच्च थे। सामान्य जाति के विद्यार्थियों में

लड़के–लड़कियों से उच्च थे एवं अनुसूचित जाति के छात्रायें–छात्रों से अच्छी थीं। **एस. एल. चोपड़ा** (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्ययन की आदतें शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थी। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी स्तर के विद्यार्थी उच्च शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षाऐं रखते हैं संवेगात्मक, स्वास्थ्य तथा सामाजिक समायोजन की अपेक्षा घर का समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित था। शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर, अध्ययन की आदतें, घर का समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा संवेगात्मक समायोजन और शिक्षा की ओर अभिवृत्तियों के मध्य बहुचर सहसम्बन्ध .87 था तथा कॉफीसिऐन्ट ऑफ मल्टीपल डिटरमेन्ट्स .764 । **ए.एस. पाण्डेय** (1984) ने कम उपलब्धि वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की बुद्धि एवं उपलब्धि प्रेरणा उच्च थी तथा दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों में अन्तर था।

मिथिलेश दीक्षित (1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि लड़कों से उच्च थी। लड़कों के बुद्धि परीक्षण के अंक लड़कियों के अंकों से उच्च थे लड़कों के बुद्धि परीक्षण के अंक तथा शैक्षिक उपलब्धि में उच्च सहसम्बन्ध था किन्तु लड़कियों के बुद्धि परीक्षण के अंक तथा शैक्षिक उपलबिध में सामान्य सहसम्बन्ध था। **एस.एस. राजपूत** (1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च बुद्धि वाले लड़कों की गणित की उपलब्धि सामान्य तथा निम्न बुद्धि वाले लड़कों की अपेक्षा उच्च थी किन्तु बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। **आर.मित्रा** (1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि– लड़के और लड़कियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बर्हिमुखता, शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित थी किन्तु इनमें लिंगभेद नहीं था। बुद्धि को अलग कर देने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा बर्हिमुखता का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं रहा। **अवधेश कुमार** (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि कला और जीव विज्ञान के लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं था। लेकिन विज्ञान के विद्यार्थी अधिक अहं केन्द्रित थे तथा गणित के विद्यार्थियों की आकांक्षाऐं उच्च थीं। जीव विज्ञान और गणित

के विद्यार्थियों के बुद्धि परीक्षण के अंक दूसरे समूहों से उच्च थें बी.ए., बी.एस.सी. के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा चारों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

जोर्डन (1923) थर्सटन (1925) टूप्स (1926) ने बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .31 से .60 तक सहसम्बन्ध पाया। **डब्ल्यू, डी. कुकिंग तथा टी.सी. होली (1927)** ने अपने अध्ययन में पाया कि कॉलेज की परीक्षा श्रेणियाँ उनके बुद्धि प्राप्तांकों की अपेक्षा उनकी हाईस्कूल की परीक्षा श्रेणियों के साथ अधिक मात्रा में सहसम्बन्धित थी। **हार्टसन तथा स्प्रा (1941)** ने बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता के मध्य .31 से .60 तक सार्थक सहसम्बन्ध पाया। **आरोन (1946)** ने बौद्धिक योग्यता एवं कॉलेज की परीक्षा श्रेणियों के मध्य .40 से .50 तक सार्थक सहसम्बन्ध पाया। **क्रॉन बैक (1949)** ने अपने अध्ययन में पाया कि आठवीं तथा दसवीं कक्षा के स्तर पर बुद्धि एवं परीक्षा श्रेणियों के मध्य .55 तक सार्थक सहसम्बन्ध था। **ट्रावर्स (1949)** ने अपने अध्ययन में पाया कि आठवीं तथा दसवीं कक्षा के स्तर पर बुद्धि एवं परीक्षा श्रेणियों के मध्य .50 से .75 तक सहसम्बन्ध था। **सुपर (1949)** ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पारस्परिक सहसम्बन्ध का उल्लेख किया हैं। **डब्ल्यू. गिष्प्स ने (1952)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मध्यम श्रेणी के बालक उच्च एवं निम्न श्रेणी के बालकों की अपेक्षा शीघ्रता से सीख जाते हैं तथा बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। **गौग (1953)** ने अपने अध्ययन में पाया कि हाईस्कूल के वरिष्ठ छात्रों के तीन प्रतिदर्शो में सहसम्बन्ध का विस्तार .62 से .80 था। **जे.पी. मैक क्वैरी ने (1954)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्र अच्छी पारिवारिक स्थिति से आते हैं कम उपलब्धि वाले छात्रों की हाईस्कूल की परीक्षा की उपलब्धि अच्छी नहीं होती है तथा वे व्यवहारिक विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान को अध्ययन के विषय के रूप में चुनते हैं। **नासन (1958)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि का परीक्षा श्रेणियों के पूर्व सूचक के रूप में उपयोग करने पर छात्रों के संदर्भ में .34 तथा छात्राओं के संदर्भ में .39 सहसम्बंन्ध था। **जैकोब (1959)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था। **कार्टर (1961)** ने अपने अध्ययन में तीनों प्रतिदर्शो में प्रायः .60 सहसम्बन्ध

पाया। **टायलर (1965)** ने अपने अध्ययन में पाया कि स्कूल के छात्रों के बुद्धिलब्धांक तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .70 सहसम्बन्ध था। **हार्पर (1967)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि एवं शैक्षिक सफलता में सार्थक सहसम्बन्ध .315 से .600 के मध्य था। **बी.आर. मैक कैन्डिल्स, ए. रॉबर्टस तथा स्टर्नस (1972)** ने अपने अध्ययन में पाया कि- बुद्धि तथा पठन, भाषा, गणित, सामाजिक विषय एवं विज्ञान की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .56 सहसम्बन्ध था। **गिलॉसप (1979)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक रेखीय सहसम्बन्ध था। बुद्धि तथा गणित की योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक .805 था एवं बुद्धि तथा पठन की योग्यता के मध्य सहसम्बन्ध 0.815 था। **क्रेनों, मैसी एण्ड राइस (1979)** ने मानसिक योग्यता परीक्षण के प्राप्तांकों तथा कक्षा–कक्ष की कार्यक्षमता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक .474 से .505 था। **एम. मकसूद (1980)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बौद्धिक योग्यता तथा शैक्षिक उपलबिध के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध तथा बर्हिमुखता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक नकारात्मक सहसम्बन्ध था। **रॉबर्ज और फ्लैक्जर (1981)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पठन तथा गणित के प्राप्तांक बुद्धि के प्राप्तांकों से सम्बन्धित थे एवं तीनों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .58, .61 तथा .61 थे।

यूल, लैन्स डाउन तथा अरवेनोविस्त्ज (1982) ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि के प्राप्तांकों तथा उपलब्धि प्राप्तांकों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था। पठन योग्यता के विभिन्न स्तरों तथा गणित के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .457 से .911 था।

(ख) उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्धित अध्ययनों का सारांश :

पी. मेहता (1967) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालय की स्थिति तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का निष्पत्ति प्रेरणा से महत्वपूर्ण सम्बन्ध था एवं बुद्धि का निष्पत्ति प्रेरणा से धनात्मक सम्बन्ध था। **पी. मेहता (1967)** ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण व शहरी लड़कों की उपलब्धि प्रेरणा के स्तर में कोई अन्तर नहीं था, उपलब्धि सम्पूर्ण विद्यालय की वार्षिक परीक्षा की उपलब्धि से सम्बन्धित थी तथा

शैक्षिक उपलब्धि आवश्यकता उपलब्धि से नकारात्मक रूप से सम्बन्धित थी। **प्रयाग मेहता (1969)** ने अपने अध्ययन में पाया कि निष्पत्ति प्रेरणा तथा समायोजन में समानान्तर सम्बन्ध था। **पी.पी. गोकुलनाथन (1972)** ने अपने अध्ययन में पाया कि जनजाति के बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा नॉन ट्राइवल बालकों की निष्पत्ति प्रेरणा से उच्च थी तथा छात्रों की निष्पत्ति प्रेरणा छात्राओं से उच्च थी। **आर.एस. ठाकुर (1972)** ने अपने अध्ययन में पाया कि सभी शाखाओं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं था शैक्षिक उपलब्धि व बुद्धि सार्थक रूप से सहसम्बन्धित थी तथा उपलब्धि प्रेरणा एवं वैज्ञानिक अभिक्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था।

डी.बी. देसाई (1972) ने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सम्बन्ध होता है। **टी.सी. ग्यानेन (1973)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्राध्यापकों की निष्पत्ति प्रेरणा निम्न उपलब्धि वाले छात्राध्यापकों की निष्पत्ति प्रेरणा से उच्च थी उच्च तथा निम्न उपलब्धि वाली छात्राध्यापिकाओं की निष्पत्ति प्रेरणा समान थी। **डी.बी. देसाई (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि व निष्पत्ति प्रेरणा तथा कक्षा उपलब्धि व निष्पत्ति प्रेरणा में धनात्मक सहसम्बन्ध था। **बी.एन. राय (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि आवश्यकता उपलब्धि व शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध था।

सी.सी. पाठक (1974) ने अपने अध्ययन में पाया कि– उच्च स्तर के स्कूलों में पढ़ने वाले बालक विभिन्न स्तरों के स्कूलों में पढ़ने वाले बालकों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवश्यकता उपलब्धि रखते है। बालक–बालिकाओं की निष्पत्ति प्रेरणा में अन्तर नहीं था। उपलब्धि प्रेरणा के प्राप्तांक शैक्षिक उपलब्धि व बुद्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित थे। पी. **प्रकाश** (1975) ने अपने अध्ययन में पाया कि– निम्न उपलब्धि वाले सार्थक रूप से उच्च उपलब्धि वालों की अपेक्षा निम्न निष्पत्ति प्रेरणा रखते थे निष्पत्ति प्रेरणा का बुद्धि एवं उपलब्धि के विभिन्न स्तरों से उच्च सम्बन्ध था। **बी.बी. सिद्दीकी (1979)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में पारस्परिक सहसम्बन्ध था। व्यक्तित्व का उपलब्धि प्रेरणा से धनात्मक सम्बन्ध था जब बुद्धि को स्थिर रखा गया तो पारिवारिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक सहसम्बन्ध

था। **डी. शिवप्पा (1980)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, चिन्ता, शैक्षिक आकांक्षाऐं, तथा अध्ययन की आदतों का शैक्षिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने में योगदान रहता है, जिसमें बुद्धि का अत्यधिक योगदान रहता है तथा उपलब्धि प्रेरणा का उससे कम योगदान रहता है। **एन.एस. अरूणा (1981)** ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि छात्राओं से कम थीं एवं सामाजिक आर्थिक स्तर उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था। **एस. सक्सैना (1981)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मूल्य, सृजनात्मकता, चिन्ता, आकांक्षा स्तर, आवश्यकता प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सम्बन्ध था लेकिन छात्र एवं छात्राओं की आवश्यकता प्रेरणा में कोई अन्तर नहीं था। **प्रेमलता शर्मा (1981)** ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न शैक्षिक अभिप्रेरणा, अध्ययन की योजना समायोजन तथा संवेगात्मक असुरक्षा निम्न उपलब्धि में योगदान देती है। **पी. गान्धी (1982)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा के उच्च, सामान्य और निम्न स्तर के प्राप्तांकों का प्रभाव लड़के और लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक रूप से पड़ता है लड़के और लड़कियों की शक्ति प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था तथा उपलब्धि प्रेरणा के संदर्भ में लिंग भेद नहीं था। **आर. शनमुग सुन्दरम् (1983)** ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें, बुद्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव था समायोजन का नकारात्मक प्रभाव था तथा इन सभी चरों में लड़कियां लड़कों से आगे थीं। **स्वीन (1984)** ने अपने अध्ययन में पाया उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले छात्रों की उपलब्धि निम्न उपलब्धि प्रेरणा वाले छात्रों से अच्छी ही थी वह विद्यार्थी जिनकी उपलब्धि प्रेरणा तथा आत्मप्रत्यय उच्च स्तर का होता है। उनकी उपलब्धि उन विद्यार्थियों से अच्छी थी जिनकी उपलब्धि प्रेरणा तथा आत्म प्रत्यय निम्न स्तर का था।

लॉवेल (1952), मॉर्गन (1952), रिसीयू टी (1954) तथा **जौन्सटन** ने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था।

ब्राउन तथा हॉल्ट्जमैनने अपने अध्ययन में पाया कि- व्यक्तित्व तथा दूसरे मनोवैज्ञानिक चरों की अपेक्षा अध्ययन की आदतें, अभिव्रत्यात्मक तथा अभिप्रेरणात्मक

कारक, शैक्षिक कार्यक्षमता को अधिक प्रभावित करते हैं। **फ्रेन्च एण्ड थॉमस (1958)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्र निम्न उपलब्धि वालों छात्रों में किसी समस्या को शीघ्रता से हल कर लेते है। **डी. चार्मस तथा जॉर्डन (1959)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। **पायर्स और बीमैन (1960)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। **स्मिथ (1960)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा, लगनशीलता एवं कार्यक्षमता के मध्य बहुत कम सम्बन्ध था और सांख्यकीय रूप से सार्थक नहीं था। **मिथइल (1961)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा तथा कार्यक्षमता के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। **करन (1963)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं था। **एटकिन्सन तथा रिटमैन (1965)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से सम्बन्धित थी। **कॉफल हॉर्न और सटन (1966) कलिंगर (1966)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध मध्यम दर्जे का था। लेकिन सार्थक नहीं था। **ब्राउन (1974)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षणों के मध्य सहसम्बन्ध कम था तथा कुछ परिस्थितियों में शून्य था। **कोल (1974)** में अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा वर्तनी को छोड़कर शैक्षिक उपलब्धि के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित थी। **शुल्ज (1976)**, **पारीख (1978)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– उपलब्धि प्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि से अधिक सम्बन्धित थी।

(ग) समायोजन से सम्बन्धित अध्ययनों का सारांश :

श्रीवास्तव ए.के. (1957) ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्न उपलब्धि निम्न सामाजिक व संवेगात्मक समायोजन से सम्बन्धित थी। **ई.आर. जॉर्ज (1966)** ने अपने अध्ययन में पाया कि लड़के तथा लड़कियां कक्षा में प्रोन्नति से समान रूप से प्रभावित होते हैं, उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालक सुसमायोजित थे तथा बुद्धि के प्राप्तांक विद्यालय और स्वास्थ्य समायोजन के साथ सार्थक रूप से सम्बन्धित थे। बर्हिमुखी व्यक्ति कुछ क्षेत्रों में ही समायोजित थे तथा उनका उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं था।

आर. शर्मा (1967) ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व समायोजन तथा भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित की सम्प्राप्ति के मध्य .25, .05 तथा .29 सहसम्बन्ध था। **वी.के. मित्तल** (1969) ने निष्पत्ति प्रेरणा तथा समायोजन में समानान्तर सम्बन्ध पाया। **शिखर चन्द्र जैन** (1969) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालय एवं परिवार में कुसमायोजन का विद्यार्थियों की निम्न सम्प्राप्ति के साथ सीधा सम्बन्ध था। **शर्मा** (1971) ने अध्ययन में पाया कि कुसमायोजन का प्रभाव उच्च सम्प्राप्ति पर पड़ता है। **शंकर लाल शर्मा** (1968) ने अपने अध्ययन में पाया कि उत्तरदायित्व की भावना का धनात्मक और सार्थक सहसम्बन्ध शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं सामाजिक स्वीकृति के साथ था। समायोजन के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति का सहसम्बन्ध ऋणात्मक था। **जैन** (1969) ने अपने अध्ययन में पाया कि– लोकप्रिय एवं अस्वीकृत छात्रों के गृह, स्वास्थ्य, संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। अध्यापकों एवं कक्षा के साथियों से उनके सम्बन्धों, खेलकूद, भ्रमण, कैम्प तथा शैक्षिक कार्यों में सार्थक अन्तर था। **रेखा** (1974) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रावास में रहने वाली छात्राओं का गृह, समाज तथा संवेगात्मक समायोजन घर पर रहने वाली छात्राओं का गृह, समाज तथा संवेगात्मक समायोजन घर पर रहने वाली छात्राओं से अच्छा था तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी थी। **डी.एन. श्रीवास्तव** (1975) ने पाया कि कला तथा विज्ञान के इण्टरमीडिएट तथा स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था। **रेडी. आई. बी. आर.** (1978) ने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक समायोजन सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित था, मानसिक योग्यता से शैक्षिक उपलब्धि कम सम्बन्धित थे। अधिगम, शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावक, शिक्षक साथियों की अभिवृत्ति तथा शैक्षिक समायोजन शैक्षिक निष्पत्ति से सार्थक रूप से सम्बन्धित थे। **आर.एन. सिह** (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व व्यक्तिगत समायोजन के साथ सार्थक व धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा खिलाड़ी व न खेलने वाले छात्रों के स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक व विद्यालयी समयोजन के साथ सहसम्बन्ध था। **बी. एन. सिंह** (1979) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च सम्प्राप्ति वाले छात्रों का सामाजिक, विद्यालयी तथा संवेगात्मक समायोजन अच्छा था किन्तु उनका स्वास्थ्य

समायोजन निम्न स्तर का था। **बी.बी. पाण्डेय (1979)** ने अध्ययन के निष्कर्ष थे कि ग्रामीण छात्रों ने संवेगात्मक, स्वाथ्य तथा शैक्षिक समायोजन के क्षेत्र में अधिक अंक प्राप्त किए किन्तु शहरी छात्र इन तीनों क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते थे एवं समायोजन आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध था। **शशिधर (1981)** ने अपने अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध पाया। **गायत्री (1981)** ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तरीय संवेगात्मक समायोजन था। **आर.एन. शर्मा (1982)** ने अपने अध्ययन में पाया कि लड़के तथा लड़कियों के समायोजन के अंकों में सार्थक अन्तर नहीं था। पिछड़ी लड़कियों का समायोजन उच्च स्तरीय था। चार द्विस्तरीय सहसम्बन्धों में से केवल दो सहसम्बन्ध सार्थक थे। **बी.एम. राजपूत (1985)** ने विज्ञान, गणित, अंकगणित तथा सामाजिक विषय की शैक्षिक उपलब्धि से पिता का व्यवसाय सम्बन्धित था। अश्रितता सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित नहीं थी एवं शैक्षिक समायोजन सार्थक रूप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित था।

बी.एन. सिंह (1986) ने अपने अध्ययन में पाया कि– गणित की उपलब्धि सार्थक रूप से तथा धनात्मक रूप से बुद्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा अध्ययन की अभिवृत्ति से सम्बन्धित थी। गणित की उपलब्धि वैज्ञानिक रूचि, यान्त्रिक रूचि, कृषि में रूचि, समाज सेवा में रूचि, कार्यालय के कार्यो मे रूचि, पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्ध, संवेगात्मक अस्थिरता, समायोजन, अध्ययन की आदतों से सम्बन्धित नहीं थे। **एस.ए. महरोत्रा (1986)** ने अपने अध्ययन में पाया कि– लड़के और लड़कियों की चिन्ता और शैक्षिक उपलब्धि में नकारात्मक, सम्बन्ध था बुद्धि, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध था। **रीता कपूर (1987)** ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले लड़के और लड़कियों की बुद्धि का स्तर सामान्य तथा निम्न उपलब्धि वाले लड़के और लड़कियों की अपेक्षा उच्च था। उच्च उपलब्धि वाले छात्रों का गृह, समाज, स्वास्थ्य, संवेगात्मक तथा शैक्षिक समायोजन अच्छा था तथा सामान्य तथा निम्न समूह वाले छात्रों के समायोजन के अंकों की अपेक्षा उच्च समूह वाले छात्रों के समायोजन के अंक उच्च थे।

हॉलिंग वर्थ (1926) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बालकों के समायोजन की समस्या प्राथमिक रूप से अपरिपक्वता के कारण होती है 125 से 155 बुद्धिलब्धि वाले बालक सामाजिक एवं व्यक्तिगत समायोजन में सामान्य व्यक्तियों से श्रेष्ठ थे। **लेकॉक (1933)** ने पाया कि– बाद वाले समूह ने अधिक कुसमायोजन प्रदर्शित किया। **विटी** (1940) ने अपने अध्ययन में पाया कि– 10 प्रतिशत प्रतिभाशाली बालक असमायोजित थे जिनमें चिन्तित, पलायनवादी, असुरक्षित, उदासीन एवं सामाजिक रूप से अनुपयुक्त थे। **मुसलमान** (1942) के अध्ययन के निष्कर्ष थे कि हाईस्कूल के देदीप्यमान छात्रों के समूह में अच्छा समायोजन था श्रेष्ठ बालक सामाजिक तथा शारीरिक गतिविधियों में अधिक श्रेष्ठ नहीं थे। वे अपने अध्ययन के लिए अधिक प्रयत्नशील थे तथा अधिक समय देते थे। **मैकर्गी** (1942) ने अपने अध्ययन में पाया कि बौद्धिक रूप से न्यून बालकों की अपेक्षा श्रेष्ठ बालकों के पास बाँछनीय व्यक्तित्व को विकसित करने के अधिक अवसर थे। **डब्ल्यू.डी. लेविस** (1947) देदीप्यमान बालक संवेगात्मक और समायोजन की दृष्टि से श्रेष्ठ थे। **लेविस टरमन तथा जोर्डन** (1947) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभाशाली बालक आत्म प्रशंसा कम करते थे उनकी सामाजिक अभिवृत्तियों और चरित्र की प्राथमिकताऐं उच्च थी तथा एक विशेष रूप से 9 वर्ष के प्रतिभाशाली छात्र के प्राप्तांक उतने ही उच्च थे जितने कि 12 अथवा 13 वर्ष के औसत छात्र के प्राप्तांक। **वैल्स** (1949) ने अपने अध्ययन में पाया कि किसी भाषा के परीक्षण में अमूर्त बुद्धि पर प्राप्त उच्च प्राप्तांक सामाजिक पर्यावरण के साथ सफल समायोजन से सम्बद्ध नहीं थे। **बारबरा, डौथी, जौन्स लेविस तथा टरमन** के निष्कर्ष थे, असाधारण रूप से उच्च बुद्धिलब्धि वाले बालकों की सामाजिक समस्याऐं तीव्र थी। शारीरिक विकास 10 प्रतिशत तथा सामाजिक विकास 20 प्रतिशत अथवा 30 प्रतिशत से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता। 180 बुद्धिलब्धि के बालकों की सर्वाधिक समस्या सामाजिक समायोजन की थी। **नीविल** (1951) ने अपने अध्ययन में पाया कि–बुद्धिलब्धि और संवेगात्मक कठिनाई अथवा समायोजन में कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है। ऊँची बुद्धिलब्धि सामान्यतः अच्छा समायोजन प्राप्त करने के लिए लाभप्रद थी तथा प्रतिभाशाली बालक भी संवेगात्मक और सामाजिक समायोजन की कठिनाइयों से मुक्त नहीं थे।

******

REFERENCES

(1) C.V. Good, A.S. Barr and D.E. Scates- "The Competent physician must keep abreast of the latest discoveries in the field of medicine- obiously the careful student of education, the research worker and investigator- should become familiar with the location and use of sources of educational information."

C.V. Good, A.S. Barr and D.E. Scates, 'Methodology of Educational Research, Appleton century company. Inc, New York, 1938, p. 104-105.

(2) J.W. Best- Practically all human knowledge can be found in books and libraries. Unlike other animals that must start a new with each generation, man builds upon the accumulated and recorded knowledge of the past. His constant adding to the vast store of knwoledge makes possible progress in all areas of human endeavour? John. W. Best- 'Research in Education', Prentice Hall Inc. Englewood cliffs, N.J. (1959), p.31.

(3) के. माथुर- पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) आगरा यूनिवर्सिटी आगरा (1963) एम.बी. बुच फर्स्ट सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(4) एस.एल. चोपड़ा पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा यूनिवर्सिटी 1965, पूर्ववत्।

(5) डी.जी. राव- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) देहली यूनिवर्सिटी 1964, पूर्ववत्।

(6) एस. जैन- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा यूनिवर्सिटी 1965, पूर्ववत्।

(7) एम. विधु- पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) पटना यूनिवर्सिटी 1968, पूर्ववत्।

(8) आर.के. वसन्त- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) केरल यूनिवर्सिटी 1969, पूर्ववत्।

(9) वी. झा- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) पटना यूनिवर्सिटी एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे आफ ऐजूकेशनल रिसर्च 1970।

(10) पी.सी. गुप्ता- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) बॉम्बे यूनिवर्सिटी- 1973, पूर्ववत्।

(11) जी.के. मखीजा- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) पटना यूनिवर्सिटी- 1973, पूर्ववत्।

(12) एस. अग्रवाल- ए स्टडी ऑफ मैडीकल एप्टीट्यूड एण्ड अदर साइक्लोजीकल बैरीऐबिल्स ऐसोसिऐटिड बिद प्रोफीसिऐन्सी इन मैडीकल एक्जामिनेशन ऑफ यू.पी. पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) आगरा यूनिवर्सिटी 1973

(13) जी.एस. धमी– इन्टेलीजेन्स, इमोशनल मेच्योरिटी, एण्ड सोशियो इकोनॉमिक स्टेट्स ऐज फैक्टर्स इन्डीकेटिव ऑफ सक्सेज इन स्कोलेस्टिक अचीवमेन्ट, पी.एच.डी. (एजूकेशन) पन्तनगर यूनिवर्सिटी 1974।

(14) बी.सी. सीथा– पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) बनारस यूनिवर्सिटी– 1975 – एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(15) प्रकाश चन्द– "ए स्टडी ऑफ द प्रॉब्लम ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स इन द बनारस ऐजूकेशनल रीजन ऑफ यू.पी. एण्ड देअर रिलेटिव इफैक्ट ऑन अचीवमेन्ट" पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) गोरखपुर यूनिवर्सिटी 1975।

(16) ए.वी. मेहता पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर– 1975 –एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(17) पी.एल. मिश्रा– पी.एच.डी. ऐजूकेशन कानपुर विश्वविद्यालय, 1976, पूर्ववत्।

(18) रवीन्द्र– द इफैक्ट्स ऑफ स्टेट ट्रेट एक्जाइटी, साइक्लॉजीकल स्ट्रेस एण्ड इन्टैलीजेन्स ऑन लर्निंग एण्ड एकेडेमिक अचीवमेन्ट पी.एच.डी. साइक्लौजी, पन्तनगर यूनिवर्सिटी 1977।

(19) ओ.वी. गुप्ता– इन्टैलीजेन्स, क्रियेटिविटी, इन्ट्रेस्ट एण्ड फ्रस्ट्रेशन ऑफ फक्शन्स ऑफ क्लास अचीवमेन्ट सैक्स एण्ड ऐज पी.एच.डी. (साइक्लौजी) आगरा यूनिवर्सिटी 1977।

(20) एन.सी.पी.– ए स्टडी ऑफ इन्टेलीजेन्स एण्ड पर्सनल्टी फैक्टर्स इन रिलेशन टू ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट्स, पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा यूनिवर्सिटी 1978।

(21) एस.टी.वी.जी. आचार्यालू ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप अमंग क्रियेटिव थिंकिंग, इन्टैलीजेन्स एण्ड स्कूल अचीवमेन्ट पी.एच.डी. साइक्लौजी उत्कल यूनिवर्सिटी 1978।

(22) जी.एस. भागीरथ– कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऐज परसीब्ड बाई द टीचर्स एण्ड स्टूडेन्ट्स ऑफ हाईस्कूल, पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) पन्तनगर यूनिवर्सिटी 1978।

(23) एस.पी. मिश्रा- ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ हाई एण्ड लो अचीवर्स इन साइन्स, कॉमर्स एण्ड आर्ट्स ऑन क्रियेटिविटी इन्टैलीजेन्स एंक्जाइटी- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन), राजस्थान यूनिवर्सिटी 1978।

(24) एन. श्रीवास्तव- इन्टैलीजेन्स इन्ट्रेस्ट एडजस्टमेन्ट एण्ड फैमिली स्टेट्स, पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) गोरखपुर यूनिवर्सिटी 1980।

(25) पी.ए. मेनन- ए स्टडी ऑफ क्रियेटिविटी इन इंग्लिश लैंग्वेज ऑफ स्टूडेन्ट्स ऑफ द हायर सैकेन्ड्री लेविल इन सम इंग्लिश मीडियम स्कूल्स इन देहली इन रिलेशन टू देअर इन्टेलीजैन्स अचीवमैन्ट एण्ड लैंग्वेज एविलिटी ऑफ चिल्ड्रिन पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) देहली यूनिवर्सिटी 1980।

(26) ए.डी. रंगारी- पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) पूना यूनिवर्सिटी 1981।

(27) एस.एल. चोपड़ा- ए स्टडी ऑफ सम नौन इन्टलैक्चुअल कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट- डी.लिट्. (ऐजूकेशन) लखनऊ यूनिवर्सिटी 1982।

(28) ए.एस. देशपाण्डे- ए स्टडी ऑफ डिटरमेन्ट्स ऑफ अचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स एट द एस.एस.सी. एक्जामिनेशन इन द पुणे डिवीजन ऑफ महाराष्ट्र स्टेट, पी.एच. डी. ऐजूकेशन पूना यूनिविर्सटी 1984।

(29) मिथिलेश दीक्षित- ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ इन्टैलीजेन्स एण्ड एकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ एडोलसेन्ट बॉय्ज एण्ड गर्ल्स स्टडींग इन क्लासेज 9 एण्ड 10 पी.एच.डी. ऐजूकेशन कानपुर यूनिवर्सिटी 1985।

(30) ए.एस. राजपूत- स्टडी ऑफ ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स इन मैथमैटिक्स इन रिलेशन टू देअर इन्टैलीजेन्स अचीवमेन्ट मोटिबेशन एण्ड सोशियो इकोनोमिक स्टेट्स पी.एच.डी. ऐजूकेशन पन्तनगर यूनिवर्सिटी 1985।

(31) आर. मित्रा- सम डिटरमेन्ट्स ऑफ एकेडेमिक परफौरमेन्स इन प्री- एडोलोसेन्ट चिल्ड्रन- पी.एच.डी. ऐजूकेशन कलकत्ता यूनिवर्सिटी 1985।

(32) अवधेश कुमार- ए स्टडी ऑफ ईगो इन्वोल्वमेन्ट, लेविल ऑफ एस्पाइरेशन एण्ड एसोसिएटिड फैक्टर्स इन रिलेशन टू अचीवमेन्ट ऑफ ग्रेजुएशन लेविल। पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) गोरखपुर यूनिवर्सिटी 1986।

(33) ए.एम. जोर्डन (1923)- कोरिलेशन ऑफ फोर इन्टैलीजेन्स टैस्ट्स बिद ग्रेड्स, जरनल ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, 13, 419 से 429।

(34) एल.एल. थर्सटन (1925) साइक्लॉजीकल टैस्ट्स फॉर कॉलेज फ्रेशमेन ऐजूकेशनल रिसर्च, 4, 69-83, 282-294।

(35) एच.ए. टूयूस (1926) द स्टेट्स ऑफ यूनिवर्सिटी इन्टैलीजेन्स टैस्ट्स, जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, 17, 23-36, 110-124।

(36) डब्ल्यू डी. कुकिंग एण्ड टी.सी. होली (1927) रिलेशन ऑफ इन्टैलीजेन्स स्कोर्स ऑफ हाईस्कूल एण्ड यूनिवर्सिटी मार्क्स, ऐजूकेशनल रिसर्च बुलेटिन, 6, 383-384।

(37) एल.डी. हार्टसन तथा ए.जे. स्प्रा- द बैल्यू ऑफ इन्टैलीजेन्स कोशेन्ट्स ऑब्टेन्ड इन सैकेन्ड्री स्कूल्स फॉर प्रेडिक्टिंग कॉलेज स्कॉलरशिप ऐजूकेशनल साक्लॉजीकल मेजरमेन्ट, (1) 387-398, 1941।

(38) आरोन द प्रेडिक्शन वैल्यू ऑफ क्यूमिलेटिव टैस्ट रिजल्ट्स पी.एच.डी. थीसिस, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी- 1946, पेज नं. 22।

(39) एल.जे. क्रॉनबैंक- असेन्सियल्स ऑफ साइक्लॉजीकल टेस्टिंग, हारपर एण्ड ब्रदर्स न्यूयार्क, 1949।

(40) एम.एम. ट्रावर्स- सिग्नीफिकेन्ट रिसर्चेज ऑन द प्रेडिक्शन ऑफ एकेडेमिक सक्सेज इन डब्ल्यू टी डोनाड एण्ड एसोसियेट्स ऐडीटर्स द मेजरमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स एडजस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेन्ट यूनिवर्सिटी ऑफ मिशीगन प्रेस एन आरबर।

(41) डी.ई. सुपर- ऐप्रेजिंग बोकेशनल फिटनेस, न्यूयॉर्क, हारपर एण्ड ब्रदर्स पेज नं. 727।

(42) डब्ल्यू, ग्रिफ्थ्स- बिहेवियर डिफीकल्टीज ऑफ चिल्ड्रिन ऐज परसीब्ड एण्ड जज्ड बाई, पेरेन्ट्स, टीचर्स एण्ड चिल्ड्रिन दैम सैल्वस मिनीआपोलिस 1952।

(43) एच. गौग- बाट डिटरमाइन्स द ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, जरनल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च वौल्यूम- 46 पेज नं. 329-331, 1953।

(44) जे.पी. मैकक्वैरी- सम डिफरेन्सेज बिटबीन अन्डर एण्ड ओवर अचीवर्स इन कॉलेज ऐजूकेशन एडमि. सब, (70), 1954।

(45) एल.जे. नासन– पैटर्नस ऑफ सरकम स्टान्सेज रिलेटिड ऐजूकेशनल अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स ऑफ सुपीरियर एबिलिटी एक्सेप्सनल चिल्ड्रिन 24, 3, 88–101।

(46) जे.एन. जैकौब– एप्टीट्यूड एण्ड अचीवमेन्ट मेजर्स इन प्रेडिक्टिंग हाईस्कूल ऐकेडेमिक सक्सेज, पर्सनल गाइडेन्स जरनल वौल्यूम 37 पेज नं. 335–341 (1959)।

(47) एच.डी. कार्टर– ओवर अचीवर एण्ड अन्डर अचीवर इन जूनियर हाईस्कूल कैलिफ ऐजूकेशन रिसर्च, 12, 51–56 (1961)।

(48) एच.आर. टायलर– द स्कौलेस्टिक सिग्नीफिकेन्स ऑफ सरटेन पर्सनेल्टी ट्रेट्स (एब्सट्रेक्ट) साइक्लौजीकल बुलेटिन 30, 60 (1965)।

(49) ई.ए. हारपर– नाइनटी मेकिंग टैन, ए स्टडी ऑफ एक्जामिनेशन्स इन्डियन ऐजूकेशनल, रिब्यू, वौल्यूम 2 (1) 26–41 (1967)।

(50) बी.आर. मैक कैन्डल्स, ए रौबर्टस एण्ड टी स्टर्नस टीचर्स मार्क्स, अचीवमेन्ट टेस्ट स्कोर्स एण्ड एप्टीट्यूड रिलेशन्स विद रैस्पैक्ट टू सोशल क्लास, रेन्ज एड सैक्स जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, 63, 153–159 (1972)।

(51) जे.ए. गिलौसप, आर. एलीपयार्ड एण्ड सी रौबर्टस अचीवमेन्ट रिलेटिड टू ए मेजर ऑफ जनरल इन्टैलीजेन्स ब्रिटिश जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लौजी, 49, 249–257 (1979)।

(52) डब्ल्यू, डी क्रेनो, एस.आर. मैसी एण्ड डब्ल्यू राइस, इवेल्यूऐशन ऑफ द प्रेडिक्टिव वैलिटिडी ऑफ टैस्ट्स ऑफ मेन्टल एविलिटी जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लौजी वौल्यूम 71, 2, 233–241 (1979)।

(53) एम. मकसूद– एक्स्ट्रावर्जन, न्यूरोटिसिज्म, इन्टेलीजेन्स एण्ड ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट इन नार्थन नाइजीरिया, ब्रिटिश जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, 50, 71–73 (1980)।

(54) जे.जे. रौवर्ज एण्ड बी.के. फ्लैक्जर– री–एक्जामिनेशन ऑफ कोवरियेशन ऑफ फील्ड इन्डिपैन्डैन्स, इन्टैलीजेन्स एण्ड अचीवमेन्ट, ब्रिटिश जनरल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी 51, 235–236।

(55) डब्ल्यू, यूल, आर. लैन्स डाउन एण्ड एम.ए. अरबैनोविस्ज प्रेडिक्टिंग ऐजूकेशनल अटेनमेन्ट फ्रोम डब्ल्यू, आई.एस.सी. आर. इन ए प्राइमरी स्कूल सैम्पिल, ब्रिटिश जरनल ऑफ क्लीनिकल साइक्लॉजी, 21, 43-46।

(56) पी. कुमार मेहता- ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशनल फैकल्टी ऑफ ऐजूकेशनल एम.एस. यूनिवर्सिटी बड़ौदा 1967।

(57) पी. मेहता- 'अचीवमेन्ट मोटिव इन हाईस्कूल बॉयज्' एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 1969।

(58) प्रयाग मेहता, शिक्षा में अनुसन्धान का सर्वेक्षण एम.बी. बुच, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा 1969।

(59) वी.के. मित्तल- एडजस्टमेन्ट एण्ड अटेनमेन्ट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्टस 1969 पूर्ववत्।

(60) पी.पी. गोकुल नाथन ए स्टडी ऑफ एचीवमेन्ट रिलेटिड मोटिवेशन अचीवमेन्ट एण्ड एक्जाइटी एण्ड ऐजूकेशनल अचीवमेन्ट अमंग सैकेन्ड्री स्कूल प्यूपिल्स पी. एच.डी. ऐजूकेशन एम.एस. यूनिवर्सिटी बड़ौदा 1972।

(61) आर.एस. ठाकुर- ए स्टडी ऑफ स्कॉलेस्टिक अचीवमेन्ट ऑफ सैकेन्ड्री स्कूल प्यूपिल्स इन बिहार, डी.लिट्. (ऐजूकेशन) बिहार, यूनिवर्सिटी 1972।

(62) डी.एन. सिन्हा- ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट एण्ड नॉन अचीवमेन्ट फर्स्ट ऐडीशन इलाहाबाद यूनाइटेड पब्लिशर्स 1970।

(63) डी.बी. देसाई- डबलपिंग करिकुलम फॉर अचीवमेन्ट मोटिवेशन डबलपमेन्ट एण्ड स्टडी्ज द इफैक्ट्स देअर ऑफ। एस.पी. यूनिवर्सिटी वल्लम विद्यानगर रिसर्च प्रोजेक्ट 1972।

(64) टी.सी. ग्यानेन- इंडियन साइक्लॉजीकल रिसर्च 1973, वॉल्यूम नं. 10 नम्बर 2 पेज नं. 3-9।

(65) डी.वी. देसाई- अचीवमेन्ट मोटिवेशन इन हाईस्कूल प्यूपिल्स इन केस डिस्ट्रिक्ट- ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन।
- एम.बी. बुच, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा पेज नं. 47-1974।

(66) बी.एन. राय ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ ए फ्यू डिफरेन्शियेटर्स पर्सनेल्टी कोरिलेट्स ऑफ लो एण्ड हाई अचीवर्स- पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा यूनिवर्सिटी 1974।

(67) सी.सी. पाठक– ए स्टडी ऑफ अचीवमेन्ट मोटिवेशन ऐजूकेशनल नॉर्मस एण्ड स्कूल परफॉरमेन्स ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स पी.एच.डी. (ऐजूकेशनल) एस.पी. यूनिवर्सिटी 1974।

(68) पी. प्रकाश– ए रिसर्च जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी वॉल्यूम– 5, नम्बर 2 पेज नं. 81–1974–75।

(69) बी.बी. सिद्दीकी– इफैक्ट्स ऑफ अचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड पर्सनेल्टी ऑफ एकेडेमिक सक्सेज, पी.एच.डी. (साइक्लौजी) गुजरात यूनिवर्सिटी 1979।

(70) डी. शिवप्प्या– फैक्टर्स अफैक्टिंग द ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) कर्नाटक यूनिवर्सिटी 1980।

(71) एन.एस. अरूणा– ए स्टडी ऑफ फैक्टर्स इन्फ्युऐंसिग दि अचीवमेन्ट ऑफ सेविन स्टेन्डर्ड स्टूडेन्ट ब्लौगिंग टू शड्यूल कास्ट एण्ड शड्यूल ट्राइब्स इज मीडियम ऑफ इन्सट्रेक्शन इन कन्नड, पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) मैसूर विश्वविद्यालय पृष्ठ संख्या 658, 1981।

(72) एस. सक्सेना– ए स्टडी ऑफ नीड एचीवमेन्ट इन रिलेशन टू क्रियेटिविटी वैल्यूज, लेविल ऑफ एसप्रेशन ऐक्जाइटी– पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा विश्वविद्यालय आगरा 1981।

(73) प्रेमलता शर्मा– ए स्टडी ऑफ फैक्टर्स रिलेटिड टू ऐकेडिमिक अन्डर अचीवमेन्ट ऑफ गर्ल्स ऑफ सैकेन्ड्री स्कूल्स लोकेटिड इन रूरल एरिया ऑफ हरियाणा– पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) मैसूर यूनिवर्सिटी 1981।

(74) पी. गान्धी– ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट इन रिलेशन टू अचीवमेन्ट मोटिव, ऐफीलिऐशन मोटिव एण्ड पावर मोटिव पी.एच.डी. ऐजूकेशन– बी.एच.यू. 1982

(75) आर. शनमुग सुन्दरम्– एन इनवैस्टीगेशन इन टू फैक्टर्स रिलेटिड टू एकेडेमिक अचीवमेन्ट अमंग अन्डर ग्रेजुएट स्टूडेट्स अन्डर सैमिस्टर सिस्टम, पी.एच.डी. साइक्लॉजी, मद्रास यूनिवर्सिटी 1983।

(76) स्वीन– ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्टस् इन रिलेशन टू द इन्स्ट्रक्शनल डिजाइन, इन्टैलीजेन्स, सेल्फकन्सेप्ट एण्ड नीड अचीवमेन्ट– पी.एच. डी. (ऐजूकेशन) पन्तनगर यूनिवर्सिटी 1984।

(77) ई.एल. लॉविल– द इफैक्ट ऑफ नीड फॉर अचीवमेन्ट ऑफ लर्निंग एण्ड स्पीड ऑफ परफॉरमेन्स, जनरल ऑफ साइक्लौजी 33, 31–40 (1952)।

(78) एच.एच. मॉर्गन– ए साइको मैट्रिक कम्पैरीजन ऑफ अचीविंग एण्ड नौन अचीविंग कॉलेज स्टूडेन्ट्स ऑफ हाई एबिलिटी, जरनल ऑफ कन्सल्टिंग साइक्लॉजी, 16, 292–298 (1952)।

(79) आर.एन. रिसीयूटी एण्ड आर. ए क्लार्क– ए कम्पैरीजन ऑफ नीड अचीवमेन्ट स्टोरीज रिटिन बाई एक्सपरीमेन्टली 'रिलेटिड' एण्ड 'अचीवमेन्ट' ओरियेन्टिड सब्जेक्ट्स इफैक्ट्स औब्टेन्ड बिद न्यू पिक्चर्स एण्ड रिवाइज्ड स्कोरिंग कैटगरीज, प्रिन्सटन न्यूजर्सी ऐजूकेशन, टेस्टिंग सर्विस।

(80) आर.ए. जॉन्सटन– द इफैक्ट्स ऑफ अचीवमेन्ट इमेजरी ऑन मेज लर्निंग परफौरमेन्स, जरनल ऑफ पर्सनेल्टी, 24, 145–152 (1955)।

(81) डब्ल्यू. ब्राउन तथा हाल्ट्जमैन– यूज ऑफ द सर्वे ऑफ स्टडी हैबिट्स एण्ड एटीट्यूड्स फौर काउन्सलिंग स्टूडेन्ट्स, पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जरनल, 35, 214–218।

(82) ई फ्रेन्च एण्ड एफ थॉमस– दि रिलेशन ऑफ अचीवमेन्ट मोटिवेशन टू प्रोब्लम सौल्विंग इफैक्टिबनैस, जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोशल साइक्लौजी, 56, जनवरी 1958।

(83) आर.डी. चार्मस एण्ड टी.ई. जौर्डन– द अचीवमेन्ट मोटिव इज नॉर्मली एण्ड मैन्टली रिटार्डिड चिल्ड्रिन जनरल ऑफ मेन्टल डेफीसिऐन्सी 64, 457–466।

(84) जे.वी. पीयर्स एण्ड पी.एच. बोमेन– मोटिबेशन पैटर्नस ऑफ सुपीरियर हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स– कॉपरेटिव रिसर्च मोनोग्राफ, 2, 33–66 (1960)।

(85) स्मिथ– रिलेशन शिप बिटबीन अचीवमेन्ट रिलेटिड मोटिब्स एण्ड इन्टैलीजेन्स, जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोशल साइक्लौजी, 68, 523–532 (1960)।

(86) डब्ल्यू मिथाइल– डिले ऑफ ग्रेटिफिकेशन, नीड फॉर अचीवमेन्ट एण्ड एक्यूइसेन्स इन एनोदर कल्चर जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोसल साइक्लॉजी, 62, 543–552 (1961)।

(87) ए.जे. करन ''क्यूरोसिटी अचीवमेन्ट एण्ड एबोइडेन्ट मोटिबेशन ऐज डिटरमिनेन्ट्स, ईगोस्टेमिक बिहेबियर, जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोसल साइक्लौजी'', 67, 535, 549 (1963)।

(88) एट किन्सन एण्ड डब्ल्यू रिटमैन- ''परफॉरमैन्स ऐज ए फंक्शन ऑफ मोटिव स्ट्रैन्थ एण्ड एक्सपैक्टैन्सी ऑफ गोल अटेनमेन्ट'', जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोशल साइक्लॉजी, 63 (3) 361-366 (1965)।

(89) डब्ल्यू.एफ. कॉफल हॉर्न, ए.जे. सटन, कलिंगर- ''नीड अचीवमेन्ट एण्ड इट्स रिलेशन टू स्कूल प्रोग्राम एक्जाइटी एण्ड इन्टैलीजेन्स जरनल ऑफ साइक्लॉजी, 17 (1) 44-51 (1966)।

(90) एम. ब्राउन- ''मोटिवेशनल कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडेमिक परफॉरमेन्स साइक्लौजी'' 34, 746 (1974)।

(91) जे.एल. कोल- ''द रिलेशन शिप ऑफ रिलेटिड पर्सनेल्टी बैरीऐबिल्स टू एकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ एबरेज एप्टीट्यूड थर्ड ग्रेडर्स'', जरनल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च बाल्यूम 67 (7) 329-333।

(92) चार्ल्स शुल्ज- ''अचीवमेन्ट मोटिबेशन लोकस ऑफ कन्ट्रोल एण्ड ऐकेडेमिक अचीवमेट बिहेवियर, ''जरनल ऑफ पर्सनेल्टी, 44(1) 38-51, इन्टरनेशनल साइक्लौजीकल एब्स्ट्रेक्ट्स 57(1), (1976)।

(93) पी.एस. पारीख- ''ए स्टडी ऑफ अचीवमेन्ट मोटिबेशन स्कूल परफॉरमेन्स एण्ड ऐजूकेशनल नॉर्मस ऑफ सैकेन्ड्री स्कूल प्यूपिल्स'', इन्डियन ऐजूकेशनल रिव्यू 13 (1-4) 57-62, (1978)।

(94) ए.के. श्रीवास्तव- ''एन इन्वैस्टीगेशन इन टू द फॅक्र्स रिलेटिड टू ऐजूकेशनल अन्डर अचीवमेन्ट'' पी.एच.डी. साइक्लॉजी पटना यूनिवर्सिटी (1957)

(95) ई.आर. जार्ज- ''ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ द एडजस्टमेन्ट एण्ड अचीवमेन्ट ऑफ देन ईयर्स एण्ड इलैविन ईयर्स स्कूल स्टूडेन्ट्स इन केरला स्टेट्स, डिपार्टमेन्ट ऑफ साइक्लौजी, केरल यूनिवर्सिटी- 1966।

(96) आर. शर्मा- ''पी.एच.डी. ऐजूकेशन राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर- 1967 एम.बी. बुच, फर्स्ट सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(97) जी.एस. पारीक– पी.एच.डी. साइक्लौजी अजमेर विश्वविद्यालय अजमेर 1968 पूर्ववत्।

(98) वी.के. मित्तल– "एडजस्टमेन्ट एण्ड अटैचमेन्ट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स" 1969 पूर्ववत्।

(99) शिखर चन्द्र जैन– "पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) आगरा यूनिवर्सिटी एम.वी. बुच, फर्स्ट सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च 1969।

(100) कुसुम शर्मा– "पी.एच.डी. साइक्लौजी आगरा यूनिवर्सिटी 1971 एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(101) शंकर लाल शर्मा– "पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा 1968 एम.बी. बुच फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन"।

(102) एस. जैन– "पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर 1969, पूर्ववत्।

(103) सुश्री रेखा– "पी.एच.डी. (ऐजूकेशन) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1974 एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(104) डी.एन. श्रीवास्तव– "कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ ऐकेडेमिक अटेनमेन्ट ऑफ स्मोकर्स एण्ड नॉन स्मोकर्स विद स्पेशन रेफरेन्स टू देअर एडजस्टमेन्टस एण्ड एक्जाइटी" पी.एच.डी. साइक्लॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी 1975।

(105) आई.वी.आर. रेडी– "ऐकेडेमिक एडजस्टमेन्ट इन रिलेशन टू स्कॉलैस्टिक अचीवमेन्ट ऑफ सैकेन्ड्री स्कूल प्यूपिल्स ए लौंगीट्यूडनल स्टडी" पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) एस.बी. यूनिवर्सिटी 1978।

(106) आर.एन. सिंह– "पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) आगरा विश्वविद्यालय 1978 एम.बी. बुच सैकिन्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन।

(107) बी.एन. सिंह (ऐजूकेशन) राजस्थान विश्वविद्यालय 1971, पूर्ववत्।

(108) बी.बी. पाण्डेय– "ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेन्ट प्रोब्लम्स ऑफ ऐडोलोसेन्ट बॉयज़ ऑफ देवरिया एण्ड देअर एजूकेशनल इम्पली पी.एच.डी. ऐजूकेशन– गोरखपुर यूनिवर्सिटी 1979।

(109) वी. शशिधर– "ए स्टडी ऑफ द रिलेशन शिप बिटबीन फ्यू स्कूल बैरीएबिल्स एण्ड द अचीवमेन्ट ऑफ शड्यूल क्लास स्टूडेन्ट्स स्टडींग इन सैकेन्ड्री स्कूल्स ऑफ कर्नाटक"। पी.एच.डी. (ऐजूेशन) बनारस यूनिवर्सिटी 1981।

(110) गायत्री– पी.एच.डी. (साइक्लॉजी) आगरा विश्वविद्यालय 1981। एम.बी. बुच थर्ड सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च।

(111) आर.एम. शर्मा– "साइक्लॉजीकल डिटरमेन्टस ऑफ बैकबर्डनैस एट द हाईस्कूल स्ट्रेज, पी.एच.डी. (ऐजूकेशनल) जम्मू यूनिवर्सिटी 1982।

(112) बी.एम. राजूपत– "ऐकेडेमिक अचीवमेन्टएज ए फंक्शन सम पर्सनेल्टी बैरीएबिल्स एण्ड सोशियो इकॉनोमिक फैक्टर्स" पी.एच.डी. साइक्लॉजी, गुजरात युनिवर्सिटी 1985।

(113) बी.ए. सिह– "ए स्टडी ऑफ सम पौसीबिल कन्ट्रीब्यूटिंग फैक्टर्स टू हाई एण्ड लो अचीवमेन्ट इन मैथमैटिक्स ऑफ द हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ उड़ीसा", पी. एच.डी. ऐजूकेशन, सम्बलपुर यूनिवर्सिटी 1986।

(114) एस. महरोत्रा– "ए स्टडी ऑफ द रिलेशन शिप बिटबीन इन्टैलीजेन्स, सोशियो इकॉनोमिक स्टेट्स, एक्जाइटी पर्सनेल्टी एडजस्टमेन्ट, एण्ड ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट, ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स" पी.एच.डी. ऐजूकेशन, कानपुर यूनिवर्सिटी 1986।

(115) रीता कपूर– "स्टडी ऑफ फैक्टर्स रैस्पोन्सीबिल फॉर हाई एण्ड लो अचीवमेन्ट एट द जूनियर हाईस्कूल लेविल" पी.एच.डी. ऐजूकेशन, अवध यूनिवर्सिटी 1987।

(116) एल.एस. हॉलिंग वर्थ– "गिफ्टेड चिल्ड्रेन देअर नेचर एण्ड नरचर", न्यूयार्क मैकमिलन कम्पनी, 1926, पेज नं. 374।

(117) एस.आर. लेकॅक– "एडजस्टमैन्ट ऑफ सुपीरियर एण्ड इन्फीरियर स्कूल चिल्ड्रिन", जरनल ऑफ सोशल साइक्लॉजी, 4, 335, 66, 1933।

(118) ए.पी. विटी– "ए जैनेटिक स्टडी ऑफ गिफ्टेड चिल्ड्रन", ईयर बुक ऑफ नेशनल सोसायटी फॉर स्टडीज इन ऐजूकेशन, 3, 11, 1940, 401–408।

(119) जे. डब्ल्यू मुसलमान– "फैक्टर्स ऐसोसियेटिड बिद द अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल, प्यूपिल्स ऑफ सुपीरियर इटेलीजेन्स," जरनल ऑफ एक्सपैरीमेन्टल ऐजूकेशन, सितम्बर 1942।

(120) मैकगी, विलियम एण्ड जेविस डब्ल्यू ग्रेटिन– ''अ कम्पैरीजन ऑफ सरटैन पर्सनेल्टी करेक्टरस्टिक्स ऑफ मैन्टली सुपीरियर एण्ड मैन्टली रिटार्डिड चिल्ड्रिन'' जरनल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, 35, 600–10, अप्रैल 1940।

(121) डब्ल्यू, डी. लेविस– ''समकरैक्टर स्ट्क्सि ऑफ चिल्ड्रिन डेजिगनेटिड ऐज मेन्टली रिटार्डिड ऐज प्रॉब्लम ऑफ ऐज जीनियस बॉय टीचर'', जरनल ऑफ जैनेकि साइक्लॉजी, 70, 29–51, 1947।

(122) लेविस टरमन एण्ड एम.एच. जोर्डन– ''गिफ्टेड चाइल्ड ग्रोजप जैनेटिक स्टडीज ऑफ जीनियस'', बॉल्यूम–4 स्टेन फोर्ड यूनिवर्सिटी 1947।

(123) एफ.एल. वैल्स– ''एडजस्टमैन्ट प्रॉब्लम ऐट अपर ऐक्सट्रीम टैस्ट ऑफ इन्टैलीजेन्स केसिल 1–84, मार्च 1949।

(124) बारबरा, बर्क्स, डौथी, डब्ल्यू जौन्सन, लेविस, एण्ड टरमन– ''जैनेटिक स्टडी ऑफ जीनियस'' बॉल्यूम 3, द प्रोमाइज ऑफ यूथ, स्र्अनफोर्ड यूनिवर्सिटी, कैलिफोर्निया, स्टेनफोर्ड।

(125) ई.एम. नीविल– ''विरलीयेंट चिल्ड्रिन विद स्पेशनल रेफरेन्स टू देअर परटीक्यूलर'', डिफीकल्टीज, पार्ट–1, 1951।

******

अध्याय-तृतीय
शोध प्रक्रिया
तथा विधि

अध्याय-तृतीय
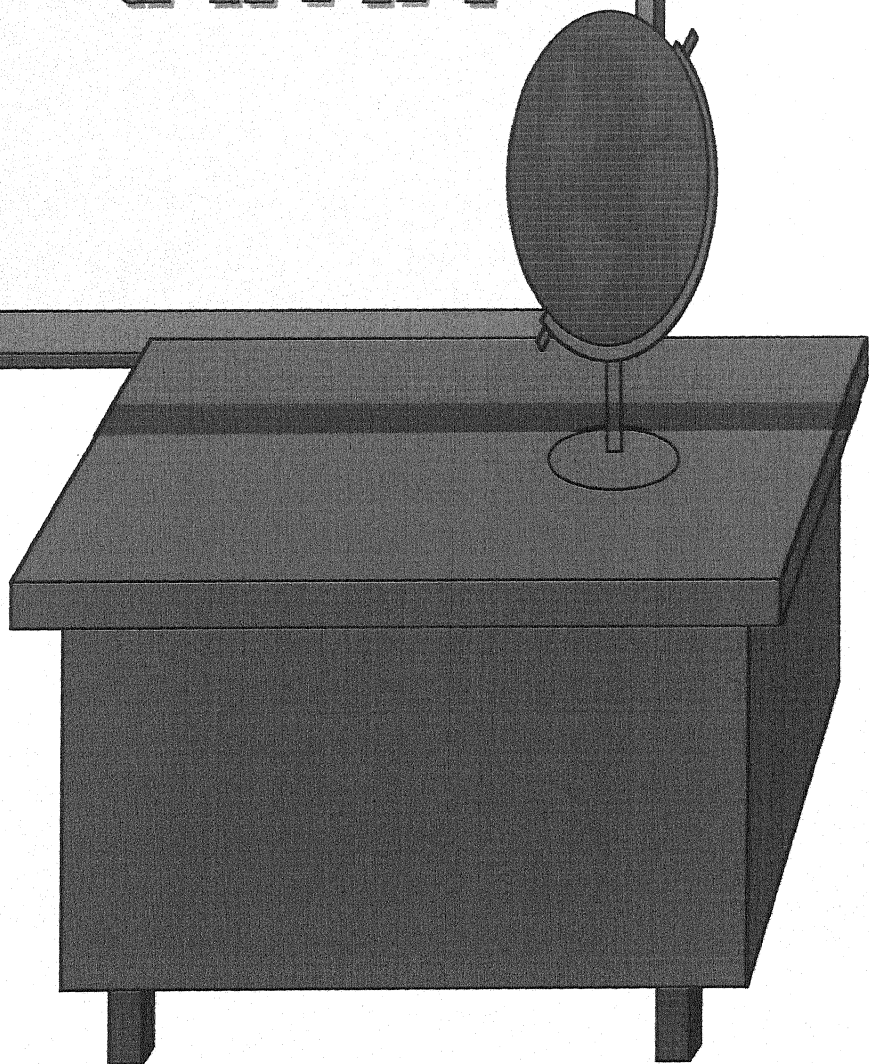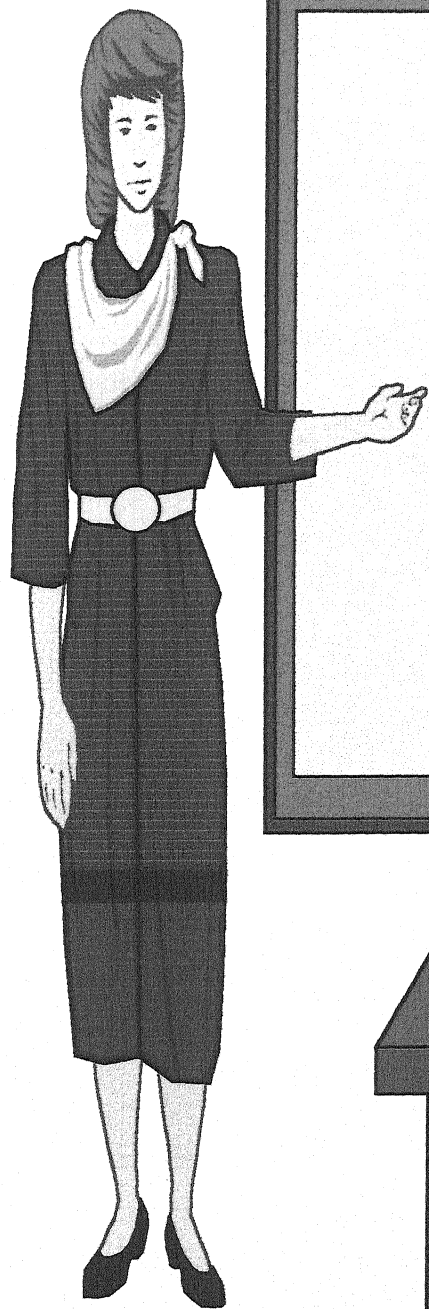
शोध प्रक्रिया तथा विधि

३.१ प्रस्तावना :

प्रत्येक वर्णनात्मक अनुसन्धान में प्रदत्तों का संकलन अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि समस्त शोध संकलित प्रदत्तों पर आधारित होता है। दोषपूर्ण पद्धति से संकलित प्रदत्त दोषपूर्ण समाधान प्रस्तुत करते हैं। अतः सटीक एवं उपयुक्त परिणामों को प्राप्त करने के लिए यथोचित प्रदत्तों का संकलन करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए प्रदत्तों का संकलन करते समय इन समस्त बातों का पूर्णतः निर्वाह किया गया है, क्योंकि प्रस्तुत समस्या न ऐतिहासिक ही थी और न प्रयोगात्मक ही अतः वर्तमान परिस्थितियों में एवं वर्तमान समय में ही इस समस्या का अध्ययन किया गया था। इसका अर्थ यह नहीं है, कि इसी क्षण समस्या का अध्ययन किया गया है, क्योंकि कोई भी अध्ययन किसी क्षण में नहीं किया जा सकता है। इसलिए यहां पर ऐतिहासिक विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता था, क्योंकि ऐतिहासिक विधि का सम्बन्ध भूत से है तथा यह भविष्य को समझाने के लिए भूत का विश्लेषण करती है। प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग भी नहीं किया जा सकता था, क्योंकि इसमें परिस्थिति को नियन्त्रित किया जाता है किन्तु यहां पर इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। अतः प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था, क्योंकि इसमें वर्तमान का अध्ययन किया जाता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान के लिए अनेक लेखकों ने अनेक नामों का प्रयोग किया है, यथा नार्मेटिव सर्वे, डेस्क्रिप्टिव सर्वे, स्टेट्स, ट्रेण्ड सर्वे आदि।

जे.डब्लू बैस्ट[1] ने वर्णनात्मक अनुसंधान का वर्णन करते हुए लिखा है-

''वर्णनात्मक अनुसंधान 'क्या है?' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वासतव में वर्तमान हैं, अभ्यास जो चालू है, विश्वास,

विचारधारा अथवा अभिवृत्तियां जो पाई जा रही हैं, प्रक्रियायें जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नई दिशायें जो विकसित हो रही है, उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।''

इस प्रकार वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा के स्थानीय, राज्य से सम्बन्धित, राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय मुद्दों का अध्ययन करती है। यह विधि तथ्य संकलन तथा सारणीयन में सहायता प्रदान करती है। इसके द्वारा विश्लेषण, तुलना, वर्गीकरण, मापन मूल्यांकन तथा सामान्यीकरण किया जाता है तथा शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

कठिनाईयाँ :

1. प्रस्तुत विधि में प्रदत्तों के विश्लेषण में कठिनाई होती है।
2. वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है।

अध्ययन का प्रारूप

प्रस्तुत शोध का प्रारूप निम्नलिखित प्रकार से तैयार किया गया था-

३.२ न्यादर्श :

1. विद्यालयों का चयन
2. न्यादर्श का प्रकार
3. न्यादर्श का आकार
4. न्यादर्श की विशेषताऐं

३.३ संक्रियात्मक :

1. उपकरणों का चयन
2. उपकरणों का विवरण
3. उपलब्धि प्राप्तांकों का लिखना

३.४ प्रदत्तों का संकलन :

३.२ न्यादर्श का चयन :

१. विद्यालयों का चयन :

किसी भी शोधकार्य में तथ्यों का संकलन करने के लिए समुचित न्यादर्श की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में किसी भी समस्या के सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं और पूर्ण शोध कार्य निरर्थक हो जाता है अतः इसकी उपादेयता के कारण उचित न्यादर्श की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम विद्यालयों का चयन किया गया था। विद्यालयों का चयन करते समय यह ध्यान रखा गया था कि विद्यालय सम्पूर्ण जनपद के विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व करते हों। जिससे न्यादर्श पक्षपात पूर्ण न हों। इसके पश्चात् विद्यालयों के प्रधानाचार्यो से व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित किया गया था, तथा अपना उद्देश्य स्पष्ट किया गया था। उद्देश्य को सुनकर अधिकांश प्रधानाचार्यो ने तथ्य संकलन की अनुमति सहर्ष प्रदान कर दी थी, तथा अत्यधिक सहयोग प्रदान किया था, किन्तु कतिपय प्रधानाचार्यो ने तथ्य संकलन के लिए असहमति प्रदान की थी, अतः उन विद्यालयों का चयन नहीं किया गया था। विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया था।

२. न्यादर्श का प्रकार :

न्यादर्श का चयन करने की अनेक विधियाँ हैं, किन्तु न्यादर्श का चयन करते समय इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है कि न्यादर्श पक्षपात रहित तथा सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए, लेकिन यह विधि पर आधारित होता है कि किस विधि का प्रयोग न्यादर्श के चयन के लिए किया गया है। यदि उचित विधि का प्रयोग किया जाता है तो न्यादर्श पक्षपात रहित तथा सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है और यदि अनुचित विधि का प्रयोग किया जाता है तो न्यादर्श पक्षपातपूर्ण हो जाता है एवं शोध का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता है।

अतः इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर ही वर्तमान अध्ययन में यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया था। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया था

जिससे सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को चयन का अवसर प्राप्त हो सके एवं न्यादर्श पक्षपातहीन बन सके।

३. न्यादर्श का आकार :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए पूर्व में ही निश्चित कर लिया गया था, कि न्यादर्श के रूप में 600 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। अतः जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न इण्टरमीडिएट विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया। जिसमें 300 कला एवं 300 विज्ञान के विद्यार्थी थे। विद्यार्थियों का चयन समान अनुपात में किया गया था। न्यादर्श का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया था। जिसके लिए सर्वप्रथम कक्षा अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित किया गया था तथा उन्हें अपने कार्य का उद्देश्य बताया था। उद्देश्य से अवगत होकर अध्यापकों ने अपना रजिस्टर सहर्ष प्रदान कर दिया था। जिसके द्वारा अकारादि क्रम में छात्र-छात्राओं की एक सूची तैयार की गई थी तथा प्रत्येक तीसरे नम्बर के विद्यार्थी का चयन कर लिया गया था। जिनका वर्णन तालिका संख्या 3.1, 3.2 तथा 3.3 किया गया है।

तालिका सं. ३.१
विभिन्न विद्यालयों से चयनित कला एवं विज्ञान के छात्र-छात्रायें

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	चयनित विद्यार्थी		
		कला	विज्ञान	योग
1.	पाली इण्टर कालेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)	22	27	49
2.	नारायण इण्टर कालेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)	27	24	51
3.	बी.डी.एम.एम. गर्ल्स इण्टर कालेज, शिकोहाबाद	30	28	58
4.	भगवती देवी पालीवाल इण्टर कालेज,शिकोहाबाद	25	21	46
5.	दाऊदयाल गर्ल्स इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	29	25	54
6.	एम.जी. गर्ल्स इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	23	27	50
7.	एस.आर.के. इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	24	21	45
8.	तिलक इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	26	27	53
9.	ठा. वीरी सिंह इण्टर कालेज, टूण्डला	24	25	49
10.	उ.रे. राजकीय कन्या इण्टर कालेज, टूण्डला	24	26	50
11.	लोक राष्ट्रीय इण्टर कालेज, जसराना	27	26	53
12.	जनता इण्टर कालेज, जसराना	19	23	42
	योग	300	300	600

तालिका सं. ३.२

विभिन्न विद्यालयों से चयनित कला एवं विज्ञान के छात्र

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	चयनित छात्र		
		कला	विज्ञान	योग
1.	पाली इण्टर कालेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)	22	27	49
2.	नारायण इण्टर कालेज, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद)	27	24	51
3.	एस.आर.के. इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	24	21	45
4.	तिलक इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	26	27	53
5.	ठा. वीरी सिंह इण्टर कालेज, टूण्डला	24	25	49
6.	लोक राष्ट्रीय इण्टर कालेज, जसराना	27	26	53
	योग	150	150	300

तालिका सं. ३.३

विभिन्न विद्यालयों से चयनित कला एवं विज्ञान कीछात्रायें

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	चयनित छात्राऐं		
		कला	विज्ञान	योग
1.	बी.डी.एम.एम. गर्ल्स इण्टर कालेज, शिकोहाबाद	30	28	58
2.	भगवती देवी पालीवाल इण्टर कालेज,शिकोहाबाद	25	21	46
3.	दाऊदयाल गर्ल्स इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	29	25	54
4.	एम.जी. गर्ल्स इण्टर कालेज, फिरोजाबाद	23	27	50
5.	उ.रे. राजकीय कन्या इण्टर कालेज, टूण्डला	24	26	50
6.	जनता इण्टर कालेज, जसराना	19	23	42
	योग	150	150	300

४. न्यादर्श की विशेषताएं :

चयनित न्यादर्श की निम्नलिखित विशेषताऐं थीं–

1. चयनित न्यादर्श जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्व करता था।
2. जिन विद्यालयों से न्यादर्श का चयन किया गया था। वह जनपद फिरोजाबाद में विभिन्न स्थानों पर स्थापित हैं तथा सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व करते हैं।
3. ग्यारहवीं कक्षा के कला एवं विज्ञान के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया था।

३.३ संक्रियात्मक :

१. उपकरणों का चयन :

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का बुद्धि, समायोजन, तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध ज्ञात करना था। अतः प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया था–

(अ) सामूहिक बुद्धि परीक्षण – डॉ. एस.एस. जलोटा

(ब) समायोजन परीक्षण – डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह

(स) उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण – डॉ. वी.पी. भार्गव

२. उपकरणों का विवरण :

(अ) बुद्धि परीक्षण :

प्रस्तुत अध्ययन में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के मनोविज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.एस. जलोटा द्वारा निर्मित सामूहिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया था।

(ब) परीक्षण का विवरण :

शिक्षा के क्षेत्र में सभी विद्वानों का यह मत था कि हिन्दी जानने वाले विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता के परीक्षण के लिए सामूहिक बुद्धि परीक्षण निर्माण किया जाए। जिससे छात्रों की बुद्धिलब्धि को ज्ञात करके उनकी उपलब्धि को बढ़ाया जा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनारस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के शोध–छात्र एस.के. पाण्डेय को इस विषय पर कुछ कार्य करने की दिया गया था। प्रथम चरण में यह प्रयत्न किया गया कि परीक्षण के प्रशासन की अवधि 45 मिनट होनी चाहिये। परीक्षण में 100 पदों को लिया गया था। इनमें से कुछ को उदाहरण के रूप में प्रयोग किया गया था। जिनमें से एक का उत्तर दिया गया तथा शेष सभी प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने थे। परीक्षण प्रशासन का समय 20 मिनट था।

सभी पदों को उनकी विषयनिष्ठता एवं कठिनाई स्तर के अनुरूप व्यवस्थित किया गया था, तथा एक परीक्षण पुस्तिका नं. 3/51 को प्रकाशित किया था, तथा

उसका प्रशासन बनारस के कक्षा 7 से लेकर 11 तक के विद्यार्थियों पर किया गया था। जिसमें 200 से 600 पदों को लिया गया तथा अनेक पदों को उनकी वस्तुस्थिति तथा कठिनाई स्तर के अनुसार पुनः व्यवस्थित कर दिया गया तथा संशोधित परीक्षण सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षा 4/5 के नाम से प्रकाशित हुआ था। यह परीक्षण बनारस विश्वविद्यालय के 8, 9, 10 तथा 12वीं कक्षा के 1341 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया था। उनके मूल प्राप्तांकों से विदित होता था कि पद सामान्य स्तर पर विभाजित किये गये थे। परीक्षण के परिणामों की वैधता विद्यालयी प्राप्तांकों को प्राप्त करके ज्ञात की गई थी, तथा 1952 और 1953 में इसकी वैधता .50 से .78 ज्ञात की गई थी। श्री एस.के. कुलश्रेष्ठ ने इलाहाबाद के फूलपुर नामक शहर के 500 विद्यार्थियों पर 4/55 परीक्षण का प्रशासन किया था। एक तुलनात्मक अध्ययन के रूप में चन्द्रकान्ता सिंह ने 600 छात्रों पर परीक्षण किया और कारक विश्लेषण के द्वारा यह पाया कि परीक्षण 4/51 हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद है। यह जबलपुर, अमृतसर तथा पटियाला के विद्यार्थियों के लिए भी लाभप्रद है। यह परीक्षण 5500 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया था तथा परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों को मैन्युअल में दी गई सारणी के अनुसार मानसिक आयु में परिवर्तित किया गया था।

(स) <u>परीक्षण का प्रशासन</u> :

विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के अनुमति लेकर परीक्षण का प्रशासन किया गया था। परीक्षण का प्रशासन करते समय छात्रों को उचित निर्देश दिए गए थे तथा उसके पश्चात् छात्रों को कार्य करने का आदेश दिया गया था।

<u>निर्देश</u> :

सर्वप्रथम छात्रों की मानसिक योग्यता के मापन के लिए उन्हें निर्देश दिये गये थे जो उसमें दिये गए हैं।

हम आपकी मानसिक योग्यता मापना चाहते हैं। आपको आपस में बातें नहीं करनी है। जो कुछ आपकी समझ में नहीं आता है पूछें। इस परीक्षण के लिए केवल 20 मिनट का समय दिया गया है तथा 100 प्रश्न दिए गए हैं। सभी प्रश्न साधारण

भाषा में हैं। प्रत्येक प्रश्न के दोनों ओर क्रम संख्या दी गई है। प्रायः सभी प्रश्नों के कुछ सम्भव वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक वैकल्पिक उत्तर की संख्या भी उसके सामने छपी है। आपको प्रत्येक प्रश्न को समझकर केवल उसके सही उत्तर को चुनना है। उस उत्तर की संख्या को तत्काल उत्तर पत्र के क्रम के अनुसार उचित स्थान पर लिखना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर संख्या में देना है अर्थात् अक्षरों में कुछ भी नहीं लिखना है।

ध्यान रखिये, प्रत्येक प्रश्न का एक ही सही उत्तर है सभी प्रश्नों का उत्तर बहुत कम लोग दे सकते हैं। अतः आपको अत्यधिक शीघ्रता से कार्य करना चाहिए तथा अधिक से अधिक सही उत्तर देने का प्रयत्न करना चाहिये, यदि कोई प्रश्न कठिन लगता है तो व्यर्थ ही समय व्यतीत मत कीजिए तथा उत्तर पत्र के नीचे एक हल्का सा चिन्ह अंकित कर दीजिये। अगले प्रश्न का उत्तर सोचकर तुरन्त उचित स्थान पर लिख दीजिये। यदि अन्त में समय हो तो अपने उत्तरों को दोहरा लीजिये एवं छूटे हुए प्रश्नों का हल सोचकर लिख दीजिए। आरम्भ करने की आज्ञा सुनकर ही आप प्रश्नों को पढ़ने और उत्तर लिखने का कार्य आरम्भ कर दें।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखना है कि इस प्रश्न पुस्तिका पर आपको कुछ भी नहीं लिखना है और न ही इस पर किसी भी प्रकार का चिन्ह अंकित करना है केवल उत्तर पत्र पर यथोचित स्थान पर सही उत्तर अंकित करना है।

इस प्रकार निर्देश देने के पश्चात् विद्यार्थियों को कार्य करने का आदेश दिया गया था एवं घड़ी की सहायता से समय ज्ञात कर लिया गया था। 20 मिनट पश्चात् प्रश्न पत्र तथा उत्तर पुस्तिकायें वापस ले ली गई थीं।

(द) परीक्षण का अंकन :

परीक्षण का अंकन करते समय सही उत्तरों को एक-एक अंक प्रदान किया गया था तथा अंकों का जोड़ उत्तर पत्र पर नीचे लिख दिया गया था। अंकों को मैन्युअल में से सारणी नं. 4.9 की सहायता से मानसिक आयु में परिवर्तित कर दिया गया था। बुद्धिलब्धि ज्ञात करने के लिए मानसिक आयु तथा शारीरिक आयु का

अनुपात लिया गया। दशमलव हटाने के लिए 100 से गुणा कर दिया तथा टर्मन द्वारा प्रतिपादित सूत्र का प्रयोग किया गया था।

$$\text{बुद्धिलब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$$

३. उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण :

(अ) परीक्षण का वर्णन :

प्रस्तुत अध्ययन में आर.बी.एस. कालेज आगरा के मनोविज्ञान के विभागाध्यक्ष डा. वी.पी. भार्गव द्वारा निर्मित उपलब्धि प्रेरणा परीक्ष्ज्ञण का प्रयोग किया गया था।

(ब) परीक्षण का निर्माण :

प्रस्तुत परीक्षण का उद्देश्य व्यक्तियों की आवश्यकता उपलब्धि का मापन करना है। यह परीक्षण डॉ. विश्वनाथ मुकर्जी के प्रारूप तथा वाक्य पूर्ति विधि पर आधारित है। परीक्षण में 50 अधूरे वाक्यों के पद दिए गए हैं जिनकी पूर्ति विद्यार्थी को ही करनी होती है। एक पद की पूर्ति के लिए अ, ब, स तीन पद दिये गये हैं। जिनमें से किसी एक पर विद्यार्थी को चिन्ह अंकित करना होता है।

परीक्षण की दूसरी विशेषता यह है कि स्तर को देखने के लिए परीक्षण के पदों को एक से अधिक बार प्रयोग किया गया है। समान परीक्षण की समान प्रतिक्रियायें परीक्षण की सुसंगतता को प्रकट करती है। यह प्रक्रिया समय अन्तराल के प्रभाव को दूर करने के लिए की गई थी, क्योंकि परीक्षण पुनः परीक्षण विधि में समय अन्तराल का प्रभाव पड़ता है। परीक्षण प्रशासन के समय बातचीत करने पर प्रतिबन्ध है। अतः इसके द्वारा परीक्षण में होने वाली त्रुटियों को दूर किया जा सकता है। चूंकि लेखक अनुभव करता है कि भाषा चर का प्रभाव पड़ता है तथा सामाजिक मान्यता के प्रभाव को कम नहीं किया जा सकता है।

इस परीक्षण का निर्माण निम्नलिखित प्रक्रिया के द्वारा किया गया था इसमें हिन्दी के पदों का संकलन विभिन्न स्रोतों (हिन्दी भाषा और मनोविज्ञान के विशेषज्ञों) द्वारा किया गया था। उसके पश्चात् पदों के गुणों के अनुसार उनका चयन किया गया था। जब परीक्षण के 75 पदों का अपरिष्कृत प्रारूप तैयार हो गया, तो एक प्रारम्भिक

परीक्षण 35 विषयों पर किया गया। जिससे उसके प्रशासन से सम्बन्धित कमियों की जानकारी की जा सके। जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् जो पद परीक्षण की दृष्टि से उचित नहीं था। उसे निकाल दिया गया था। विश्वसनीयता और बैधता के परीक्षण के पदों तथा प्रतिक्रियाओं की विश्वसनीयता एवं वैधता के मध्य सार्थकता को ज्ञात किया था, जो कि पूर्ण रूप से उच्च थी तथा परीक्षण उपलब्धि प्रेरणा के मापन के लिए उपयुक्त था।

(स) विश्वसनीयता :

एक महीने के अन्तराल के पश्चात् परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा विश्वसनीयता .87 ज्ञात की गई थी तथा प्रतिक्रियाओं की समान पदों से तुलना करने पर .79 ज्ञात की गई थी।

(द) बैधता :

आवश्यकता उपलब्धि एवं विभिन्न संकायों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर परीक्षण की बैधता ज्ञात करने का प्रयास किया गया एवं यह पाया गया कि इस परीक्षण का एवं डॉ. विश्वनाथ मुकर्जी द्वारा निर्मित परीक्षण का अंकन करने पर इसकी बैधता .80 थी तथा शैक्षिक उपलब्धि के साथ .75 थी।

परीक्षण का प्रशासन :

सामान्य कक्षा में कक्षा अध्यापक की सहायता से परीक्षण का प्रशासन किया गया था। प्रशासन से पूर्व विद्यार्थियों को निम्नलिखित निर्देश दिए गये थे-

निर्देश :

आगे के पृष्ठों पर कुछ अधूरे वाक्यांश दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक के सम्मुख तीन वैकल्पिक पूर्ति वाक्य सुझाव के रूप में दिए गये हैं। आपको दिए हुए अधूरे वाक्यों की पूर्ति के लिए इनमें से किसी एक जिसे आप अपनी वर्तमान रूचि के अनुकूल एवं उपयुक्त समझते हैं को चुनकर (√) चिन्ह लगाना है उदाहरणार्थ-

1. मैं खुश होता हूँ जबकि मैं ....
   (क) दूसरों की सहायता करता हूँ ( )
   (ख) दूसरों के ध्यान का केन्द्र बनता हूँ ( )

(ग) अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता हूँ ( )

मान लीजिये यदि उपर्युक्त वाक्यांशों में से आप पहले को चुनते हैं तो (क) में सामने वाले कोष्ठक में (√) का चिन्ह लगाइये। यदि दूसरे वाक्यांश को चुनते हो तो (ख) के सामने वाले कोष्ठक में (√) का चिन्ह अंकित कीजिये एवं यदि तीसरे वाक्यांश को अपनी रूचि के अनुकूल चुनते हैं तो (ग) के सामने वाले कोष्ठक में सही का चिन्ह अंकित कीजिये। इस प्रकार आपको एक ही वाक्यांश चुनकर राय देनी है तथा आगे सभी उत्तर देने हैं। ध्यान रखिये इनमें से कोई भी सही या गलत उत्तर नहीं है। आपको उत्तर अपनी वर्तमान परिस्थितियों को सोचकर ही देना है। यदि कोई शंका हो तो पहले पूछ लीजिये। कार्य शीघ्रता से कीजिये। इसके लिए आपको 30 मिनट का समय दिया जायेगा। यह तुम्हारी परीक्षा नहीं है इसलिए जो भी उत्तर सही लगे उस पर निशान लगा दीजिये उनसे यह भी कहा गया था कि वह पुस्तिका पर अपना नाम, विद्यालय का नाम, कक्षा एवं वर्ग स्पष्ट रूप से लिख दें।

इस प्रकार निर्देशानुसार विद्यार्थियों ने अपना कार्य करना प्रारम्भ कर दिया तथा पूरी सूचनायें प्राप्त करने के पश्चात् परीक्षण पुस्तिकाओं का संकलन किया गया था।

परीक्षण का अंकन :

परीक्षण का अंकन मैन्युअल की सहायता से किया गया था तथा प्रत्येक सही प्रतिक्रिया वाले पद का एक अंक प्रदान किया गया था। उसके पश्चात् सभी अंकों को जोड़ दिया गया तथा उच्च, सामान्य एवं निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित कर दिया गया था। जिन छात्रों के 23 से अधिक अंक थे उन्हें उच्च श्रेणी में 17 से 18 अंक वालों को सामान्य की श्रेणी में तथा 11 से 14 अंकों वाले छात्रों को निम्न श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था। इसी प्रकार 23 से अधिक अंकों वाली छात्राओं को उच्च श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था। 17 से 19 अंकों वाली छात्राओं को सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था तथा 11 से 14 ।अंकों वाली छात्राओं को निम्न श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था।

टिप्पणी :

परीक्षण के अंकन के समय यह कठिनाई आई थी कि कुछ छात्र तथा छात्राओं ने तीनों विकल्पों पर निशान लगा दिये थे तथा कुछ ने एक भी विकल्प पर निशान

नहीं लगाया था। इस प्रकार जो परीक्षण पुस्तिकायें सुचारू रूप से नहीं भरी गई थीं। उनको अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया था।

३. समायोजन-अनुसूची :

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन अनुसूची का प्रयोग किया गया था।

(अ) समायोजन अनुसूची का विवरण :

समायोजन अनुसूची का निर्माण भारत में हिन्दी जानने वाले विद्यार्थियों के लिए किया गया था। इस परीक्षण का उद्देश्य हायर सैकेन्ड्री स्कूल के छात्रों के समायोजन के विषय में जानकारी प्राप्त करना था। अतः इसके लिए 100 प्रश्नों की एक अनुसूची तैयार की गई थी। जिसमें प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' में देने थे। सूची का 25 निर्णायकों के सामने प्रस्तुत किया गया था। जिसमें सभी मनोवैज्ञानिक थे। वे सभी शिक्षण सलाहाकार भी थे तथा व्यावसायिक निर्देशन में लगे हुए थे। उन्होंने प्रत्येक पद की गुणवत्ता के विषय में बताया था। अतः जो पद सही थे उन्हें अनुसूची के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया गया था। पद विश्लेषण करने से पूर्व 100 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर इसे प्रशासित किया गया था। इसके द्वारा भाषागत कठिनाई को दूर किया जा सका यदि किसी पद को कठिन बताया गया तो उस पद के स्थान पर दूसरे पद को ले लिया गया। इस प्रकार इसमें से 12 पदों को कठिन होने के कारण निकाल दिया गया था तथा शेष बचे हुए 88 पदों को दो समूहों 'अ' तथा 'ब' पर प्रशासित किया गया था। समूह 'अ' में उन विद्यार्थियों को लिया गया जो अच्छी तरह समायोजित थे तथा समूह 'ब' में उन विद्यार्थियों को लिया गया था जो असमायोजित थें समूहों का निर्माण पांच शिक्षकों के निर्णय के आधार पर किया गया था जो उन्हें अच्छी प्रकार से जानते थे। सभी पदों के संदर्भ में दोनां समूहों की प्रतिक्रियाओं का तुलनातमक अध्ययन काई वर्ग परीक्षण के द्वारा किया गया था 88 पदों में से 14 ऐसे पदों को जो कि विभेदीकरण नहीं कर पां रहे थे निकाल दिया गया था, बचे हुए 14 पदों को पटना के सैकेन्डरी स्कूल के 370 विद्यार्थियों के समूह पर प्रशासित किया गया था। सम्पूर्ण अंकों का विभाजन अनुसूची के तीनों भागों (संवेगात्मक सामाजिक तथा शैक्षिक) के आधार पर किया गया था तथा

द्विपंक्तिक सहसम्बन्ध निकाला गया था। अतः सहसम्बन्ध के आधार पर 14 पदों को परीक्षण से निकाल दिया गया था एवं 60 पदों को ही सूची में सम्मिलित किया गया था। जिसमें समायोजन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 20 पदों को लिया गया था।

(ब) न्यादर्श :

60 पदों वाली इस अनुसूची का प्रशासन 1950 में बिहार के 40 विद्यालयों के नवीं तथा ग्यारहवीं कक्षा के 1200 छात्र एवं 750 छात्राओं पर किया गया था। न्यादर्श का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया था।

(स) विश्वसनीयता :

परीक्षण की विश्वसनीयता निम्नलिखित विधियों द्वारा ज्ञात की गई थी-

1. अर्द्ध विच्छेद विधि
2. परीक्षण पुनः परीक्षण विधि
3. के. आर. सूत्र- 20

सम्पूर्ण परीक्षण तथा अर्द्ध परीक्षणों की विश्वसनीयता विभिन्न विधियों द्वारा ज्ञात की गई थी जिनका विवरण तालिका संख्या 3.4 में दिया गया है-

तालिका सं. ३.४
विश्वसनीयता - गुणांक

क्र.सं.	विधि	संवेगात्मक	सामाजिक	शैक्षिक	योग
1.	अर्द्ध विच्छेद	0.94	0.93	0.96	0.95
2.	परीक्षण पुनः परीक्षण	0.96	0.90	0.93	0.93
3.	के. आर. सूत्र- 20	0.92	0.92	0.92	0.94

वैधता :

प्रस्तुत परीक्षण की वैद्यता द्विपंक्तिक सहसम्बन्ध के द्वारा निकाली गई थी। तीनों क्षेत्रों के मध्य सहसम्बन्ध को भी ज्ञात किया गया था। जिसका विवरण तालिका संख्या 3.5 में दिया गया है-

तालिका सं. ३.५
तीनों क्षेत्रों के मध्य अन्तः सहसम्बन्ध

क्र.सं.	क्षेत्र	1	2	3
1.	संवेगात्मक	--	.20	.19
2.	सामाजिक	.20	--	.24
3.	शैक्षिक	.92	.24	--

परीक्षण का प्रशासन :

परीक्षण का प्रशासन सामान्य कक्षा में किया गया था। अनुसूची की पूर्ति करने से पूर्व विद्यार्थियों का निर्देश दिए गए थे जो निम्नवत् थे–

निर्देश :

प्रिय छात्र एवं छात्राओं, यह अनुसूची मैं तुम्हें पूर्ति करने के लिए दे रहा हूं। इसमें आगे के पृष्ठों पर तुम्हारे स्कूल से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दिए गए हैं। जिनके सामने दो खाने बने हुए हैं। आप प्रत्येक प्रश्न को ध्यान से पढ़िए तथा यह निश्चय कर लीजिए कि आप किसी भी प्रश्न का उत्तर 'हाँ' के द्वारा देना चाहते हो अथवा 'नहीं' के द्वारा देना चाहते हो यदि प्रश्न का उत्तर 'हाँ' के रूप में देना चाहते हो, तो 'हाँ' के नीचे वाले खाने में सही का चिन्ह लगाइये तथा यदि 'नहीं' के द्वारा देना चाहते हो तो 'नहीं' के नीचे वाले खाने में सही का चिन्ह लगाइये। ध्यान रखिये कि तुम्हारे उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे तथा तुम्हारे शिक्षकों को भी इनसे अवगत नहीं कराया जायेगा। इसलिए निःसंकोच भाव से सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। समय की कोई सीमा नहीं है, फिर भी यथाशीघ्र कार्य समाप्त करने का प्रयत्न कीजिये। आप अपना नाम, कक्षा, आयु, स्कूल का नाम इत्यादि को अनुसूची पर अवश्य अंकित कर दीजिये।

इस प्रकार निर्देश सुनने के पश्चात् छात्र/छात्राओं ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया था एवं कार्य समाप्त होने के पश्चात् सभी अनुसूचियों को एकत्रित कर लिया गया था।

परीक्षण का अंकन :

परीक्षण का अंकन मैन्युअल की सहायता से किया गया था। प्रत्येक सही उत्तर को एक अंक प्रदान कर दिया गया था। गलत उत्तर को शून्य अंक प्रदान किया गया था। इसके पश्चात् सभी अंकों के योग को लिख लिया गया था तथा अंकों के आधार पर श्रेणी का विभाजन किया गया था। जिन छात्रों के अंक 12 से कम थे उन्हें उच्च श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था, जिनके 13 से 20 के मध्य अंक थे उन्हें सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था एवं जिनके 22 से अधिक अंक थे

उन्हें निम्न श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था। इसी प्रकार जिन छात्राओं के 14 से कम अंक थे उन्हें उच्च श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था, जिसके 15 से 22 के मध्य अंक थे उन्हें सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था एवं जिनके 32 से अधिक अंक थे उन्हें निम्न श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया था।

टिप्पणी :

परीक्षण के अंकन के समय यह कठिनाई आई थी कि कुछ छात्र-छात्राओं ने अनुसूची की पूर्ति लापरवाही से की थी तथा सभी प्रश्नों पर निशान लगा दिए थे। इससे यह ज्ञात नहीं हो सका कि कौन सा उत्तर सही है, अतः ऐसी अनुसूचियों को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया था।

सावधानियाँ :

बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण एवं समायोजन अनुसूची के प्रशासन के समय निम्नलिखित सावधानियां रखी गई थीं-

1. कक्षा-कक्ष में प्रकाश की उचित व्यवस्था की गई थी।
2. शोर का वातावरण नहीं था।
3. कक्षा में सभी छात्र/छात्राओं के लिए बैठने की समुचित व्यवस्था की गई थी।
4. यह ध्यान रखा गया था कि सभी को परीक्षण पुस्तिका तथा अनुसूची प्राप्त हुई है अथवा नहीं हुई है।
5. वे आपस में बातचीत करके नकल करने का प्रयास तो नहीं कर रहे हैं।

४. शैक्षिक उपलब्धि :

शैक्षिक उपलब्धि के लिए किसी भी परीक्षण का प्रयोग नहीं किया गया था। प्रस्तुत अध्ययन में ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था। इसलिए उनके हाईस्कूल बोर्ड की परीक्षा के प्राप्तांकों को ही शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया था क्योंकि इन अंकों को प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय तथा राज्य सरकार स्वीकार करती हैं अतः इन्हीं अंकों के प्रतिशत को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में स्वीकृत किया गया था।

३.४ प्रदत्तों का संकलन :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्तों का संकलन जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न इण्टरमीडिएट विद्यालयों से किया गया था जिनका विवरण पूर्व में दिया जा चुका है। इस अध्ययन में ग्यारहवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं को लिया गया था तथा प्रदत्तों का संकलन पूर्व में वर्णित परीक्षणों एवं अनुसूची के द्वारा किया गया था। प्रदत्तों के संकलन के समय परीक्षणों तथा अनुसूची को एक निश्चित क्रम में प्रस्तुत किया गया था। यह क्रम निम्नलिखित प्रकार से था-

1. सर्व प्रथम सामूहिक बुद्धि परीक्षण का प्रशासन छात्र-छात्राओं के छोटे समूह पर किया गया था।
2. बुद्धि परीक्षण के पश्चात् उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण का प्रशासन किया गया था।
3. समायोजन अनुसूची का प्रशासन सबसे अन्त में किया गया था।
4. शैक्षिक उपलब्धि के रूप में हाईस्कूल के प्राप्तांकों के प्रतिशत को लिया गया था।

तथ्य संकलन के पश्चात् इनकी तालिकायें निर्मित की गई थीं तथा विश्लेषण किया गया था। जिनका वर्णन चतुर्थ अध्याय में किया गया है।

REFERENCES

(1) J.W. Best- "Descriptive research describes and interprets 'What is' It is concerned with conditions or relationships that exist, opinions that are held, processes that are going on, effects that evident, or trends that are developing. It is primarily concerned with the present although it often considered past events and influences as they are related to current conditions."

J.W. Best (1978)- 'Research in Education' Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi, p. 116.

F.L. Whitney- "The Survey research according to recent science terminology is an organised attempt to analyse, interpret, and report the present status of social institute group on area. It deals with a cross sectional of the present, of duration sufficient for examination, that is present time not the present moment."

F.L. Whitney- 'The elements of research' Asia Publishing House, (1961), p.161.

अध्याय-चतुर्थ
तथ्य विश्लेषण
एवं निर्वचन

अध्याय-चतुर्थ
तथ्य विश्लेषण एवं निर्वचन
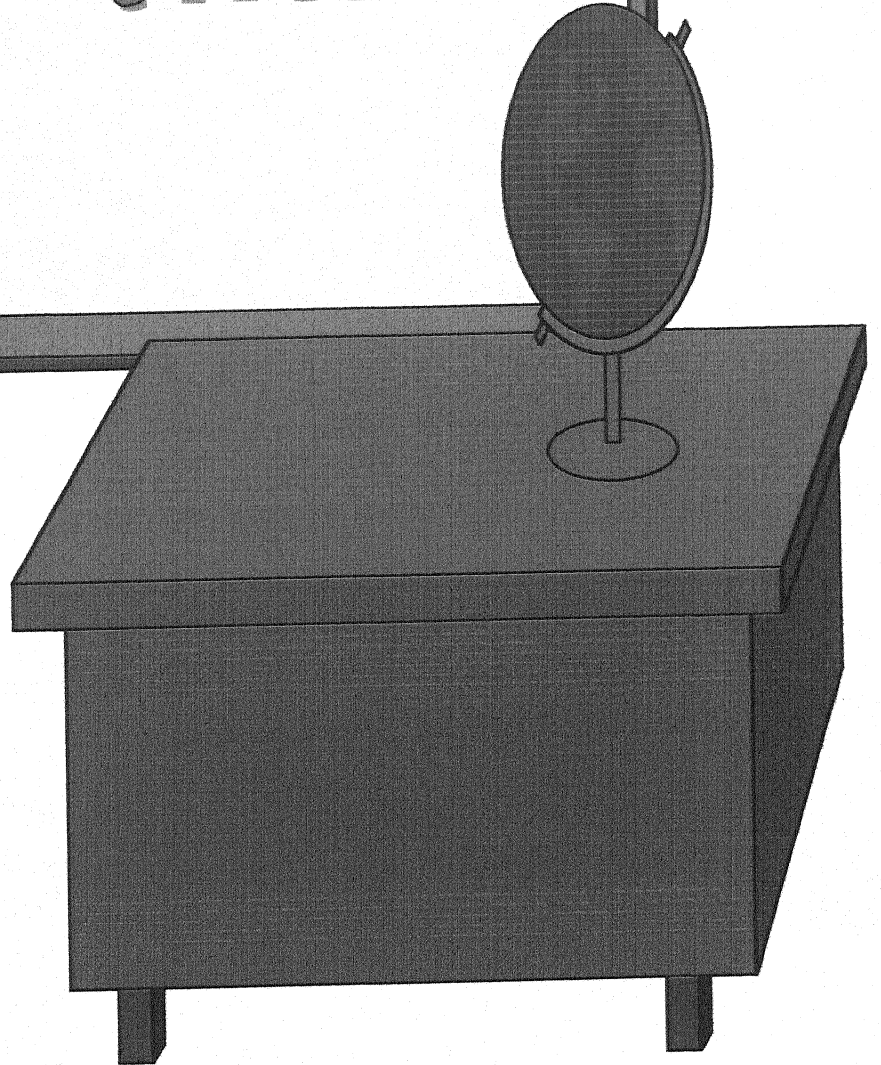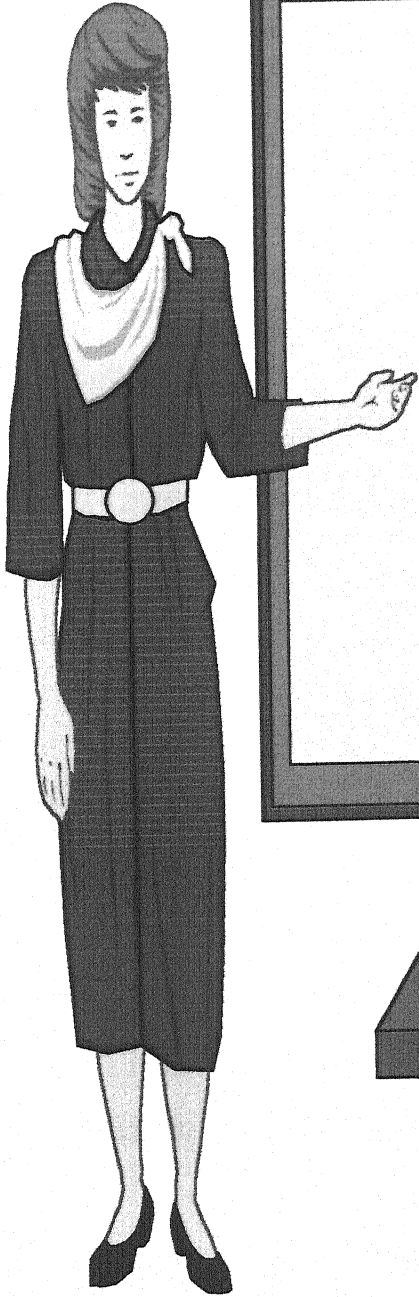
४.१ प्रस्तावना :

किसी भी शोधकार्य में तथ्य संकलन के पश्चात् मुख्य कार्य तथ्यों का विश्लेषण एवं निर्वचन होता है। विश्लेषण के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि जो तथ्य थे उनके क्या परिणाम आये तथा निर्वचन के द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि उनके अतिरिक्त अर्थ क्या है। इस प्रकार निर्वचन तथ्यों से बिल्कुल गुंथा हुआ होता है तथा सम्पूर्ण शोधकार्य का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। जब शोधकर्ता के द्वारा किसी समस्या का चयन किया जाता है तब उसके तथ्यों का विश्लेषण एवं निर्वचन किया जाता है। और उसके पश्चात् पूर्व अनुभव, निर्वचन, अध्ययन ज्ञान तथा विचारों के आधार पर शोधकार्य के निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

विवेचन को स्पष्ट करते हुए करलिंगर ने लिखा है- "विवेचन के अन्तर्गत विश्लेषण के परिणामों को लिया जाता है इसके द्वारा अनुसंधान के अन्तर्गत प्राप्त सम्बन्धों के तर्क संगत आधारों पर अनुमान लगायें जाते हैं और अध्ययन से सम्बन्धित सम्बन्धों के प्रति निष्कर्ष निकाले जाते हैं।"[1]

४.२ सांख्यिकीय विश्लेषण :

शोधकार्य के निश्चित परिणामों तक पहुंचने से पूर्व आजकल अधिकांशतः सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी की गणना के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं एवं उनको एक विशेष अर्थ देने का प्रयास किया जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य में भी सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, तथ्य एकत्रित करने के लिए बुद्धि परीक्षण, समायोजन अनुसूची तथा उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण का प्रयोग किया गया था। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में छात्र-छात्राओं की अन्तिम परीक्षा के प्राप्तांकों को लिया

गया था। यद्यपि वर्तमान समय में इन प्राप्तांकों को लेना उचित नहीं है क्योंकि अधिकांश विद्यालयों में खुले आम नकल हो रही है। इसमें ग्रामीण विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परिणामतः अयोग्य विद्यार्थियों के अंक अधिक आ जाते हैं तथा योग्य विद्यार्थियों के अंक कम रह जाते हैं। इस प्रकार योग्य तथा अयोग्य विद्यार्थियों के मध्य विभेदीकरण करना सम्भव नहीं हो पाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के रूप में हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांकों को ही लिया गया था। यहां पर यह सोचा गया कि जब राज्य सरकार ही इन्हें स्वीकार करती है तथा मान्यता प्रदान करती हैं तो इन अंकों को लेने में कोई हानि नहीं है।

प्रस्तुत शोधकार्य में जनपद फिरोजाबाद के विभिन्न इण्टरमीडिएट विद्यालयों से 600 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चुना गया था एवं चार समूहों में विभक्त किया गया था। प्रत्येक समूह में 300 छात्र–छात्रायें थे।

समूह इस प्रकार थे–

समूह	*संख्या*
विज्ञान	300
कला	300
छात्र	300
छात्राऐं	300
योग	*600*

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित चार चरों को लिया गया था–

1. बुद्धि
2. समायोजन
3. उपलब्धि प्रेरणा
4. शैक्षिक उपलब्धि

४.३ मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलनों की गणना :

प्रस्तुत अध्ययन में चारों समूहों के चारों चरों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिये सभी चरों के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किये गये थे। प्राप्त परिणामों को विभिन्न तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

४.४ आलोचनात्मक अनुपातों की गणना :

मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलनों की तालिकाओं के द्वारा निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता था कि सभी चरों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर है अथवा नहीं है। अतः अन्तरों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए सभी समूहों के सभी चरों के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किये गये थे। प्राप्त परिणामों को विभिन्न तालिकाओं में प्रदर्शित किया था।

आलोचनात्मक अनुपातों की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की गई थी–

$$\sigma D \sqrt{\frac{\sigma 1^2}{N_1} + \frac{\sigma 2^2}{N_2}}$$

1. $\sigma D =$ दो प्रतिदर्शों के मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि
2. $\sigma_1{}^2 =$ पहले प्रतिदर्श के प्रमाणिक विचलन का वर्ग
3. $\sigma_2{}^2 =$ दूसरे प्रतिदर्श के प्रमाणिक विचलन का वर्ग
4. $N_1 =$ प्रथम प्रतिदर्श में इकाइयों की संख्या
5. $N_2 =$ दूसरे प्रतिदर्श में इकाइयों की संख्या

$$C.R. = \frac{D}{{}^{\sigma}D}$$

C.R. = आलोचनात्मक अनुपात

D = दो प्रतिदर्शों के मध्यमानों का अन्तर

${}^{\sigma}D =$ दो प्रतिदर्शों के मध्यमानों के अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि

४.५ मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलनों की गणना :

प्रस्तुत अध्ययन में 600 विद्यार्थियों के न्यादर्श को लिया गया था। जहां प्रत्येक समूह में 300 विद्यार्थी थे जिनका विवरण इसी अध्याय में पूर्व में किया जा चुका है। इस प्रकार कला–विज्ञान, छात्र एवं छात्रायें चार समूह थे तथा बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि चार चर थे। प्रस्तुत अध्ययन में इन चारों चरों के मध्यमानों के मध्य अन्तर ज्ञात करना था। अतः यह आवश्यक था कि सभी चरों

के मध्यमान ज्ञात किये जायें। अतः प्रत्येक समूह के प्रत्येक चर के अलग-अलग मध्यमान ज्ञात किये गये थें यह निश्चित है कि प्रत्येक छात्र अथवा छात्रा मध्यमान के निकट होता है अतः इनमें प्रमाणिक विचलनों का होना अनिवार्य है। इसलिए मध्यमानों के साथ-साथ प्रमाणिक विचलनों की भी गणना की गई थी।

इस अध्ययन में चरों का क्रम इस प्रकार था-

1. उपलब्धि प्रेरणा
2. समायोजन
3. बुद्धि
4. शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रथम चर उपलब्धि प्रेरणा था। उपलब्धि प्रेरणा के सभी समूहों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किये गये थे। प्राप्त परिणाम नीचे प्रस्तुत किए गये हैं।

तालिका सं. ४.१

चारों समूहों के उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1.	विज्ञान	21.90	5.81
2.	कला	19.29	4.72
3.	छात्र	20.37	5.45
4.	छात्राऐं	20.80	4.45

तालिका सं. 4.1 को देखने से विदित होता है कि उपलब्धि प्रेरणा के सभी समूहों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 21.90, 19.29, 20.37 तथा 20.80 थे तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.81, 4.72, 5.45 तथा 4.45 थे अर्थात् अधिकतम मध्यमान 21.90 तथा न्यूनतम मध्यमान 19.29 था। विज्ञान तथा कलावर्ग के छात्र-छात्राओं के मध्यमान का अन्तर 1.08 था। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान कलावर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमान से उच्च था जबकि छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान में केवल .43 का अन्तर था। छात्राओं का मध्यमान छात्रों से उच्च था किन्तु प्रमाणिक विचलनों में कोई अन्तर नहीं था। मध्यमानों एवं प्रमाणिक

GRAPH NO. 1

Table No. 4.1

MEANS OF ACHIEVEMENT MOTIVATION OF ALL FOUR GROUPS
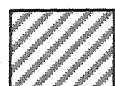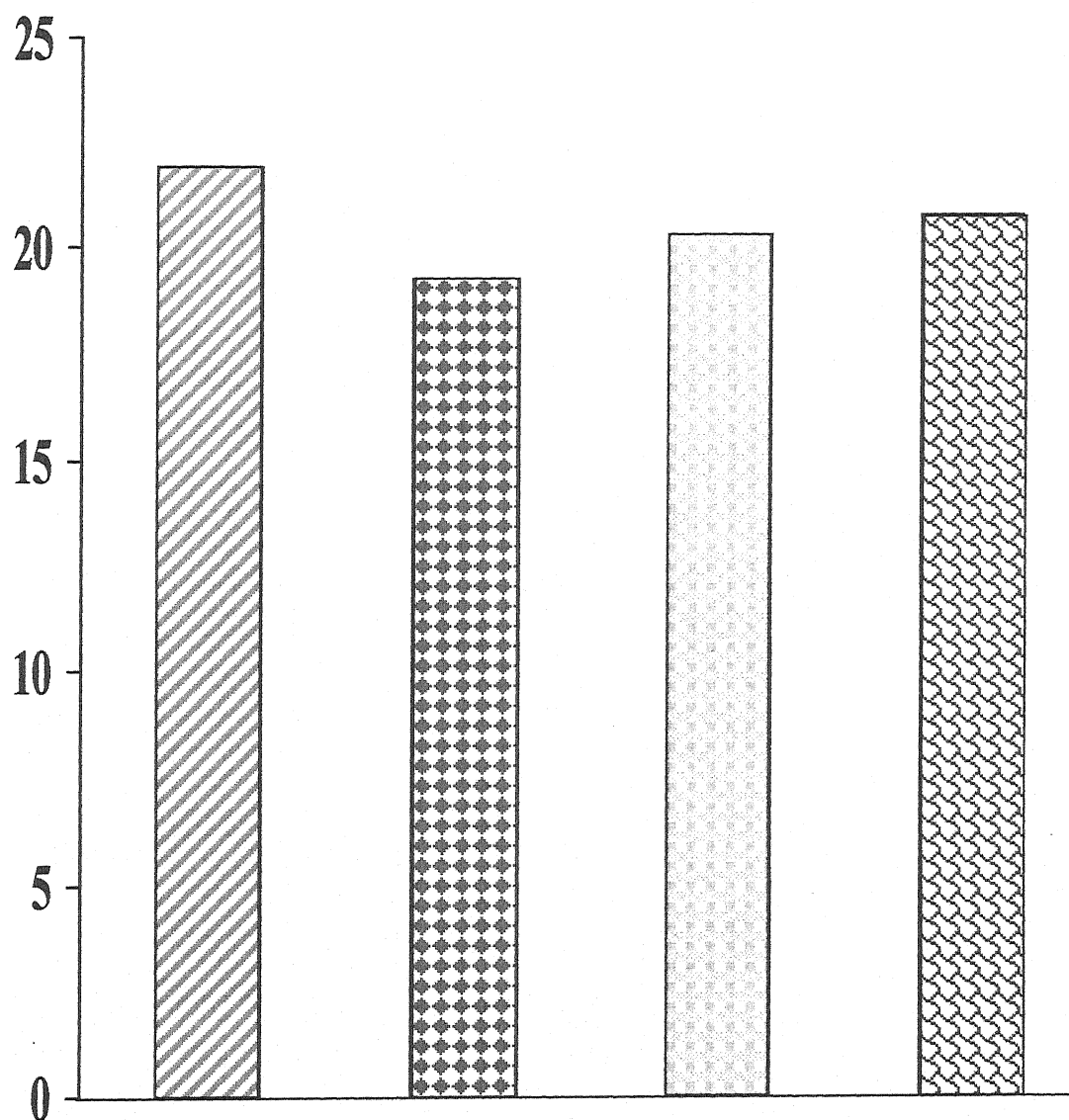
25

20

15

10

5

0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group
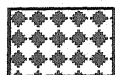
Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

GRAPH NO. 2

Table No. 4.1

STANDARD DEVIATION OF ACHIEVEMENT MOTIVATION OF ALL FOUR GROUPS
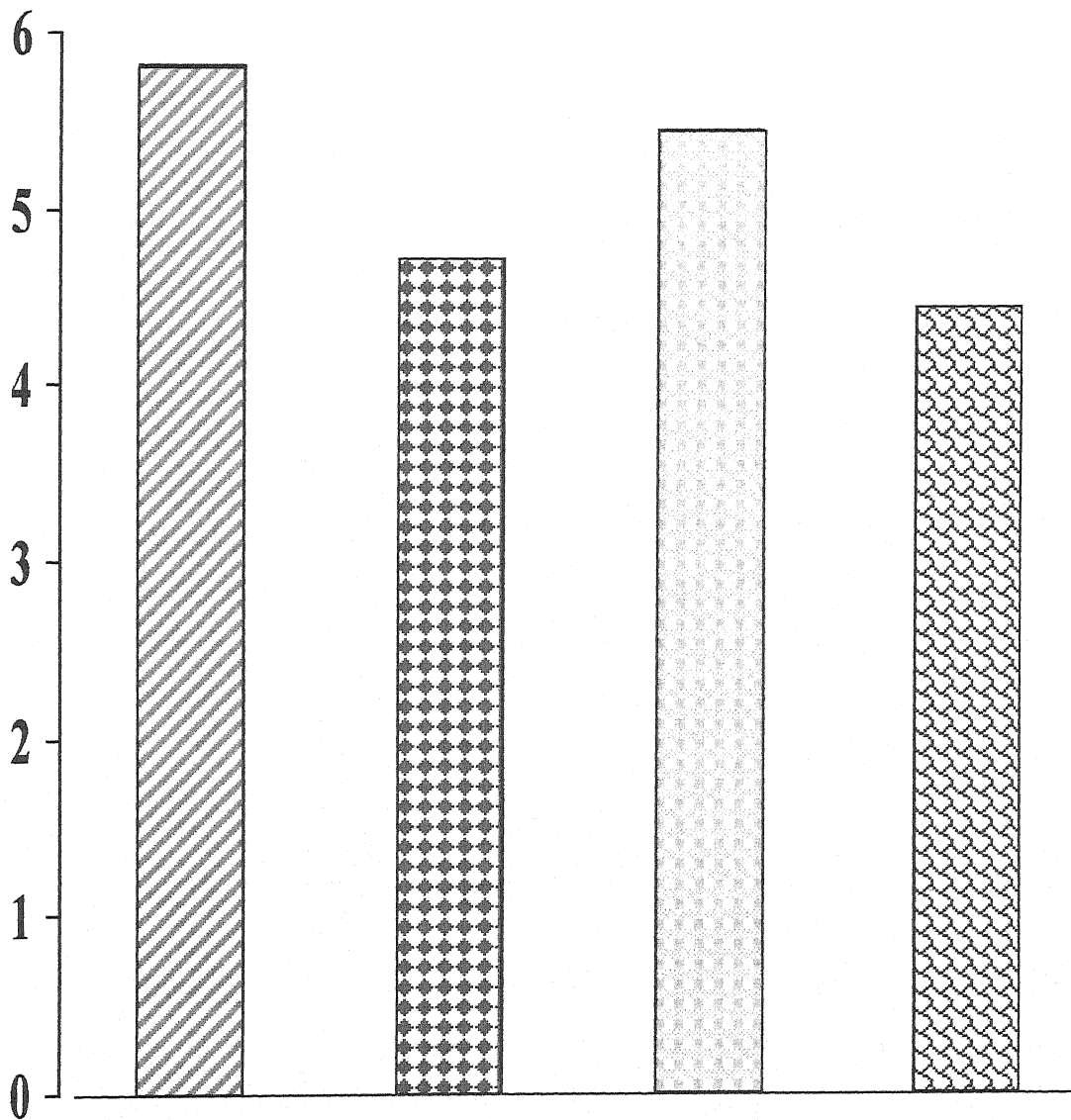
6

5

4

3

2

1

0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group

Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

विचलनों की गणना करने पर यह ज्ञात नहीं हो सका कि सभी समूहों में मध्यमानों का अन्तर सार्थक था अथवा नहीं। इस सार्थकता को ज्ञात करने के लिए चारों समूहों में उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात भी ज्ञात किए गए थे। प्राप्त परिणामों को नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.२

चारों समूहों के उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

क्र.सं.	समूह	विज्ञान	कला	छात्र	छात्राऐं
1.	विज्ञान	--	4.96xx	2.71xx	1.95
2.	कला	--	--	2.16x	2.99xx
3.	छात्र	--	--	--	.0.78
4.	छात्राऐं	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

उपरोक्त तालिका पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि विज्ञान तथा कला, विज्ञान तथा छात्रों एवं कला तथा छात्राओं मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर था। किन्तु कला एवं छात्रों के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर था। विज्ञान तथा छात्राओं के एवं छात्र एवं छात्राओं के मध्य कोई अन्तर नहीं था।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे इसका कारण विषयों का अन्तर है। विज्ञान के विद्यार्थी कला के विद्यार्थियों की अपेक्षा अध्ययन के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं। उनके विषय अधिक कठिन होते है। जिनका अध्ययन वह स्वाध्याय के द्वारा नहीं कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांशतः प्रयोगात्मक विषय होते है जिनके अध्ययन के लिए उन्हें नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित होना पड़ता है। विज्ञान के छात्र-छात्रायें अधिक महत्वाकांक्षी होते हैं। वह डाक्टर इंजीनियर अथवा उच्च पदाधिकारी बनना चाहते हैं परिणाम स्वरूप वह अधिक परिश्रम करते हैं एवं उन्हें अपने शिक्षकों तथा अभिभावकों पर अधिक आश्रित रहना पड़ता है। उनके अभिभावक तथा शिक्षक भी यह चाहते हैं कि उनके बच्चे उन्नति के पथ पर अग्रसर हो अतः वह उन्हें

समय-समय पर प्रेरित करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त वह स्वयं भी आत्म प्रेरित होते हैं। जबकि कला के अधिकाँश छात्रों का मुख्य उद्देश्य केवल परीक्षा में सफल होना होता है। वह येन केन प्रकारेण कुछ दिनों अध्ययन करके ही पास होना चाहते हैं तथा उनके अधिकाँश विषय सैद्धान्तिक होते हैं जिनका अध्ययन स्वाध्याय के द्वारा किया जा सकता है। केवल संगीत, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान आदि विषय ही प्रयोगात्मक होते हैं। अतः कला के अधिकाँश विद्यार्थी कक्षा में बहुत कम उपस्थित होते हैं तथा उन्हें अपने शिक्षकों के सहयोग की भी अधिक आवश्यकता नहीं होती है। बहुत कम छात्र-छात्रायें ही आई.ए.एस.,पी.सी.एस. अथवा उच्च पदों पर आसीन हो पाते हैं चूँकि इनका सम्पर्क अपने शिक्षकों से कम रहता है अतः वह कम प्रेरित होते हैं। विज्ञान तथा कला के विद्यार्थियों के मध्यमानों के मध्य अन्तर 1.08 था तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान कलावर्ग के विद्यार्थियों से अधिक था। इससे स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी कलावर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उपलब्धि प्रेरणा से अधिक प्रभावित होते है तथा यदि उन्हें अधिक उपलब्धि प्रेरणा प्रदान की जाऐ तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विज्ञान तथा छात्र, कला तथा छात्राओं के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक था। यह अन्तर विषयों के कारण तथा लिंग भेद के कारण था। लेकिन छात्र एवं छात्राओं विज्ञान तथा छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के अन्तरों का आलोचनात्मक अनुपात 0.78 था तथा मध्यमानों में भी .43 का अन्तर था जो कि नगण्य था इससे स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राऐं दोनों ही उपलब्धि प्रेरणा से सामान रूप से प्रभावित होते हैं। इसका कारण है कि वर्तमान समय में छात्रायें भी शिक्षा के प्रति जागरूक हो रही हैं।

प्राचीनकाल में यह माना जाता था कि स्त्रियों को शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। स्त्रियों को केवल घर का कार्य ही करने का अधिकार है। इस प्रकार उनकी स्थिति अत्यधिक दयनीय थी।

वैदिक साहित्य के गृन्थों 'स्मृति' आदि में भी अध्ययन, अध्यापन तथा उपनयन संस्कार के लिए स्त्री तथा शूद्रों को अयोग्य मानकर इस प्रकार शिक्षा के अधिकारों से वंचित रखा गया।

तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में लिखा है कि-

''ढोल गंवार, शूद्र, पशु, नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी''

मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

''अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।''

इस प्रकार नारी को प्रारम्भ से ही अवला माना जाता रहा है तथा उसे पुरूषों के अधिकारों से वंचित रखा गया है लेकिन वर्तमान समय में नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है। यदि यह कहा जाय कि आज नारी पुरूषों से अधिक आगे बढ़ रहीं हैं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अब लड़कियाँ क्रीत दासी बनकर रहना पसन्द नहीं करती है। अब वह प्रोफेसर, आई.ए.एस., पी.सी.एस तथा पाइलट भी बन रही है इस प्रकार वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रहीं हैं। लेकिन लगता है कि लड़के शिक्षा के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। विभिन्न परीक्षाओं तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणामों को देखने से विदित होता है कि छात्राओं का परीक्षा परिणाम छात्रों से अधिक रहता है यही कारण है कि छात्राओं का मध्यमान छात्रों से अधिक था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राऐं दोनों ही उपलब्धि प्रेरणा से प्रभावित होते हैं यदि छात्रों के साथ-साथ छात्राओं को भी उपलब्धि प्रेरणा प्रदान की जाऐ तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बृद्धि की जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीय चर समायोजन था। अतः समायोजन के सभी समूहों में मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन ज्ञात किए गए थे जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है-

तालिका सं. ४.३
चारों समूहों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1.	विज्ञान	11.39	5.60
2.	कला	12.37	6.61
3.	छात्र	12.36	6.09
4.	छात्राऐं	11.39	6.17

तालिका सं. 4.3 पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि समायोजन के करने से सभी समूहों में मध्यमान क्रमशः 11.39, 12.37, 12.36, तथा 11.39 थे जिनमें अधिकतम मध्यमान 12.37 तथा न्यूनतम मध्यमान 11.39 था। विज्ञान वर्ग तथा कलावर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमानों के मध्य .98 का अन्तर था। कलावर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमानों से थोड़ा अधिक था। छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के मध्य .97 अन्तर था छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान से अधिक था। मध्यमानों के साथ-साथ सभी समूहों के प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। सभी समूहों के प्रमाणिक विचलन क्रमशः 5.60, 6.61, 6.09 तथा 6.17 थे। कलावर्ग के विद्यार्थियों का प्रमाणिक विचलन छात्रों से अधिक था।

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से यह ज्ञात नहीं हो सका कि सभी समूहो के मध्यमानों का अन्तर सार्थक था अथवा नहीं। अतः इस सार्थकता को ज्ञात करने के लिए चारो समूहों में समायोजन के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। आलोचनात्मक अनुपातों को नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.४
चारों समूहों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

क्र.सं.	समूह	विज्ञान	कला	छात्र	छात्राऐं
1.	विज्ञान	--	1.59	1.67	0.01
2.	कला	--	--	2.16^{x}	1.52
3.	छात्र	--	--	--	1.58
4.	छात्राऐं	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर
xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

GRAPH NO. 3

Table No. 4.3

MEANS OF ADJUSTMENT OF ALL FOUR GROUPS
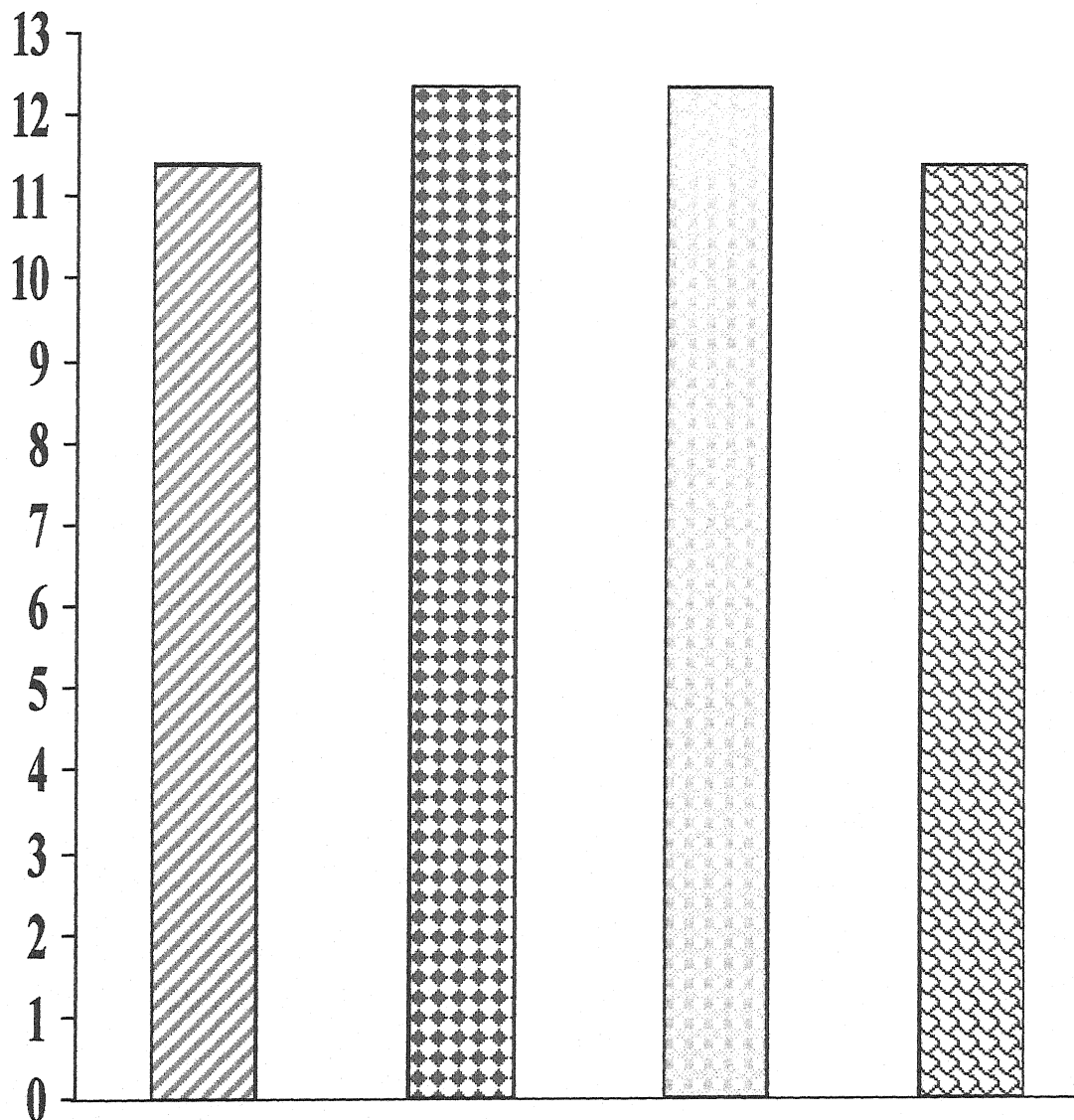
13 12 11 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 0

Boys & Girls of Science Group
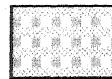
Boys of Science & Arts Group

Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

GRAPH NO. 4

Table No. 4.3

STANDARD DEVIATION OF ADJUSTMENT OF ALL FOUR GROUPS
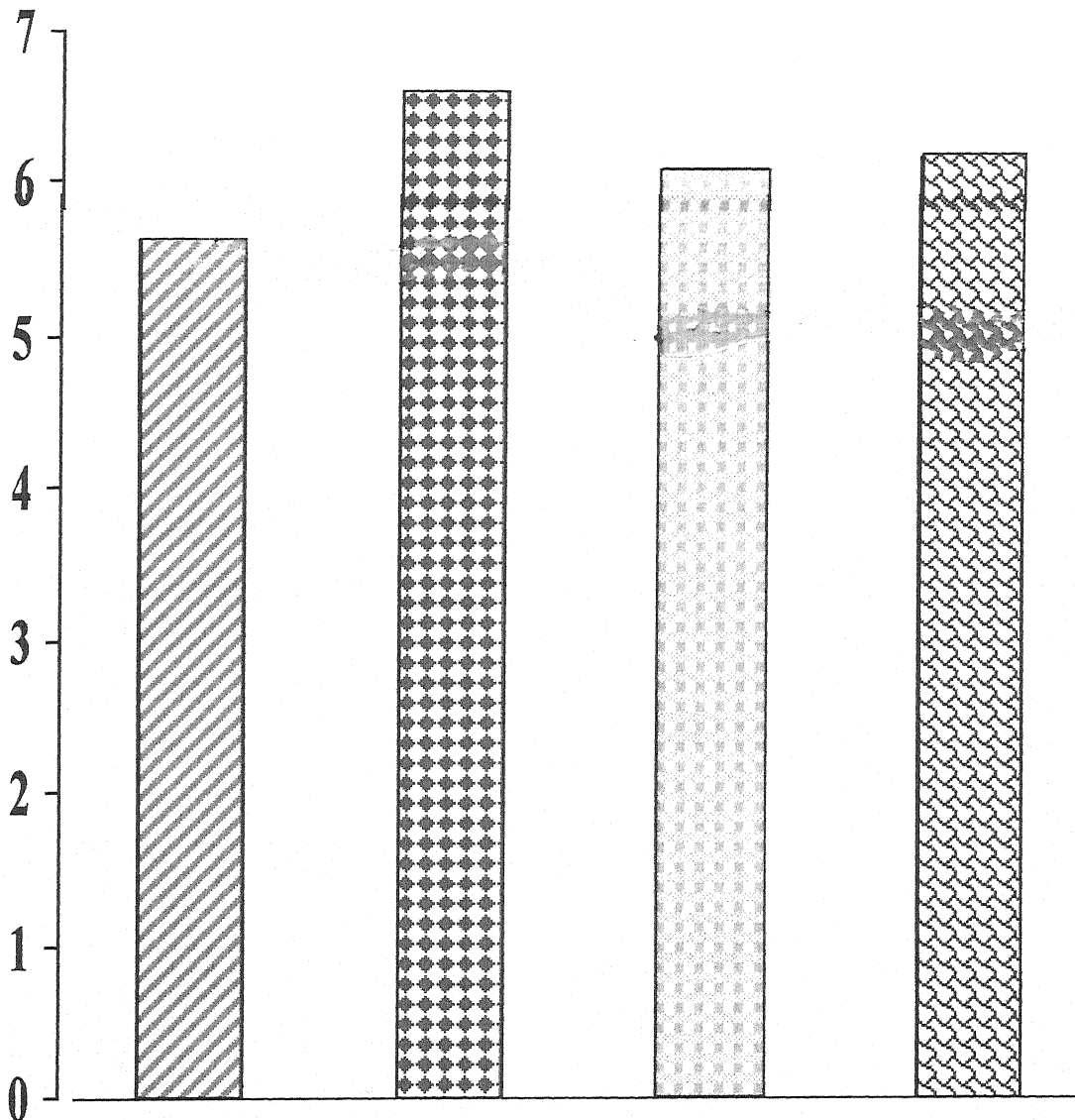
7
6
5
4
3
2
1
0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group
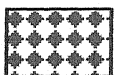
Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

तालिका सं. 4.4 को देखने से विदित होता है उपरोक्त सभी छः आलोचनात्मक अनुपातों में से केवल एक आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक था। यह अनुपात कलावर्ग एवं छात्रों के मध्य था।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभी आलोचनात्मक अनुपातों में से 5 आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे विदित होता है कि सभी समूह सामाजिक, संवेगात्मक एवं शैक्षिक रूप से समान रूप से समायोजित थे तथा इन समूहों में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं था। इसका कारण यह लगता है कि सामान्य व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में अपना समायोजन कर लेता है। बहुत कम परिस्थितियों ही ऐसी होती हैं जबकि वह समायोजन करने में असमर्थ हो जाता है। थोड़े बहुत असमायोजन के शिकार सभी व्यक्ति होते हैं। जब व्यक्ति अत्यधिक कुसमायोजित हो जाता है तब असमान्य की श्रेणी में आ जाता है चूँकि प्रस्तुत अध्ययन में सभी समूह सामान्य श्रेणी के थे इसलिए उनके समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपातों के मध्य अन्तर प्राप्त नहीं हुए थे।

सामायोजन को परिभाषित करते हुए **लारेन्स.एफ.शैफर** ने लिखा है–

"समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं को और इन आवश्यकताओं की तुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन बनाए रखता है।"[2]

इस प्रकार सामान्य व्यक्ति सभी परिस्थितियों में सन्तुलन बनाए रखता है। समायोजन केवल पशुओं और पेड़ पौधों में ही नहीं हो पाता है। वहाँ डार्विन का सिद्धान्त लागू होता है। जन्तु और पेड़ पौधों में वातावरण के अनुसार अनुकूलन होता है। उनका जीवन और मरण पर्यावरण पर आधारित होता है। प्रत्येक जीव-जन्तु तथा वनस्पति प्रत्येक स्थान पर नहीं हो पाता है। देवदारू अथवा चीड़ के पेड़ मैदान में नहीं हो सकते हैं। बल्कि पहाड़ों की ऊँचाई पर होते हैं। अखरोट, बदाम आदि भी एक विशेष प्रकार की जलवायु में होते हैं अथवा चाय या कपास भी हर स्थान पर नहीं हो सकती है।

लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसमें यह क्षमता है कि वह प्रत्येक वातावरण के साथ स्वयं को समायोजित कर लेता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य में प्रतिकूल वातावरण को अनुकूल करने की क्षमता होती है। कुछ बालक जो कक्षा में पिछड़ जाते हैं वह अतिरिक्त कार्य करके अथवा अध्यापकों व अभिभावकों की सहायता से अन्य बालकों के समान हो जाते हैं परन्तु इस कार्य के लिए उन्हें अधिक प्रयास करने पड़ते है यदि बालक बुद्धिमान होता है तो उसमें समायोजन की क्षमता अधिक होती है। इस प्रकार के अनेकों अध्ययन हुए हैं जिनसे यह सिद्ध हुआ है कि व्यक्ति के समायोजन में बुद्धि का अत्यधिक योगदान होता है। वास्तविकता यह है कि बुद्धि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। यही कारण है कि मन्द बुद्धि विद्यार्थियों को समायोजन करने में कठिनाई होती है। इस प्रकार सामान्य बालकों का केवल विद्यालय में ही समायोजन अच्छा नहीं होता है अपितु ऐसे बालकों का अपने संवेगों पर भी नियन्त्रण होता है। वह संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं फलस्वरूप उनका संवेगात्मक समायोजन भी उच्च कोटि का होता है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व होने का कारण उनका समाज, परिवार तथा विद्यालय में समायोजन अच्छा होता है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति के साथ वह स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं तथा समय-समय पर दूसरों की सहायता करने के लिए भी तत्पर रहते हैं, परिणाम स्वरूप सभी व्यक्ति उन्हें पसन्द करते हैं। यही कारण है कि सभी समूहों के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपातों के मध्य अन्तर नहीं था। केवल कला एवं छात्रों के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपातों के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर था। यह अन्तर शायद लिंग भेद के कारण था वैसे यह अन्तर होना नहीं चाहिए था।

प्रस्तुत अध्ययन में तृतीय चर बुद्धि था। बुद्धि के सभी समूहों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण नींचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.५
चारों समूहों में बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1.	विज्ञान	104.25	15.92
2.	कला	90.49	15.44
3.	छात्र	95.35	16.33
4.	छात्राऐं	99.39	16.81

GRAPH NO. 5

Table No. 4.5

MEANS OF INTELLIGENCE OF ALL FOUR GROUPS

110
100
90
80
70
60
50
40
30
20
10
0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group

Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group
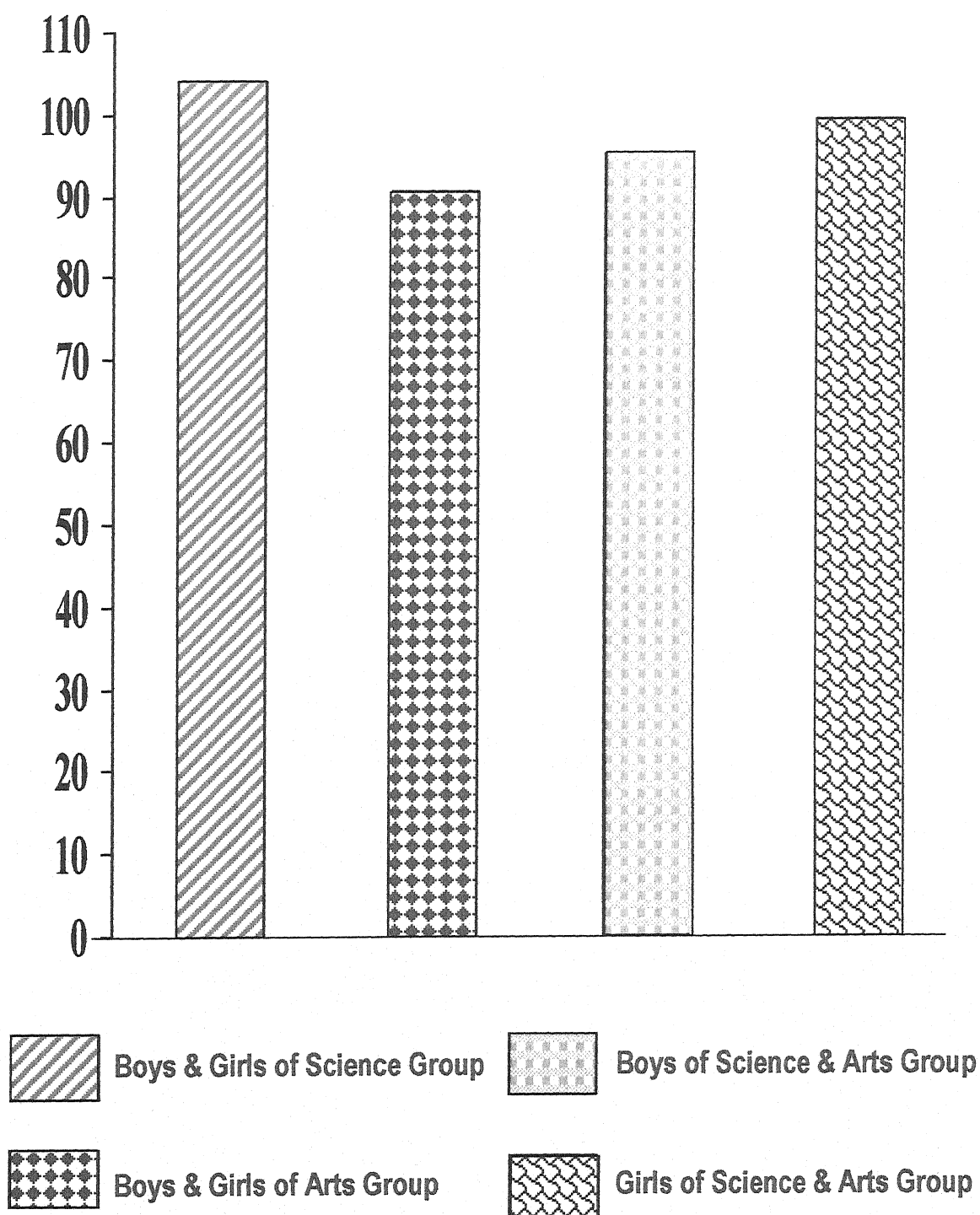
GRAPH NO. 6

Table No. 4.5

STANDARD DEVIATION OF INTELLIGENCE OF ALL FOUR GROUPS
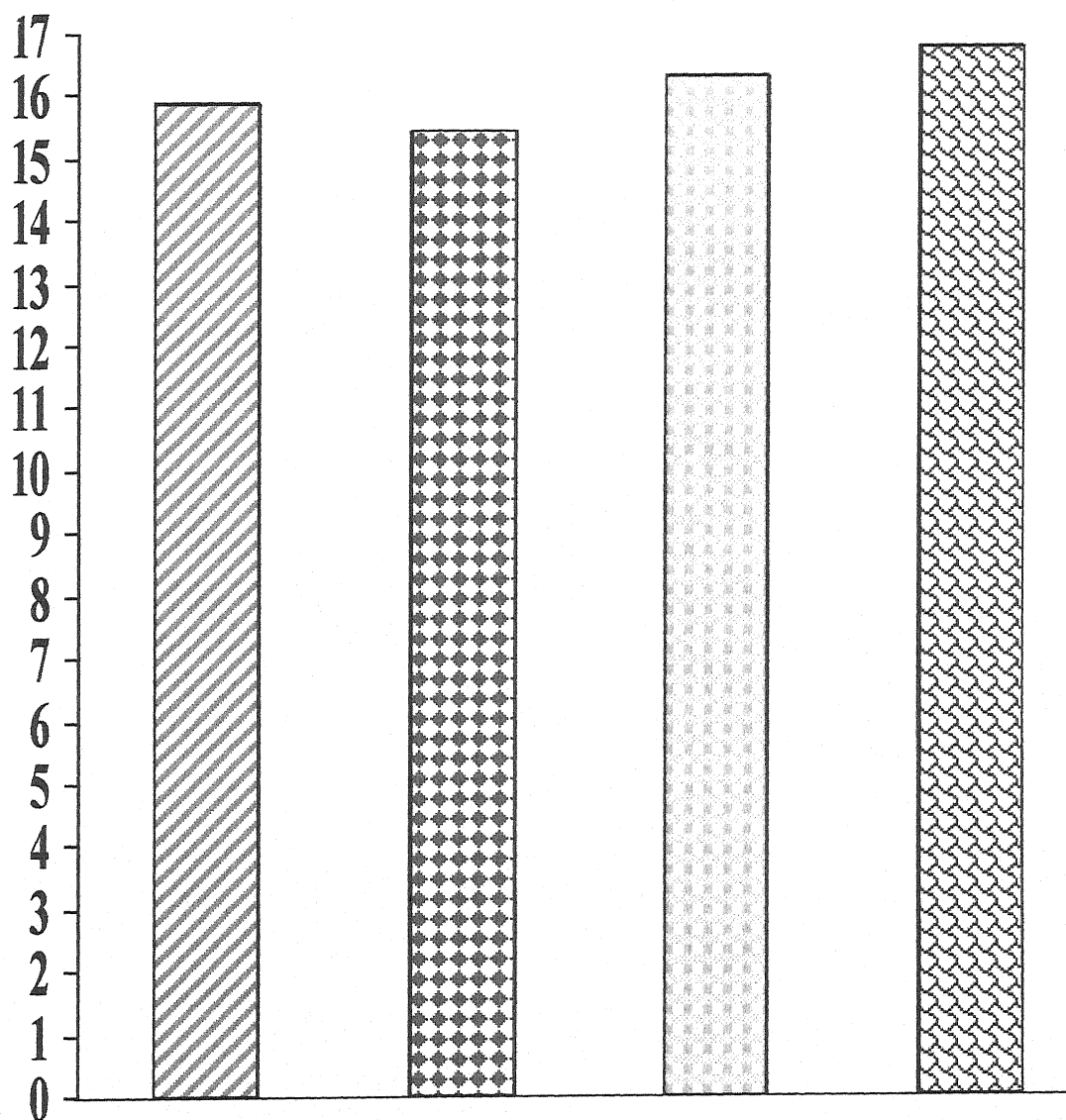
17
16
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group

Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

व्याख्या :

तालिका सं. 4.5 पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि बुद्धि के सभी समूहों में मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 104.25, 90.49, 95.35 तथा 99.39 थे। इस प्रकार अधिकतम मध्यमान 104.25 तथा न्यूनतम मध्यमान 90.49 था। विज्ञान वर्ग तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमानों के मध्य 13.76 का अन्तर था। जिसमें विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक था। छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के मध्य 4.04 का अन्तर था जिसमें छात्राओं का मध्यमान छात्रों के मध्यमान से अधिक था।

मध्यमानों के साथ-साथ सभी समूहों के प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। सभी समूहों के प्रमाणिक विचलन क्रमशः 15.92, 15.44, 16.33 तथा 16.81 थे। विज्ञान वर्ग कि विद्यार्थियों का प्रमाणिक विचलन कला वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक था। छात्राओं को प्रमाणिक विचलन छात्रो से अधिक था।

किन्तु तालिका संख्या 4.5 को देखने से यह ज्ञात नहीं हो सका कि मध्यमानों का अन्तर सार्थक था अथवा नहीं। अतः इस सार्थकता को ज्ञात करने के लिए चारों समूहों में बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात भी ज्ञात किए गए थे। आलोचनात्मक अनुपातों को नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.६

चारों समूहों के बुद्धि के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

क्र.सं.	समूह	विज्ञान	कला	छात्र	छात्राऐं
1.	विज्ञान	--	9.05xx	5.52xx	2.97xx
2.	कला	--	--	3.16xx	5.68xx
3.	छात्र	--	--	--	2.44x
4.	छात्राऐं	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि चारों समूहों की बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे केवल छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक थे। इससे विदित होता है कि सभी समूहों की बुद्धि के मध्य अन्तर था।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभी आलोचनात्मक अनुपात सार्थक थे। विज्ञान एवं कला के विद्यार्थियों के मध्य अन्तर का कारण यह हो सकता है कि कला के विद्यार्थी अधिकतर अपने विषय की गहराई में नहीं जाते हैं जबकि विज्ञान के विद्यार्थी विषय की गहराई तक जाते हैं तथा उसका गहन अध्ययन करते हैं। इससे उनकी बुद्धि तीव्र हो जाती है तथा ताकिकर्ता का विकास हो जाता है। इस प्रकार इन अन्तरों का कारण विषय भेद तथा लिंग भेद हो सकता है। यह भी सम्भव है कि परीक्षण पूर्ण करते समय पूर्ण ध्यान से कार्य न किया गया हो। क्योंकि महिला एवं पुरूष की बुद्धि की संरचना में तो अंतर होता है परन्तु बुद्धिलब्धि के अन्तर महत्वपूर्ण नहीं होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में चतुर्थ चर शैक्षिक उपलब्धि था। शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.७

सभी समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
1.	विज्ञान	55.59	9.37
2.	कला	47.40	9.78
3.	छात्र	51.52	11.36
4.	छात्राऐं	51.47	9.38

GRAPH NO. 8

Table No. 4.7

STANDARD DEVIATION OF ACADEMIC ACHIEVEMENT OF ALL FOUR GROUPS
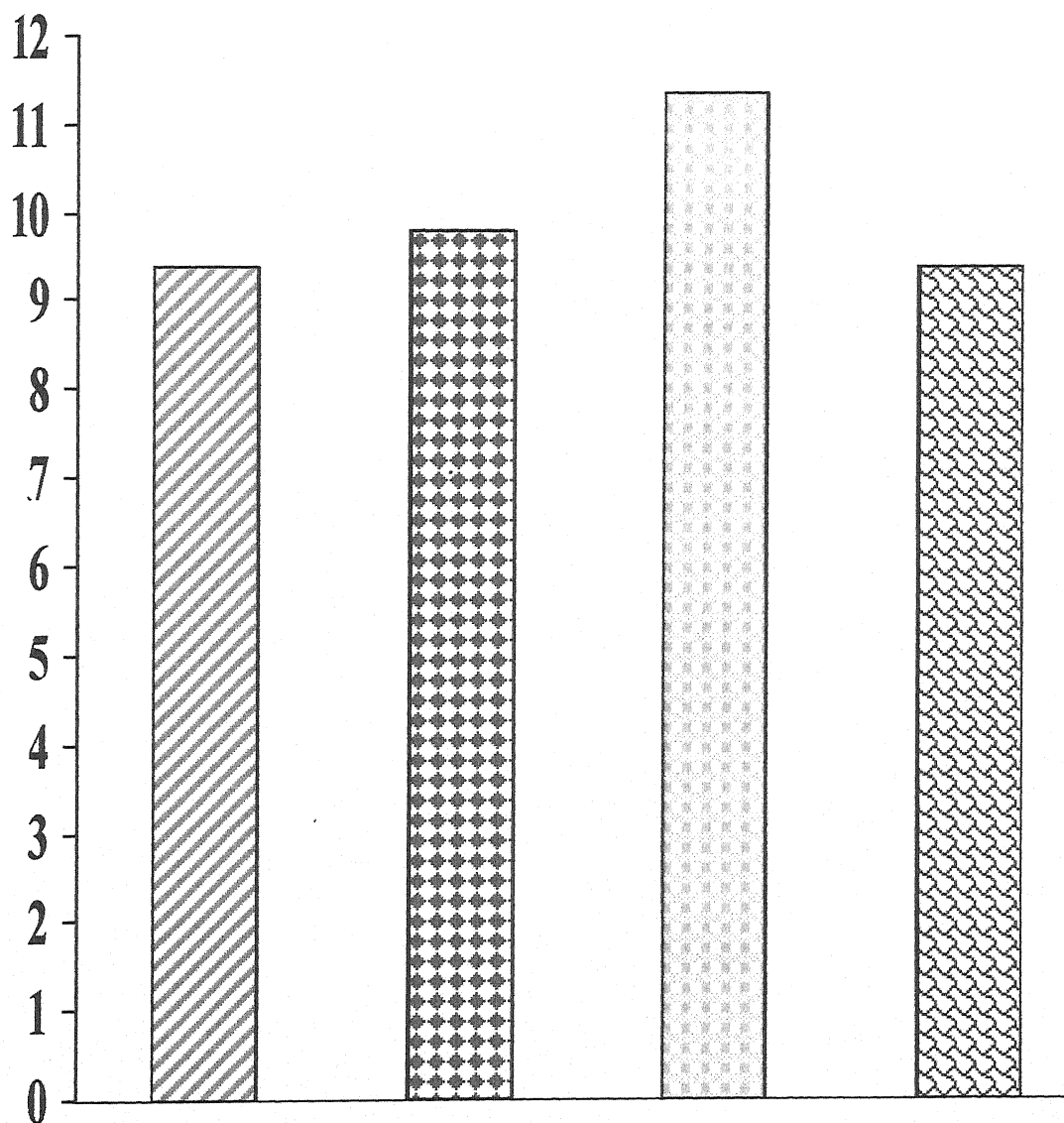
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1
0

Boys & Girls of Science Group

Boys of Science & Arts Group

Boys & Girls of Arts Group

Girls of Science & Arts Group

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों में मध्यमान क्रमशः 55.59, 47.40, 51.52 तथा 51.47 थे। इस प्रकार अधिकतम मध्यमान 55.59 तथा न्यूनतम मध्यमान 47.40 था। विज्ञान वर्ग तथा कला वर्ग के मध्यमानों के मध्य 8.19 का अन्तर था। यह बहुत अधिक अन्तर था। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक था। इसके अतिरिक्त छात्र तथा छात्राओं के मध्यमानों के मध्य .05 का अन्तर था जो कि नगण्य था। इसका कोई महत्व नहीं था।

इसके अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों में प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे जो कि क्रमशः 9.37, 9.78, 11.36 तथा 9.38 थे।

उपरोक्त प्रमाणिक विचलनों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कला वर्ग के विद्यार्थियों का प्रमाणिक विचलन विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक था। छात्रों का प्रमाणिक विचलन छात्राओं से अधिक था।

किन्तु मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलनों को देखने से यह ज्ञात नहीं हो सका कि अन्तर सार्थक थे अथवा नहीं। अतः अन्तर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों में मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण नीचे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.८

चारों समूहों के मध्य शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

क्र.सं.	समूह	विज्ञान	कला	छात्र	छात्राऐं
1.	विज्ञान	--	8.54xx	3.91xx	4.39xx
2.	कला	--	--	3.88xx	4.25xx
3.	छात्र	--	--	--	0.04
4.	छात्राऐं	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि विज्ञान तथा कला, विज्ञान तथा छात्र एवं विज्ञान तथा छात्राओं, कला तथा छात्र, कला तथा छात्राओं के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर था किन्तु छात्र एवं छात्राओं के मध्य किसी भी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं था।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि विज्ञान तथा कला के विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात .01स्तर पर सार्थक था। इसका कारण विषय भेद हो सकता है विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा अध्ययन के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं। वह सुनियोजित ढंग से अपना अध्ययन प्रतिदिन करते हैं। उनके अधिकांशतः विषय प्रयोगात्मक होते हैं अतः उन्हें कक्षा में प्रतिदिन उपस्थित होना पड़ता है। यदि वह अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हो जाते हैं तो उन्हें परीक्षा में असफल होने का डर रहता है। विज्ञान वर्ग के सभी विषय कठिन होते हैं। अतः उन्हें अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है यदि वह प्रतिदिन कठिन परिश्रम नहीं करते हैं तो उनका परीक्षा में सफल होना सम्भव नहीं है।

कलावर्ग के विद्यार्थी कक्षा में कम उपस्थित रहते हैं। उनके अधिकांशतः विषय सैद्धान्तिक होते हैं जिनका अध्ययन स्वाध्याय के द्वारा किया जा सकता है। साथ ही अधिकाँशतः विद्यार्थियों का उद्देश्य परीक्षा में सफल होना होता है उच्च अंक प्राप्त करना नहीं। अतः वह कतिपय दिनों में ही अध्ययन करके येनकेन प्रकारेण परीक्षा में सफल होना चाहते हैं कुछ महत्वाकाँक्षी विद्यार्थी ही ऐसे होते हैं जो कि निरन्तर परिश्रम करते हैं तथा आई.ए.एस., पी.सी.एस. अथवा अन्य उच्च पदों पर आसीन हो पाते हैं। यही कारण है कि विज्ञान वर्ग तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के मध्यमानों तथा आलोचनात्मक अनुपातों में महत्वपूर्ण अन्तर था।

इसके अतिरिक्त कला तथा छात्र, विज्ञान तथा छात्राऐं कला तथा छात्र, कला तथा छात्राओं के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात .01स्तर पर सार्थक थे। यह अन्तर विषय तथा लिंग भेद के कारण हो सकते हैं किन्तु छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के अन्तरों का आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं

था। इनके मध्यमानों के मध्य केवल .05 का अन्तर था जो कि नगण्य था तथा महत्वपूर्ण नहीं था। इसका कारण यह था कि वर्तमान समय में छात्राऐं भी अध्ययन में रूचि लेने लगी हैं वह घर की चार दीबारी से बाहर निकलने लगी है तथा यह दिखा रही है कि वह भी पुरूषों से कम नहीं हैं अतः इसके लिए वह कठिन परिश्रम करती हैं। घर के कार्य भी करतीं हैं साथ ही साथ अपने अध्ययन के प्रति जागरूक भी रहतीं हैं। वर्तमान समय में लड़के अपने अध्ययन के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं वह अध्ययन में रूचि नहीं लेते हैं, परिणाम स्वरूप छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में बृद्धि होती जा रही है तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती जा रही है। बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के परिणामों को देखने से भी विदित होता है कि छात्राओं का परीक्षा परिणाम उच्च रहता है तथा छात्रों का परीक्षा परिणाम निम्न स्तर का रहता है।

छात्रों की अवनति का एक कारण शिक्षित बेरोजगारी का होना है। उन्हें ज्ञात है कि पढ़ने पर भी नौकरी नहीं मिलेगी फिर वह क्यों पढ़ें? दूसरा कारण आरक्षण भी हो सकता है आज का छात्र यह जानता है कि नौकरी अनुसूचित को ही मिलेगी। अनुसूचित के स्थान पर उसकी नियुक्ति सम्भव नहीं है यह स्थितियाँ अध्ययन में बाधक सिद्ध हुई है। आज के छात्र की यदि सामान्य शैक्षिक उपलब्धि है तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह क्या करेगा। हजारों शिक्षित युवक बेकार हैं फिर वह क्यों पढ़े? इस प्रकार इन परिस्थितियों ने छात्रों को कुन्ठित कर दिया है परिणाम स्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती जा रही है।

४.६ प्रसरण विश्लेषण :

इस विधि के प्रतिपादक प्रसिद्ध सांख्यिकी विद आर.ए. फिशर[3] हैं जिन्होंने इस विधि का प्रयोग कृषि सम्बन्धी अनुसन्धानों में किया कृषि जगत के अनुसन्धानों से इस विधि का प्रयोग मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी होने लगा क्योंकि मनोविज्ञान में समान रूप से तुलनात्मक समूहों में विभिन्न स्वतन्त्र चरों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार प्रसरण विश्लेषण की विधि का प्रयोग प्राय उस स्थिति में किया जाता है जबकि प्रायः तुलनात्मक समूहों में हम विभिन्न अभिक्रियाओं का अध्ययन करते हैं तथा यह पता लगाना चाहते हैं कि क्या विभिन्न अभिक्रियाओं के

प्रभावों के कारण मध्यमानों में सार्थक अन्तर है? इस प्रकार प्रसरण विश्लेषण टी परीक्षण का ही विकसित रूप है।

प्रायः यह देखा गया है कि प्रत्येक अध्ययन में दो से अधिक समूहों को लिया जाता है। अतः दो समूहों से अधिक समूहों के मध्य अन्तरों के सार्थकता का अध्ययन प्रसरण विश्लेषण के माध्यम से करते हैं। इसके अन्तर्गत सामान्य अमान्य परिकल्पना को लिया जाता है कि विभिन्न समूहों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं हैं। परिकल्पना इस प्रकार थी–

$$HO = \mu_1 = \mu_2 = \mu_3 = \ldots\ldots \mu_n$$

प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञान, कला, छात्र तथा छात्राऐं चार समूह थे। अध्ययन का उद्देश्य चारो चरों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना था।

उपयोगिता :

प्रसरण विश्लेषण विधि की निम्नलिखित उपयोगिताएं हैं–

1. प्रसरण विश्लेषण विधि द्वारा विभिन्न मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की परख एक ही परीक्षण द्वारा एक ही साथ हो जाती है।
2. परिश्रम कम करना पड़ता है, समय कम लगता है तथा निष्कर्ष भी अधिक उपयोगी होता है।
3. प्रसरण विश्लेषण में अनेक अभिक्रियाओं का उपयोग एक साथ सरलता पूर्वक सम्भव रहता है।
4. प्रसरण विश्लेषण परीक्षण में समूहों का आकार समान हो ऐसा प्रतिबन्ध नहीं होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञान, कला, छात्र तथा छात्राओं के चार समूहों थे तथा उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि चार चर थे। अतः चारों चरों का सभी समूहों में प्रसरण विश्लेषण के द्वारा एफ के मान ज्ञात किये गऐ थे। प्राप्त परिणामों का विवरण तालिका सं. 4.9, 4.10, 4.11 एवं 4.12 में दिया गया है।

तालिका सं. ४.९

चारों समूहों में उपलब्धि प्रेरणा के लिए प्रसरण का विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गयोग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ
मध्यमानों के मध्य	707.12	3	235.708	8.170
समूहों के अन्तर्गत	22964.02	796	28.849	
योग	23671.14	799		

एफ = .01 स्तर पर सार्थक।

व्याख्या :

एफ का मान .01 स्तर पर सार्थक था। उपलब्धि प्रेरणा के चार आलोचनात्मक अनुपात सार्थक थे किन्तु विज्ञान तथा छात्राऐं एवं छात्र-छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। यह अन्तर किस कारण से था इसका विवरण इसी अध्याय में पूर्व में दिया जा चुका है। एफ का मान .01स्तर पर सार्थक था इसलिए-

$HO = \mu_1 = \mu_2 = \mu_3 = \mu_4$ को स्वीकार नहीं किया गया।

तालिका सं. ४.१०

चारों समूहों में समायोजन के लिए प्रसरण का विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गयोग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ
मध्यमानों के मध्य	190.13	3	63.377	1.687
समूहों के अन्तर्गत	29899.12	796	37.562	
योग	30089.25	799		

एफ = किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं।

व्याख्या :

चारों समूहों के समायोजन के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था। चारों समूहों के समायोजन के आलोचनात्मक अनुपातों की गणना करने पर ज्ञात हुआ कि कला तथा छात्रों के आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक थे तथा अन्य समूहों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे विदित होता है कि सभी समूह शैक्षिक संवेगात्मक तथा सामाजिक रूप से समायोजित थे। एफ का

मान भी किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था। इसलिए यहाँ पर यह समीकरण स्वीकार किया गया कि–

$$HO = \mu_1 = \mu_2 = \mu_3 = \mu_4$$

तालिका सं. ४.११

चारों समूहों में बुद्धि के लिए प्रसरण का विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गयोग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ
मध्यमानों के मध्य	20548.14	3	6849.380	27.127
समूहों के अन्तर्गत	200983.69	796	252.492	
योग	221531.83	799		

एफ = .01 स्तर पर सार्थक।

व्याख्या :

चारों समूहों के बुद्धि के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर था। चारों समूहों में से किसी भी समूह के मध्यमान समान नहीं थे। जब आलोचनात्मक अनुपातों की गणना की गई तो यह विदित हुआ कि सभी समूहों के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात सार्थक थे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विज्ञान, कला, छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि समान नहीं थी इसमें पर्याप्त अन्तर था। ऐसा किस कारण से था इसका विवरण इसी अध्याय में पूर्व में किया जा चुका है। एफ का मान भी .01 स्तर पर सार्थक था। इसलिए यहाँ पर भी यह समीकरण $HO = \mu_1 = \mu_2 = \mu_3 = \mu_4$ को स्वीकार नहीं किया गया।

तालिका सं. ४.१२

चारों समूहों में शैक्षिक उपलब्धि के लिए प्रसरण का विश्लेषण

प्रसरण स्रोत	वर्गयोग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ
मध्यमानों के मध्य	6699.62	3	2233.207	22.319
समूहों के अन्तर्गत	79648.05	796	100.060	
योग	86347.67	799		

एफ = .01 स्तर पर सार्थक।

व्याख्या :

चारों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य अन्तर था। इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए आलोचनात्मक अनुपातों की गणना की गई थी। जिनमें सभी समूहों के आलोचनात्मक अनुपात सार्थक थे। केवल छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। ऐसा किस कारण से था। इसका विवरण इसी अध्याय में किया जा चुका है। एफ का मान भी .01 स्तर पर सार्थक था अतः यहाँ पर भी यह समीकरण–

$HO = \mu_1 = \mu_2 = \mu_3 = \mu_4$ को स्वीकार नहीं किया गया था।

४.७ चरों पर नियन्त्रण :

प्रस्तुत शोधकार्य में उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि चार चर थे। अतः उपलब्धि प्रेरणा समायोजन तथा बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसका अध्ययन करना आवश्यक समझा गया। क्योंकि इन तीनों चरों का शैक्षिक उपलब्धि पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। अनेकों अध्ययनों में भी यह देखा गया है कि इन तीनों चरों का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक रहा है। इस प्रकार का विवरण पहले दिया जा चुका है। मूल प्रश्न यह था कि यदि किसी एक चर को नियन्त्रित कर दिया जाऐ तो अन्य दूसरे वर्ग का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसीलिए अन्य तीनों चरों पर नियन्त्रत रख कर शैक्षिक उपलब्धि के अन्तरों का अध्ययन किया गया था। सभी समूहों में यही किया गया था। इनका विवरण आगे प्रस्तुत किया गया है।

समूह इस प्रकार थे–

1. उच्च समूह = $M + \sigma_1$ से अधिक
2. सामान्य समूह = $M \pm \sigma_1$
3. निम्न समूह = $M - \sigma_1$ से कम

यही प्रक्रिया प्रत्येक चर में अपनाई गई थी। सर्वप्रथम उपलब्धि प्रेरणा को नियन्त्रित करके शेष तीनों चरों के अन्तरों की सार्थकता को परखा गया था। इसके

लिए उनके मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा आलोचनात्मक अनुपातों को ज्ञात किया गया था। प्राप्त परिणाम नीचे प्रस्तुत किए गए हैं-

तालिका सं. ४.१३

उपलब्धि प्रेरणा को नियंत्रित करने पर समायोजन, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	समायोजन		बुद्धि		शैक्षिक उपलब्धि	
		मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.
1.	उच्च	11.48	6.29	100.03	16.50	53.53	10.14
2.	सामान्य	11.21	5.65	99.93	16.46	51.58	10.47
3.	निम्न	13.44	5.93	88.27	13.88	46.09	9.52

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि उच्च समूह के छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमश 11.48 एवं 6.29 थे, सामान्य समूह के छात्र छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 11.21एवं 5.65 थे तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 13.44 एवं 5.93 थे।

इन्ही तीनों समूहों के बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। जिनमें उच्च समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 100.03 एवं 16.50 थे सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 99.93 एवं 16.46 थे तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 88.27 एवं 13.88 थे।

सामायोजन तथा बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात करने के पश्चात् शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। उच्च समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 53.53 एवं 10.14 थे, सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 51.58 एवं 10.47 थे तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 46.09 एवं 9.52 थे।

उपरोक्त मध्यमानों एवं प्रमाणिक विचलनों को देखने से यह विदित नहीं हो सका कि उपलब्धि प्रेरणा को नियन्त्रित करने पर समायोजन तथा बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। अतः इस प्रभाव को ज्ञात करने के लिए तीनों समूहों के तीनों चरों के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात भी ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण तालिका 4.14 में किया गया है।

तालिका सं. ४.१४

उपलब्धि प्रेरणा को नियंत्रित करने पर समायोजन, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

समूह	समायोजन	बुद्धि	शैक्षिक उपलब्धि
उच्च तथा निम्न	6.53^{xx}	11.28^{xx}	19.27^{xx}
उच्च तथा सामान्य	5.87^{xx}	19.11^{xx}	4.53^{xx}
सामान्य तथा निम्न	0.84	1.69	14.88

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि उपलब्धि प्रेरणा को नियन्त्रित करने पर उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .01स्तर पर सार्थक थे किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे प्रतीत होता है कि उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन का सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके अतिरिक्त उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे विदित होता है कि उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि का सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु

सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र, छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी बुद्धि का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

टिप्पणी :

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य लक्ष्य अन्य चरों को नियन्त्रित करके यह देखना था कि शैक्षिक उपलब्धि पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है। अतः यहाँ पर उपलब्धि प्रेरणा को नियन्त्रित करके समायोजन तथा बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है यह देखा गया था तालिका सं. 4.13 तथा 4.14 को देखने से विदित होता है कि उच्च तथा सामान्य एवं उच्च तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे। उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलनों के द्वारा भी यही परिणाम प्राप्त हुए थे। सामान्य तथा निम्न के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे तथा उनके मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलनों के द्वारा भी यही विदित होता है कि निम्न समूह के छात्र-छात्राओं का समायोजन तथा बुद्धि निम्न स्तर की होती है तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की होती है इससे स्पष्ट होता है कि उपलब्धि प्रेरणा जहाँ निम्न स्तर की थी वहाँ शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की थी। सच भी यह है कि जब उपलब्धि प्रेरणा कार्य करती है तो वह शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ा देती है।

तालिका सं. ४.१५
समायोजन को नियंत्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	समायोजन		बुद्धि		शैक्षिक उपलब्धि	
		मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.
1.	उच्च	21.04	5.44	100.46	16.02	52.65	10.41
2.	सामान्य	19.86	5.35	91.39	15.99	49.62	9.93
3.	निम्न	15.71	4.92	91.71	16.66	43.86	11.03

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि उच्च समूह के छात्र-छात्राओं उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 21.04 एवं 5.44 थे, सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 19.86

एवं 5.35 थे तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 15.71 एवं 4.92 थे।

इन्हीं तीनों समूहों की बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे जिनमें उच्च समूह के छात्र–छात्राओं की बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 100.46 एवं 16.02 थे, सामान्य समूह के छात्र–छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 91.39 एवं 15.99 थे तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 91.71 एवं 16.66 थे।

उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलनों को ज्ञात करने के पश्चात् तीनों समूहों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। उच्च समूह के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 52.65 एवं 10.41 थे, सामान्य समूह के छात्र–छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 49.62 एवं 9.93 तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 43.86 एवं 11.03 थे।

उपरोक्त मध्यमानों एवं प्रमाणिक विचलनों के द्वारा यह ज्ञात नहीं हो सका कि समायोजन को नियन्त्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। अतः इस प्रभाव को ज्ञात करने के लिए तीनों समूहों के तीनों चरों के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात भी ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण तालिका सं. 4.16 में दिया गया है।

तालिका सं. ४.१६

समायोजन को नियंत्रित करने पर उपलधि प्रेरणा, बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

समूह	उपलब्धि प्रेरणा	बुद्धि	शैक्षिक उपलब्धि
उच्च तथा निम्न	6.27^{xx}	5.60^{xx}	6.92^{xx}
उच्च तथा सामान्य	4.72^{xx}	21.09^{xx}	8.91^{xx}
सामान्य तथा निम्न	4.82^{xx}	.202	4.47^{xx}

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि समायोजन को नियन्त्रित करने पर तीनों समूहों के छात्र-छात्राओं के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे इससे विदित होता है कि तीनों समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे इससे विदित होता है कि इन दोनों समूहों की बुद्धि को उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे विदित होता है कि सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

टिप्पणी :

समायोजन को नियन्त्रित करके यह देखा गया था कि उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है तालिका सं. 4.16 को देखने से विदित होता है कि तीनों ही समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। तीनों ही समूहों के छात्र-छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनत्मक अनुपात .01स्तर पर सार्थक थे उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। यह अन्तर शायद लिंग भेद के कारण था वैसे ऐसा अन्तर होना नहीं चाहिऐ था क्योंकि तालिका सं. 4.15 एवं 4.16 के द्वारा विदित होता है कि जिन छात्र-छात्राओं का समायोजन उच्च कोटि का था उनकी उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि उच्च कोटि की थी तथा जिन छात्र-छात्राओं का समायोजन सामान्य स्तर का था उनकी उपलब्धि प्रेरणा बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा, बुद्धि

एवं शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की थी। इससे विदित होता है कि समायोजन, बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। किन्तु कहीं-कहीं समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा का नकारात्मक सम्बन्ध भी होता है क्योंकि यदि छात्रों को अत्यधिक उपलब्धि प्रेरणा प्रदान की जाती है तो वह चिढ़ने लगते हैं इसका प्रभाव उनके समायोजन पर पड़ता है और वह कुसमायोजित हो जाते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है साथ ही यह सर्वमान्य सत्य है कि जिन छात्रों की बुद्धि निम्न स्तर की होती है उनका समायोजन भी निम्न स्तर का होता है तथा शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की होती है।

तालिका सं. ४.१०
बुद्धि को नियंत्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्र.सं.	समूह	उपलब्धि प्रेरणा		समायोजन		शैक्षिक उपलब्धि	
		मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.	मध्यमान	प्रमाणिक वि.
1.	उच्च	23.01	6.22	10.46	5.91	60.33	7.34
2.	सामान्य	20.74	5.22	10.67	5.62	53.06	7.97
3.	निम्न	18.54	4.54	14.03	6.16	43.56	8.18

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि उच्च समूह के छात्र-छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 23.01 एवं 6.22 थे, सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 20.74 एवं 5.22 थे तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 18.54 एवं 4.54 थे।

इसी प्रकार इन्हीं तीनों समूहों के समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे। उच्च समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 10.46 एवं 5.91 थे, सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 10.67 एवं 5.62 थे तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 14.03 एवं 6.16 थे।

समायोजन के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलनों को ज्ञात करने के पश्चात् तीनों समूहों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन भी ज्ञात किए गए थे।

उच्च समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 60.33 एवं 7.34 थे सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 53.06 एवं 7.97 थे तथा निम्न समूह बाले छात्र-छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 43.56 एवं 8.18 थे।

उपरोक्त मध्यमानों एवं प्रमाणिक विचलनों के द्वारा यह ज्ञात नहीं हो सका कि बुद्धि को नियन्त्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। अतः इस प्रभाव को ज्ञात करने के लिए तीनों समूहों के तीनों चरों के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

तालिका सं. ४.१८

बुद्धि को नियंत्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात

समूह	उपलब्धि प्रेरणा	समायोजन	शैक्षिक उपलब्धि
उच्च तथा निम्न	15.41xx	11.52xx	47.91xx
उच्च तथा सामान्य	7.32xx	9.77xx	20.77xx
सामान्य तथा निम्न	8.46xx	11.59xx	28.78xx

x = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर

xx = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि बुद्धि को नियन्त्रित करने पर तीनों समूह के छात्र-छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे। उच्च तथा निम्न एवं सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे, उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन के माध्यमानों के अन्तरों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इससे विदित होता है कि बुद्धि को नियन्त्रित करने पर तीनों समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च तथा निम्न एवं सामान्य तथा निम्न समूह के

छात्र–छात्राओं के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र–छात्राओं के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण को देखने से विदित होता है कि यदि बुद्धि उच्च समूह के छात्रों की है तो उनकी उपलब्धि प्रेरणा बढ़ जाती है। अनुभव है कि यदि नकारात्मक आत्म प्रत्यय हो तथा बुद्धि उच्च स्तर की हो तो भी शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की नहीं होती है। यदि आकांक्षा स्तर उच्च है तथा बुद्धि भी उच्च है तो ऐसी स्थिति में शैक्षिक उपलब्धि बढ़ जाती है तालिका सं. 4.18 को देखने से विदित होता है कि उच्च तथा सामान्य बुद्धि के छात्रों के समायोजन में अन्तर नहीं था अन्यथा सभी अन्तर सार्थक थे तथा महत्वपूर्ण थे यह परिणाम यह सिद्ध करते है कि बुद्धि का समायोजन, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि में अत्यधिक योगदान होता है। गेट्स एण्ड अदर्स[4] ने भी इस सम्बन्ध में उल्लेख किया है इसी प्रकार उपलब्धि प्रेरणा के सम्बन्ध में मॉर्गन एण्ड किंग[5] ने भी कहा है कि यदि उपलब्धि प्रेरणा अधिक है तो वह शैक्षिक उपलब्धि में निश्चित बृद्धि करेगी। निश्चित है जब बुद्धि को नियन्त्रित कर दिया तो दूसरे चर जैसे समायोजन, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि सभी उसी रूप में घटित होते चले गऐ। स्पष्ट है कि बुद्धि का अत्यधिक प्रभाव अन्य तीनों चरों उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ा है देखा जाता है कि जिनकी बुद्धि निम्न स्तर की है उनकी उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की है।

४.८ सहसम्बन्ध की गणना :

सह सम्बन्ध क्या है?

सामान्य रूप में जब दो वस्तुओं, घटनाओं एवं चर राशियों में परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इसी को सहसम्बन्ध कहते हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि किन्हीं दो राशियों के मध्य जो भी सम्बन्ध प्रतीत होता है उसको सहसम्बन्ध के अर्न्तगत रखा जाता है। केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, शतांश मान तथा विचलन मान ये सभी एक

ही चर राशि के अर्न्तगत प्राप्तांकों को होना प्रस्तुत करते हैं परन्तु सहसम्बन्ध से दो चर राशियों के पारस्परिक सम्बन्ध का बोध होता है। सांख्यकीय विधि द्वारा पारस्परिक सम्बन्धों का बोध भावात्मक रूप में होता है। इसीलिए विभिन्न चर राशियों के मध्य सहसम्बन्धों की गणना की जा सकती हैं जब एक चर राशि के बढ़ने पर दूसरी चर राशि में भी बृद्धि हो तथा एक चर राशि के घटने पर दूसरी चर राशि में भी घटाव हो अथवा एक चर राशि के बढ़ने पर दूसरी में घटाव तथा एक चर राशि के घटने पर दूसरी में बृद्धि हो तो दोनों चर राशियों में सहसम्बन्ध पाया जाता है।

सहसम्बन्ध की परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार से दी हैं–

लैथरौप के अनुसार– " सहसम्बन्ध से दो चरों में पाये जाने वाले संयुक्त सम्बन्ध का पता चलता है।"[6]

ब्लूमर्स व लिन्डक्विस्ट के अनुसार– "जब कभी व्यक्तियों व अन्य तथ्यों में किसी एक आयाम पर मध्यम श्रेणी, मध्यम श्रेणी से ऊपर तथा मध्यम श्रेणी से नीचे के स्तर के गुण होते हैं और साथ ही साथ उसमें किसी एक दूसरे आयाम पर भी क्रमशः मध्यम श्रेणी से ऊपर तथा मध्यम श्रेणी से नीचे के स्तर के गुण होते हैं तब इस प्रकार के सम्बन्ध को सहसम्बन्ध कहते हैं।"[7]

इस अध्ययन में चार चर थे। चरों का क्रम इस प्रकार था–

1. शैक्षिक उपलब्धि
2. उपलब्धि प्रेरणा
3. समायोजन
4. बुद्धि

प्रत्येक समूह में चारों चरों का सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया था। यह कार्य इसलिए किया गया था। जिससे यह देखा जा सके कि चारों चरों में परस्पर किस सीमा तक सहसम्बन्ध था। जिससे उसके सन्दर्भ में सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें। सर्वप्रथम चर शैक्षिक उपलब्धि था। शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में यह कहना उचित न होगा कि प्रत्येक शिक्षक अभिभावक एवं छात्र उच्च शैक्षिक उपलब्धि चाहते हैं।

उसकी प्राप्ति के लिए सतत् प्रयासरत भी रहते हैं किन्तु अभी तक यह ज्ञात नहीं हो सका है कि शैक्षिक उपलब्धि किन कारकों की सहायता से शत-प्रतिशत हो सकेगी। कोई भी अध्यापक यह नहीं कह सकता है किन कारकों की सहायता से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति की जा सकती है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि अध्यापन की किस विधि का चयन करके छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शत-प्रतिशत होगी। मनोवैज्ञानिक तथा अध्यापकों ने इस ओर अत्याधिक प्रयास किए हैं लेकिन अभी तक इसमें सफल नहीं हो पाऐ हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में चारों चरों के परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया था जिसका वर्णन आगे प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं. ४.१९

विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का चारों चरों में परस्पर सहसम्बन्ध

क्र.सं.	चर	शैक्षिक उपलब्धि	उपलब्धि प्रेरणा	समायोजन	बुद्धि
1.	शैक्षिक उपलब्धि	--	0.048	0.225^{xx}	$.257^{xx}$
2.	उपलब्धि प्रेरणा	--	--	0.292^{xx}	$.298^{xx}$
3.	समायोजन	--	--	--	$.534^{xx}$
4.	बुद्धि	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

xx = .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था किन्तु किसी भी स्तर पर सार्थक

नहीं था। शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा .01 स्तर पर सार्थक था एवं शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि के मध्य भी धनात्मक व .01 स्तर पर सार्थक सह सम्बन्ध था। उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था तथा .01स्तर पर सार्थक था एवं उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि के मध्य भी धनात्मक सहसम्बन्ध .01 स्तर पर सार्थक था। समायोजन तथा बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा .01 स्तर पर सार्थक था।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था किन्तु किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था। इससे विदित होता है कि उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है किन्तु सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसका तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं कि सदैव उपलब्धि प्रेरणा प्रदान करने पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होती हो। अर्थात् कतिपय परिस्थितियों ऐसी भी होती हैं कि जब उपलब्धि प्रेरणा प्रदान करने पर शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति नहीं होती हैं। उपलब्धि प्रेरणा के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि में अवनति का कारण यह है कि जब छात्रों से बार-बार अध्ययन करने के लिए कहा जाता है तो छात्र चिड़चिड़े हो जाते हैं और उनके अन्दर अध्ययन के प्रति अरूचि उत्पन्न हो जाती है। परिणाम स्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि में दिन प्रतिदिन अवनति होती जाती है। इसके विपरीत प्रतिभाशाली छात्रों के ऊपर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है वह अपने अध्ययन के प्रति जागरूक रहते हैं तथा उनकी अभिभावकों व शिक्षकों के प्रति किसी प्रकार की द्वेष भावना उत्पन्न नहीं होती है। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि पूर्ववत् ही रहती है।

उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अनेकों अध्ययन हुए है जिनमें **मैकली लैन्ड (1953), प्रयाग मेहता (1969), डी.बी.देसाई (1972), बी.एन. राय (1974), सी.सी. पाठक (1974), पी. प्रकाश (1975), भाटिया (1976), घुमन एम.एस.** के अध्ययन के निष्कर्ष थे कि शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा से धनात्मक रूप से सम्बन्धित होती है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष इन के प्रतिकूल थे। जबकि **पी. मेहता (1969), डी.एन. श्रीवास्त्वत (1970), टी. चार्मस एण्ड जॉर्डन (1959), पीयर्स और बोमैन्ट (1960), करन (1963)** के अध्ययन के निष्कर्ष थे कि शैक्षिक उपलब्धि का उपलब्धि प्रेरणा से नकारात्मक सम्बन्ध होता है। प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष भी इन निष्कर्षो के अनुकूल थे।

इसके अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा .01 स्तर पर सार्थक था। इससे विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन का धनात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि उनके

समायोजन पर आधारित होती है। यदि छात्रों का परिवार, विद्यालय तथा समाज में समायोजन अच्छा होता है तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त यदि उनका समायोजन अच्छा नहीं होता है तो उसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। वर्तमान समय में परिवार विद्यालय तथा समाज कर्तव्यच्युत हो गए हैं। परिवार में छात्रों को पर्याप्त स्नेह नहीं मिल पाता है तथा विद्यालय में शिक्षक उनकी कठिनाइयों की ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं एवं समाज में भी अनैतिकता, तथा भृष्टाचार का बोलबाला है। परिणाम स्वरूप प्रारम्भ से ही छात्रों के परिवार, समाज तथा विद्यालय के प्रति नकारात्मक प्रत्यय विकसित हो जाते हैं तथा वह कुसमायोजित हो जाते हैं। जिनका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता हैं। यही कारण है कि वर्तमान समय में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अवनति होती जा रही है। समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए है जिनमें **बी. एम. हॉराल (1957), ए.के. श्रीवास्तव (1957), ई. फेम्बल (1966), आर. शर्मा (1967), जी.एस. पारीक (1968), रेखा (1974), आई.वी.आर. रेडी (1978), आर.एन. सिंह (1978), बी.एन. सिंह (1979), बी.बी. पाण्डेय (1979)** के अध्ययन के निष्कर्ष थे कि शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन धनात्मक रूप से सम्बन्धित थे। प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष भी इन निष्कर्षो के अनुकूल थे। जबकि **शिखर चन्द्र जैन** के निष्कर्ष के प्रतिकूल थे। उनके अध्ययन का निष्कर्ष था कि शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं था।

शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि के मध्य .01 स्तर पर सार्थक तथा धनात्मक सहसम्बन्ध था। यह सर्वमान्य सत्य है कि शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि का प्रभाव पड़ता है। जिन छात्र–छात्राओं की बुद्धि तीव्र होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है। सामान्य बुद्धिलब्धि वालों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य होती है तथा निम्न बुद्धिलब्धि के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न स्तर की होती है। बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए हैं जिनमें **के. माथुर (1963), एस.एल. चौपड़ा (1964), डी.जी. राव (1965), एस. जैन (1965), एम. बिधु (1968), रामकुमार वसन्त (1969), वी.झा (1970), पी.एस. गुप्ता (1973), जी.के. मखीजा (1973), एस. अग्रवाल (1973), प्रकाश चन्द्र (1975), मेहता (1976), पी.एल. मिश्रा (1976), रवीन्द्र (1977), एन.सी.पी. सिन्हा (1978),**

एस.टी.वी.जी. आचार्यालू (1978), जी.एस. मखीजा (1978), पी.ए. मेनन (1980), एस.एल. चौपड़ा (1982), जी.एस. धमी (1982) के अध्ययन के निष्कर्ष थे कि शैक्षिक उपलब्धि से बुद्धि धनात्मक रूप से सम्बन्धित होती है। प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष इन निष्कर्षों के अनुकूल थे।

उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य .01 स्तर पर नकारात्मक सहसम्बन्ध था इससे विदित होता है कि उपलब्धि प्रेरणा का समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि छात्रों को अधिक प्रेरित किया जाता है तो वह चिड़चिड़े स्वभाव के हो सकते हैं। परिवार समाज एवं विद्यालय में समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं। वी. के. मित्तल ने (1969) अपने अध्ययन में पाया कि उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य समानान्तर सम्बन्ध था। इस प्रकार शोधकार्य के निष्कर्ष इस अध्ययन के प्रतिकूल थे।

उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध था। इससे विदित होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि के छात्र-छात्रायें उपलब्धि प्रेरणा से प्रभावित होते हैं। निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्र-छात्रायें उपलब्धि प्रेरणा से कम प्रभावित होते हैं। उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए हैं जिनमें मेहता ने (1967), डी.वी. देसाई (1973) ने अपने अध्ययन में पाया कि बुद्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था। इसके अतिरिक्त सी.सी. पाइक (1974), पी. प्रकाश (1975), शिवप्पा डी. (1980), एम.एस. घुमन (1980) के निष्कर्ष भी मेहता तथा देसाई के समान थे तथा प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्ष भी इन्हीं अध्ययनों के अनुकूल थे।

समायोजन तथा बुद्धि के मध्य सकारात्मक तथा .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध था। इससे विदित होता है कि समायोजन के ऊपर बुद्धि का प्रभाव पड़ता है। जिन छात्रों की बुद्धिलब्धि उच्च तथा सामान्य होती है वह विद्यालय, समाज तथा परिवार के साथ समायोजन स्थापित कर लेते हैं। किन्तु जिन छात्र-छात्राओं की बुद्धिलब्धि निम्न स्तर की होती है। उनका विद्यालय परिवार तथा समाज के साथ समायोजन उचित रूप से नहीं हो पाता है परिणामस्वरूप उनका व्यक्तित्व विघटित होने लगता है। समायोजन तथा बुद्धि से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए हैं जिनमें

एस. अग्रवाल (1973), जॉर्ज ई. ने अपने अध्ययन में पाया कि समायोजन तथा बुद्धि में सार्थक रूप से धनात्मक सहसम्बन्ध था। इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम इन अध्ययनों के परिणामों के अनुकूल थे।

तालिका सं. ४.२०

कला वर्ग के विद्यार्थियों का चारों चरों में परस्पर सहसम्बन्ध

क्र.सं.	चर	शैक्षिक उपलब्धि	उपलब्धि प्रेरणा	समायोजन	बुद्धि
1.	शैक्षिक उपलब्धि	--	0.234 xx	0.322 xx	.340 xx
2.	उपलब्धि प्रेरणा	--	--	0.260 xx	.222 xx
3.	समायोजन	--	--	--	.624 xx
4.	बुद्धि	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

xx = .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा एवं उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था जो .01 स्तर पर सार्थक था। शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि एवं समायोजन तथा बुद्धि के मध्य .01 स्तर पर धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध था।

तालिका सं. ४.२१

छात्रों का चारों चरों में परस्पर सहसम्बन्ध

क्र.सं.	चर	शैक्षिक उपलब्धि	उपलब्धि प्रेरणा	समायोजन	बुद्धि
1.	शैक्षिक उपलब्धि	--	-0.112	0.264 xx	.211 xx
2.	उपलब्धि प्रेरणा	--	--	-0.252 xx	.220 xx
3.	समायोजन	--	--	--	.562 xx
4.	बुद्धि	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

xx = .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलबिध प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था तथा किसी भी स्तर पर सार्थक

नहीं था। उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य भी नकारात्मक सहसम्बन्ध था किन्तु .01 स्तर पर सार्थक था। शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि एवं समायोजन तथा बुद्धि के मध्य .01 स्तर पर धनात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध था।

तालिका सं. ४.२२

छात्राओं का चारों चरों में परस्पर सहसम्बन्ध

क्र.सं.	चर	शैक्षिक उपलब्धि	उपलब्धि प्रेरणा	समायोजन	बुद्धि
1.	शैक्षिक उपलब्धि	--	-0.185	0.399xx	.430xx
2.	उपलब्धि प्रेरणा	--	--	-0.295xx	.263xx
3.	समायोजन	--	--	--	.762xx
4.	बुद्धि	--	--	--	--

x = .05 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

xx = .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं उपलब्धि प्रेरणा तथा उपलब्धि प्रेरणा एवं समायोजन के मध्य .01 स्तर पर नकारात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध था। शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि एवं बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा एवं बुद्धि तथा समायोजन एवं बुद्धि तथा समायोजन एवं बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध था तथा .01 स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध था।

इस प्रकार तालिका सं. 4.19, 4.20, 4.21 तथा 4.22 लगभग समान परिणामों की ओर संकेत कर रहीं हैं।

४.९ आंशिक सहसम्बन्ध :

दो चरों में सहसम्बन्ध कभी-कभी तीसरे चर पर भी आधारित होता है। उदाहरणार्थ प्रायः बालकों की ऊंचाई तथा भार में सहसम्बन्ध उनकी आयु पर भी निर्भर करता है इस प्रकार जब कभी हमें आयु तथा भार के दो चरों में शुद्ध रूप से

सहसम्बन्ध गुणांक ज्ञात करने की आवश्यकता होती है। उस स्थिति में हमें उन दोनों चरों के सहसम्बन्ध गुणांकों में से तीसरे चर के प्रभाव को अलग कर देना पड़ता है और इसके पश्चात् जो सहम्बन्ध गुणांक शेष रहता है उसे आंशिक सहसम्बन्ध कहते है। ऐसे सहसम्बन्ध को प्रायः $r_{12.3}$ के सांकेतिक चिन्ह द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त दो चरों के शुद्ध सहसम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए न केवल तीसरे चर की बल्कि कभी-कभी चौथे तथा पांचवे चरों के प्रभाव को भी अलग करने की आवश्यकता पड़ती है। अतः जब कभी दो चरों में शुद्ध सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए तीसरे चर के प्रभाव को स्थिर कर देना पड़ता है (या फिर उसके प्रभाव को अलग रखा जाता है) उस स्थिति में सहसम्बन्ध को प्रथम स्तरीय आंशिक सहसम्बन्ध कहते हैं। इसी प्रकार जब दो चरों में शुद्ध सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए अन्य दो सम्बन्धित चरों के प्रभावों को अलग या स्थिर रखा जाता है, उस स्थिति में प्राप्त आंशिक सहसम्बन्ध द्विस्तरीय आंशिक सहसम्बन्ध होता है। ऐसी स्थिति में आंशिक सहसम्बन्ध का सांकेतिक चिन्ह $r_{12,34}$ होता है इसका अर्थ यह होता है कि पहले तथा दूसरे चरों के सहसम्बन्ध गुणांक के मान में से तीसरे तथा चौथे चरों के प्रभाव को अलग कर दिया गया है। इसी प्रकार $r_{13.24}$ का अर्थ है कि यहां पहले चर तथा तीसरे चर के r में से दूसरे व चौथे चरों के प्रभावों को अलग कर दिया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि चार चर थे। अतः यहां द्विस्तरीय आंशिक सहसम्बन्ध $r_{12.34}$ का उपयोग किया गया था।

तालिका सं. ४.२३
चारों समूहों तथा चारों चरों के मध्य आंशिक सहसम्बन्ध

समूह	12.34	13.24	14.23	23.14	24.13	34.12
विज्ञान	0.016	0.167	0.044	-0.234	0.071	0.515
कला	-0.152	0.125	0.179	-0.137	0.052	0.565
छात्र	-0.052	0.164	0.080	-0.213	0.031	0.531
छात्राऐं	-0.065	0.111	0.209	-0.143	0.047	0.515

व्याख्या :

उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि समायोजन तथा बुद्धि को अलग करने पर शैक्षिक उपलबिध तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य सहसम्बन्ध नकारात्मक

थे। उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि को अलग करने पर शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध सकारात्मक थे। उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन को अलग करने पर शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध सकारात्मक थे। शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि को अलग करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध नकारात्मक थे। शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन को अलग करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध सकारात्मक थे। शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा को अलग करने पर उपलब्धि प्रेरणा बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध सकारात्मक थे।

इसी प्रकार के परिणाम पहले भी प्राप्त हुए हैं जिनका विवरण तालिका सं. 4.19 से लेकर 4.22 में दिया गया है।

४.१० β गुणक के रूप में बहुगुण R :

R^2 की अभिव्यक्ति बीटा गुणक तथा शून्य सहसम्बन्ध (Zero Order) r के रूप में की जा सकती है।

बीटा (β) गुणक :

आंशिक प्रतिगमन गुणांक को जब σ प्राप्तांकों के रूप में व्यक्त किया जाता है। तब इसे बीटा गुणक कहा जाता है।

आंशिक प्रतिगमन गुणक (b'S) :

आंशिक प्रतिगमन गुणक (b'S) प्रतिगमन समीकरण में चरों का भार (Weight) प्रदान करता है, अर्थात् प्राप्तांकों में भार को X_2, X_3 आदि के रूप में नामपत्रित किया जाता है।

४.११ बहुसहसम्बन्ध की गणना :

यह सहसम्बन्ध वास्तविक प्राप्तांक तथा प्रतिगमन समीकरण के द्वारा ज्ञात किए गए अंकों के मध्य सहसम्बन्ध होता है। यह सदैव धनात्मक ही होता है तथा एक से अधिक नहीं होता है।

यदि इस R को शून्य सहसम्बन्ध और बीटा गुणक के द्वारा निकाला जाये तो यह आश्रित चर पर स्वतंत्र चरों का कितना भार होता है यह प्रदर्शित कर देता है।

तालिका सं. ४.२४
चारों समूहों में चारों चरों के बीटा गुणक

क्र.सं.	बीटा गुणक	विज्ञान	कला	छात्र	छात्राऐं
1.	12.34	0.053	0.156	0.078	0.200
2.	13.24	0.088	0.040	0.054	0.060
3.	14.23	0.231	0.275	0.248	0.385

व्याख्या :

चारों समूहों में केवल शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर मानकर तथा अन्य चरों को स्वतन्त्र चर मानकर सभी समूहों में समीकरण ज्ञात किए गए थे। समीकरण इस प्रकार था–

(234) = 12.34 12 + 13.24 13 + 14.23 14

विज्ञान :

(234) = .053 x –.048 + .088 x .225 + 0.231 x .157
= .003 + .02 + .036
= .053
= .2302
= .1915 से .2689

इस समीकरण से यह ज्ञात होता है कि इन चरों का केवल 19 प्रतिशत योगदान ही शैक्षिक उपलब्धि में है। जिसे अधिक महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता।

कला :

(234) = .156 x 0.234 + .040 x .322 + .275 x .340
= .037 + .013 + .094
= .0695
= .2636
= .2266 से .3006

इस समीकरण के द्वारा यह ज्ञात होता है कि इन चरों का केवल 23 प्रतिशत योगदान ही शैक्षिक उपलब्धि में था। जिसको अधिक महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। इससे प्रतीत होता है कि अन्य चरों को भी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ा।

छात्र :

$$(234) = .078 \times .112 + .054 \times .264 + .248 \times .211$$
$$= .0087 + .0143 + .0532$$
$$= .0579$$
$$= .2406$$
$$= .2024 \text{ से } .2788$$

इस समीकरण के द्वारा यह ज्ञात होता है कि इन चरों का केवल 20 प्रतिशत योगदान ही शैक्षिक उपलब्धि में था। जिसको बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। इससे प्रतीत होता है कि अन्य चरों को भी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ा।

छात्राऐं :

$$(234) = .200 \times -.185 + .060 \times .399 + .385 \times .430$$
$$= .037 + .9234 + .1656$$
$$= .1519$$
$$= .3898$$
$$= .3592 \text{ से } .4204$$

इस समीकरण से यह ज्ञात होता है कि इन चरों का केवल 36 प्रतिशत योगदान ही शैक्षिक उपलब्धि में है। जिसको बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। इससे प्रतीत होता है कि अन्य चरों को भी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ा।

टिप्पणी :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि विज्ञान के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में इन चरों का केवल 19 प्रतिशत योगदान था। कला के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में इन चरों का केवल 23 प्रतिशत योगदान था। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में इन चरों का 20 प्रतिशत योगदान था तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में इन चरों का केवल 36 प्रतिशत योगदान था। इससे प्रतीत होता है कि सभी समूहों की शैक्षिक उपलब्धि में 64 प्रतिशत अन्य चरों का योगदान था लेकिन उनका अध्ययन यहाँ नहीं किया गया है।

****

REFERENCES

(1) F.N. Kerlinger- Interpretation takes the results of analysis inferences, pertinent to the research relations studied and draws, conclusions about these relations.

F.N. Kerlinger Foundations of behavioural research New York, Holt, renehart and winston, Inc. 1954, p. 603.

(2) लरेन्स एफ शैफर- फीयर एण्ड करेज इन एरियल कम्बैक्ट जरनल कन्सल्ट साइक्लॉजी, पृ.सं. 143 (1947)

(3) आर.ए. फिशर- स्टैटिस्टकल मैथड्स फॉर रिसर्च वर्क्स ऑलिवर एण्ड बॉयज 1941

(4) गेट्स एण्ड अदर्स- ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, मैकमिलन एण्ड कम्पनी न्यूयार्क 1958

(5) सी.टी. मॉर्गन एण्ड आर.ए. किंग- इन्ट्रोडेक्शन टू साइक्लॉजी टाटा मैकग्रोहिल पब्लिशिंग कम्पनी 1978

(6) एच.के. कपिल- एलीमेटस ऑफ स्टैटिस्टिक्स इन सोशल साइन्सिज, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ. 333

(7) वहीं- पृ. 333

✻✻✻✻✻✻

अध्याय-पंचम
निष्कर्ष सुझाव
तथा भविष्य में
शोधकार्य की रूपरेखा

अध्याय-पंचम
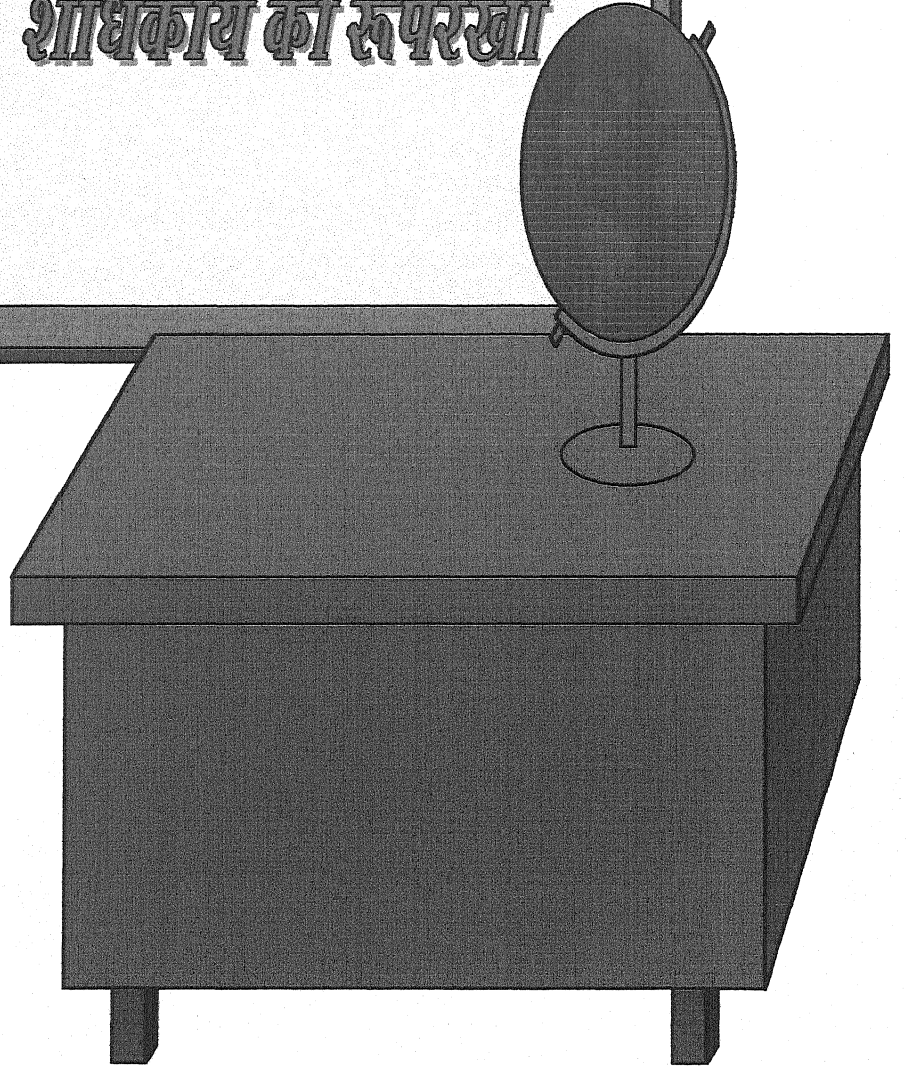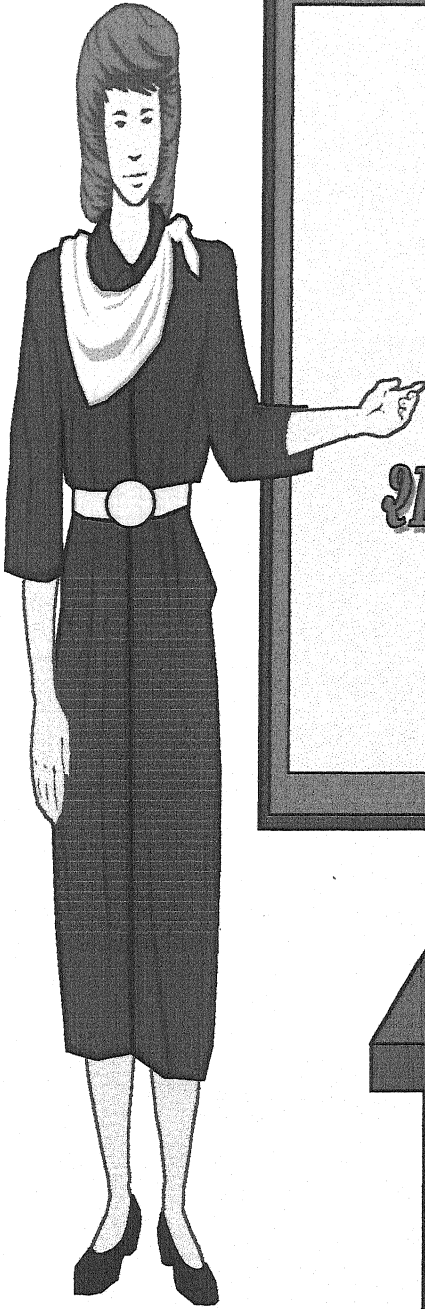
निष्कर्ष, सुझाव तथा भविष्य में शोधकार्य की रूपरेखा

५.१ प्रस्तावना :

सम्पूर्ण शोधकार्य के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात् मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं को स्वीकृत करना अथवा अस्वीकृत करना होता है, प्रस्तुत शोधकार्य में छः उद्देश्य लिए गए थे और उन्हीं के साथ-साथ उनकी परिकल्पनायें भी निर्धारित की गई थी। जिनका विवरण प्रथम अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है। इसलिए यहां यह ज्ञात करना अनिवार्य हो गया था कि अन्तिम परिणाम क्या प्राप्त हुए। इस कार्य हेतु विज्ञान, कला, छात्र एवं छात्रायें चार समूह बनाये गये थे। चारों चरों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। एक परीक्षण तथा सहसम्बन्धों की भी गणना की गयी थी। इन गणनाओं के आधार पर निष्कर्ष एवं सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

५.२ उद्देश्य तथा उपकल्पनाऐं :

इस शोध कार्य का सर्वप्रथम उद्देश्य था-

"विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तरों की सार्थकता ज्ञात करना।"

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित उपकल्पना बनाई गई थी-

"विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।"

विवेचन :

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए सर्वप्रथम बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे जिनका विवरण तालिका सं. 4.1 से लेकर 4.8 में दिया गया है। सभी समूहों की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे केवल छात्र एवं छात्राओं के आलोचनात्मक .05 स्तर पर सार्थक थे। इसी प्रकार सभी समूहों के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपातों में से चार आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे। विज्ञान एवं छात्राऐं तथा छात्र तथा छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। समायोजन के सभी 5 आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे केवल कला एवं छात्रों का आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक था तथा शैक्षिक उपलब्धि के सभी समूहों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे केवल छात्र एवं छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।

मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए एक परीक्षण की गणना की गई थी। तालिकाएं 4.9, 4.11 तथा 4.12 के द्वारा विदित होता है कि बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में एफ का मूल्य .01 स्तर पर सार्थक था किन्तु समायोजन के सन्दर्भ में एफ का मूल्य किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था जिसका वर्णन तालिका सं. 4.11 में किया गया है। इन सभी अन्तरों के कारण की व्याख्या चतुर्थ अध्याय में की जा चुकी है।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभी समूहों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर था किन्तु छात्र एवं छात्राऐं तथा विज्ञान एवं छात्राओं के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था। समायोजन के सभी आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे केवल कला एवं छात्राओं के मध्य अन्तर था।

इस प्रकार प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति हो गई किन्तु प्रथम उद्देश्य की परिकल्पना को आधा ही स्वीकार किया जा सका।

इस शोधकार्य का दूसरा उद्देश्य था।

''विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्धों की सार्थकता ज्ञात करना।''

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित उपकल्पना बनाई गई थी–

''विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध है।''

विवेचन :

इस उपकल्पना के परीक्षण के लिए समूहों में बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के परस्पर सहसम्बन्धों की गणना की गई थी जिनका विवरण तालिका सं. 4.19 से लेकर 4.22 में दिया है। इन तालिकाओं को देखने से विदित होता है कि सभी समूहों के चारों चरों में परस्पर 24 सहसम्बन्ध ज्ञात किए गए थे। इसमें 16 सहसम्बन्ध सकारात्मक थे तथा .01 स्तर पर सार्थक थे केवल 8 सहसम्बन्ध नकारात्मक थे। इसमें से 6 सहसम्बन्ध .01 स्तर पर सार्थक थे, किन्तु 2 सहसम्बन्ध किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इस प्रकार सभी समूहों में शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि एवं समायोजन तथा बुद्धि के मध्य .01 स्तर पर धनात्मक सहसम्बन्ध था। सभी समूहों में उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन के मध्य .01 स्तर पर नकारात्मक सहसम्बन्ध था। कला के छात्र-छात्राओं तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य .01 स्तर पर नकारात्मक रूप से सार्थक सहसम्बन्ध था। विज्ञान के छात्र-छात्राओं तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था किन्तु किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।

इस सम्बन्ध में आंशिक सहसम्बन्ध भी ज्ञात किए गए जो तालिका सं. 4.23 में प्रस्तुत किए गए हैं। उनमें भी अधिकांश सहसम्बन्ध सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण हैं। और उनमें से कुछ चरों को हटाने पर नकारात्मक थे। इसलिए यह कहना कि सहसम्बन्ध नहीं थे सम्भव नहीं है कुछ चरों में अवश्य थे तथा कुछ चरों में

नकारात्मक थे। ऐसी परिस्थिति में इस परिकल्पना को आधा स्वीकार नहीं किया गया था। इस प्रकार दूसरे उद्देश्य की प्राप्ति हो गई।

इस शोध कार्य का **तृतीय उद्देश्य** था।

"लिंग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।"

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित **उपकल्पना** बनाई गई थी–

"लिंगभेद के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

विवेचन :

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए छात्र–छात्राओं के चारों चरों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। जिनका विवरण तालिका सं. 4.1 से लेकर 4.8 के अन्तर्गत दिया गया है। इन तालिकाओं के द्वारा विदित होता है कि छात्र–छात्राओं के बुद्धि के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 95.35 तथा 16.33 एवं 99.39 तथा 16.81 थे व आलोचनात्मक अनुपात 2.44 था जो .05 स्तर पर सार्थक था। उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 20.37 तथा 5.45 एवं 20.80 तथा 4.45 थे तथा आलोचनात्मक अनुपात 0.78 था जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था।

समायोजन के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 12.36 तथा 6.09 एवं 11.39 तथा 6.17 थे तथा आलोचनात्मक अनुपात 1.58 था जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था।

इसी प्रकार शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 51.52 तथा 11.36 एवं 51.47 तथा 9.38 थे व आलोचनात्मक अनुपात 0.04 था जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान और प्रमाणिक विचलनों के मध्य अन्तर था लेकिन नगण्य था तथा आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे केंवल छात्र-छात्राओं की बुद्धि के मध्यमानों तथा प्रमाणिक विचलनों के मध्य अन्तर था तथा आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक था। इससे विदित होता है कि छात्र-छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर नहीं था। किन्तु बुद्धि के मध्य सार्थक अन्तर था।

इस प्रकार तृतीय उद्देश्य की प्राप्ति हो गई थी किन्तु उपकल्पना को आधा ही स्वीकार किया जा सका।

इस शोध कार्य का **चतुर्थ उद्देश्य** था-

"कला एवं विज्ञान के आधार पर विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना।"

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित **उपकल्पना** बनाई गई थी-

"कला एवं विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है।"

विवेचन :

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए कला एवं विज्ञान के छात्र-छात्राओं के चारों चरों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे- जिनका विवरण तालिका से. 4.1 से लेकर 4.8 में दिया गया है। कला एवं विज्ञान के किशोर किशोरियों के बुद्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 90.49 तथा 14.44 एवं 104.25 तथा 15.92 थे तथा आलोचनात्मक अनुपात 9.05 था जो कि .01 स्तर पर सार्थक था। उपलब्धि प्रेरणा के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 19.29 तथा 4.72 एवं 21.90 तथा 5.81 थे तथा आलोचनात्मक अनुपात 4.96 था जो कि .01 स्तर पर सार्थक था। समायोजन के मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 12.37 तथा 6.61 एवं 11.39 तथा 5.60 थे तथा आलोचनात्मक

अनुपात 1.59 था जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था। इसके अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 47.40 तथा 9.78 एवं 55.59 तथा 9.37 थे व आलोचनात्मक अनुपात 8.54 था जो कि .01 स्तर पर सार्थक था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान के किशोरों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर था किन्तु समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं था।

इसका कारण है कि कला एवं विज्ञान के छात्र उचित रूप से समायोजित हो जाते हैं।

इस प्रकार चतुर्थ उद्देश्य की प्राप्ति हो गई किन्तु उपकल्पना को आधा ही स्वीकार किया जा सका।

इस शोधकार्य का **पंचम उद्देश्य** था–

''यह ज्ञात करना कि यदि बुद्धि को नियंत्रित कर दें तब उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?''

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित **उपकल्पना** बनाई गई थी–

''बुद्धि को नियंत्रित करने पर उपलब्धि प्रेरणा तथा समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए बुद्धि को नियंत्रित करके सभी 600 विद्यार्थियों के उच्च, सामान्य तथा निम्न तीन समूह बनाये गये थे। इन तीनों समूहों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे सभी समूहों के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे तथा उच्च तथा निम्न एवं सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के समायोजन के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र–छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।

इससे विदित होता है कि बुद्धि को नियंत्रित करने पर तीनों समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा उच्च तथा निम्न एवं सामान्य तथा निम्न समूह के छात्रों के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है किन्तु उच्च तथा सामान्य समूह के छात्रों के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इस प्रकार पंचम उद्देश्य की प्राप्ति हो गई किन्तु उपकल्पना को आधा ही स्वीकार किया जा सका।

प्रस्तुत शोधकार्य का **षष्ठ उद्देश्य** था–

''समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा को अलग–अलग नियंत्रित करके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।''

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित **उपकलपना** बनाई गई थी–

''समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा को अलग–अलग नियंत्रित करने पर शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा को नियंत्रित करके अन्य दूसरे चरों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। प्राप्त परिणामों का विवरण तालिका सं. 4.15, 4.16, 4.17 एवं 4.18 में प्रस्तुत किया गया है।

उपलब्धि प्रेरणा को नियंत्रित करने पर उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र–छात्राओं के समायोजन आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इसके अतिरिक्त उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूहों के छात्र–छात्राओं के बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे। सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र–छात्राओं के बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।

इससे विदित होता है कि उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है किन्तु सामान्य एवं निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

समायोजन को नियंत्रित करके उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात किए गए थे। तीनों समूहों के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे। उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूहों के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु सामान्य एवं निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।

इससे विदित होता है कि समायोजन को नियंत्रित करने पर तीनों समूहों के छात्र-छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च तथा सामान्य एवं उच्च तथा निम्न समूहों के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सामान्य तथा निम्न समूहों के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस प्रकार षष्ठ उद्देश्य की प्राप्ति हो गई किन्तु उपकल्पना को आधा ही स्वीकार किया जा सका।

५.३ परिणाम :

इस कार्य के परिणाम निम्नलिखित थे-

1. विज्ञान एवं छात्र, विज्ञान एवं कला, विज्ञान एवं छात्रायें, कला एवं छात्रायें तथा कला एवं छात्रों की बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे।
2. छात्र एवं छात्राओं की बुद्धि के आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक थे।
3. विज्ञान के विद्यार्थियों का मध्यमान कला के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक था।

4. सभी समूहों के समायोजन के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे केवल कला एवं छात्रों के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक थे।
5. विज्ञान तथा छात्राओं एवं छात्र तथा छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।
6. विज्ञान तथा कला, विज्ञान तथा छात्र, कला तथा छात्र एवं कला तथा छात्राओं के उपलब्धि प्रेरणा के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे।
7. सभी समूहों के शैक्षिक उपलब्धि के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे केवल छात्र एवं छात्राओं के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सर्थक नहीं थे।
8. बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में एफ का मान .01 स्तर पर सार्थक था।
9. समायोजन के संदर्भ में एफ का मान किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था।
10. सभी समूहों के चारों चरों के परस्पर 24 सहसम्बन्ध ज्ञात किये गये थे जिनमें 16 सहसम्बन्ध सकारात्मक थे तथा .01 स्तर पर सार्थक थे। 8 सहसम्बन्ध नकारात्मक थे जिनमें 6 सहसम्बन्ध .01 स्तर पर सार्थक थे किन्तु 2 सहसम्बन्ध किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे।
11. सभी समूहों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि तथा बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा बुद्धि एवं समायोजन तथा बुद्धि के मध्य .01 स्तर पर धनात्मक सहसम्बन्ध था।
12. सभी समूहों में उपलब्धि प्रेरणा का समायोजन के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था जो .01 स्तर पर सार्थक था।
13. कला के विद्यार्थियों तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य .01 स्तर पर नकारात्मक रूप से सार्थक सहसम्बन्ध था।
14. विज्ञान के विद्यार्थियों तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उपलब्धि प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सहसम्बन्ध था किन्तु किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं था।
15. आंशिक सहसम्बन्धों की गणना से भी स्पष्ट हुआ कि कुछ चरों के हटाने पर भी अन्य चरों में सकारात्मक सहसम्बन्ध था।

16. छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। केवल बुद्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .05 स्तर पर सार्थक थे। इस प्रकार छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि प्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं था केवल बुद्धि में अन्तर था।
17. कला एवं विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा, तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात .01 स्तर पर सार्थक थे केवल समायोजन के मध्यमानों के आलोचनात्मक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं थे। इस प्रकार कला एवं विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि, उपलब्धि प्रेरणा तथा शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर था केवल समायोजन में अन्तर नहीं था।
18. बुद्धि को नियंत्रित करने पर तीनों ही समूहों के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ा।
19. बुद्धि को नियंत्रित करने पर उच्च तथा निम्न एवं सामान्य तथा निम्न समूह के विद्यार्थियों के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ा। किन्तु उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर किसी भी स्तर पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा।
20. उपलब्धि प्रेरणा को नियंत्रित करने पर उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ा। सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं के समायोजन तथा बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा।
21. समायोजन को नियंत्रित करने पर तीनों ही समूहों की उपलब्धि प्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ा। किन्तु उच्च तथा निम्न एवं उच्च तथा सामान्य समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ा। सामान्य तथा निम्न समूह के छात्र-छात्राओं की बुद्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर किसी भी स्तर पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा।

22. शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर मानकर अन्य स्वतन्त्र चरों का भार तथा शून्य सहसम्बन्ध के आधार पर बहुसहसम्बन्ध ज्ञात किए गए थे और उनके समीकरण भी लिखे गए थे समीकरणों को देखने पर यह ज्ञात होता है कि अधिक से अधिक प्रस्तुत चरों का 36 प्रतिशत भार अर्थात् इन चरों का केवल 36 प्रतिशत प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ा। अन्य 64 प्रतिशत प्रभाव किन चरों का पड़ा इसका अध्ययन नहीं किया गया है।

५.४ सुझाव :

किसी भी शोध कार्य के पूर्ण होने पर यह प्रयास किया जाता है कि शिक्षा के लिए जनोपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए जायें जो कि शोधकार्य पर आधारित हैं। इस शोधकार्य पर आधारित निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं-

1. शिक्षकों के लिए सुझाव।
2. प्रधानाध्यापकों के लिए सुझाव।
3. अभिभावकों के लिए सुझाव।
4. विद्यार्थियों के लिए सुझाव।

(१) शिक्षकों के लिए सुझाव :

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक के व्यक्तित्व, शिक्षण विधि आदि का प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। अतः शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जो निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षकों को प्रतिभाशाली तथा पिछड़े छात्रों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये।
2. छात्र एवं छात्राओं को उपलब्धि प्रेरणा प्रदान की जानी चाहिए जिससे छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सके।
3. छात्रों को उनकी कठिनाइयों से अवगत कराना चाहिए।
4. छात्र-छात्राओं की कठिनाइयों को समझकर उन्हें सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सके।
5. समय-समय पर छात्र-छात्राओं के अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करके उन्हें उनकी समायोजन सम्बन्धी समस्याओं से अवगत कराना चाहियें।

6. शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करना होना चाहिए।
7. शिक्षकों का व्यवहार तानाशाहीपूर्ण नहीं होना चाहिए क्योंकि तानाशाहीपूर्ण व्यवहार से छात्र–छात्राओं में कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है।
8. शिक्षकों को स्वयं संतुलित होना चाहिए।
9. शिक्षकों का विद्यालय में समायोजन अच्छा होना चाहिए।
10. उचित अध्यापन विधि का प्रयोग करना चाहिए जिससे छात्र स्वयं कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकें।
11. मन्द बुद्धि छात्र–छात्राओं को विशेष सहायता प्रदान करनी चाहिए।
12. उच्च बुद्धि के छात्र–छात्राओं को अधिक कार्य देना चाहिए जिससे वह व्यस्त रह सकें तथा समायोजन सम्बन्धी कठिनाई उत्पन्न न हो।
13. छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे उनकी उपलब्धि प्रेरणा में बृद्धि हो सके तथा समायोजन उच्च कोटि का हो सके।
14. विषय सम्बन्धी कठिनाई को अवश्य दूर कर देना चाहिए, जिससे छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत किया जा सके।
15. शिक्षकों को विद्यालय में मासिक परीक्षा का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्र अपनी प्रगति से अवगत हो सके।
16. शिक्षकों को भी स्वयं के जीवन में कुछ मूल्यों का पालन करना चाहिए तभी विद्यार्थियों से कहना चाहिए और ''परोपदेश कुशल बहुतेरे'' की उक्ति को चरितार्थ नहीं करना चाहिए।
17. घर, विद्यालय तथा समाज किसी भी स्थान पर छात्र–छात्राओं के समायोजन को बिगड़ने नहीं देना चाहिए।

(२) प्रधानाध्यापकों के लिए सुझाव :

प्रधानाध्यापक विद्यालय की धुरी होता है शिक्षक तथा छात्र सभी प्रधानाध्यापक के ऊपर आश्रित होते हैं यदि प्रधानाध्यापक अच्छा है तो विद्यालय के सभी क्रियाकलाप उचित प्रकार से चलते है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रधानाध्यापकों के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

1. प्रधानाध्यापकों को विद्यालय में सभी विषयों के अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए।
2. समय-समय पर छात्रों के कार्य का निरीक्षण करके उन्हें प्रेरित करना चाहिए।
3. विद्यालय में शिक्षक अभिभावक संघ की स्थापना करनी चाहिए जिससे शिक्षक तथा अभिभावक दोनों ही छात्रों से सम्बन्धित् कठिनाइयों से अवगत हो सके।
4. विद्यालय में शिक्षण से सम्बन्धित समस्त सुविधायें उपलब्ध करानी चाहिये।
5. विभिन्न विषयों से सम्बन्धित विशेषज्ञों को समय-समय पर विद्यालय में आमन्त्रित करना चाहिए।
6. प्रतिभाशाली तथा पिछड़े विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।
7. शिक्षकों की सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिए जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक रह सके क्योंकि एक स्वस्थ शिक्षक ही छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत कर सकता है।
8. छात्रों को कुसमायोजित होने से बचाना चाहिए क्योंकि छात्रों के कुसमायोजन का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
9. विद्यालय के पुस्तकालय में उच्च कोटि की पुस्तकों की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे छात्र-छात्राओं स्वाध्याय के लिए प्रेरित हो सकें कुछ उच्च कोटि की पुस्तकों की अध्यापकों के लिए भी व्यवस्था होनी चाहिए।

(३) अभिभावकों के लिए सुझाव :

किशोरों का अधिकांश समय परिवार में ही व्यतीत होता है। अतः यदि उनके अभिभावक उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं तो उनका परिवार, विद्यालय तथा समाज में अच्छा समायोजन होता है और यदि उनके साथ उचित व्यवहार नहीं करते हैं तो वह कुसमायोजित हो जाते हैं जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए अभिभावकों के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

1. अभिभावकों को, विद्यार्थियों को अपनी रूचिनुसार विषयों का चयन करने की स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए।

2. अभिभावकों को अपनी रूचिनुसार विद्यार्थियों को विषय प्रदान नहीं करने चाहिए यदि ऐसा करेंगे तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि निश्चित रूप से कम होगी।
3. परिवार में स्वस्थ वातावरण की स्थापना करनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य ठीक रह सके तथा वह उचित प्रकार से समायोजित हो सके।
4. विद्यार्थियों की अपने ही दूसरे बच्चों तथा पास पड़ोस के बच्चों से तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि तुलना करने से विद्यार्थियों में हीन भावना का विकास होता है जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
5. विद्यार्थियों की प्रगति से समय-समय पर अवगत होते रहना चाहिए।
6. विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए जिससे वह अपनी कठिनाइयों से अपने अभिभावकों को अवगत करा सके।
7. अभिभावकों को महीने में एक दो बार शिक्षकों से मिलना चाहिए जिससे वह विद्यार्थियों से सम्बन्धित कठिनाइयों से अवगत हो सके।
8. विद्यालय के साथ-साथ अभिभावकों को भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की ओर ध्यान देना चाहिए।

(४) विद्यार्थियों के लिए सुझाव :

वर्तमान शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करना है। अतः विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं-

1. विद्यार्थियों को विषयों का चयन करते समय अपनी रूचि, अभिरूचि तथा अभिक्षमता का ध्यान रखना चाहिए। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होगी।
2. विद्यार्थियों को अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे वे परिवार, विद्यालय तथा समाज में समायोजित हो सकें।
3. अध्ययन में रूचि लेनी चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उन्नत हो सके।
4. विद्यार्थियों को अपनी अभिक्षमता से अधिक कार्य नहीं करना चाहिए किन्तु प्रत्येक विषय में प्रेरणा समान होनी चाहिए।
5. सामान्य बुद्धि वाले विद्यार्थियों को अधिक कार्य करना चाहिए तभी उनकी शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति हो सकती है।

(५) ***भविष्य में शोधकार्य की रूपरेखा :***

कोई भी शोधकार्य अपने आप में पूर्ण नहीं होता है बल्कि वह कुछ नई समस्याओं को जन्म देता है। इसी संदर्भ में कुछ समस्यायें प्रस्तुत की गई हैं जिन पर शोधकार्य करके और आगे बढ़ाया जा सकता है–

1. किशोरों की बुद्धि, आकांक्षा स्तर तथा आत्मप्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन।
2. किशोरों की बुद्धि समायोजन तथा व्यक्तित्व कारकों का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन।
3. किशोरों की अभिवृत्ति, अभिक्षमता, समायोजन तथा व्यक्तित्व कारकों का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन।
4. सरकारी विद्यालयों तथा व्यक्तिगत विद्यालयों की छात्र-छात्राओं की बुद्धि, अध्ययन की आदतों तथा समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि समायोजन, उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन।

❋❋❋❋❋❋

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची
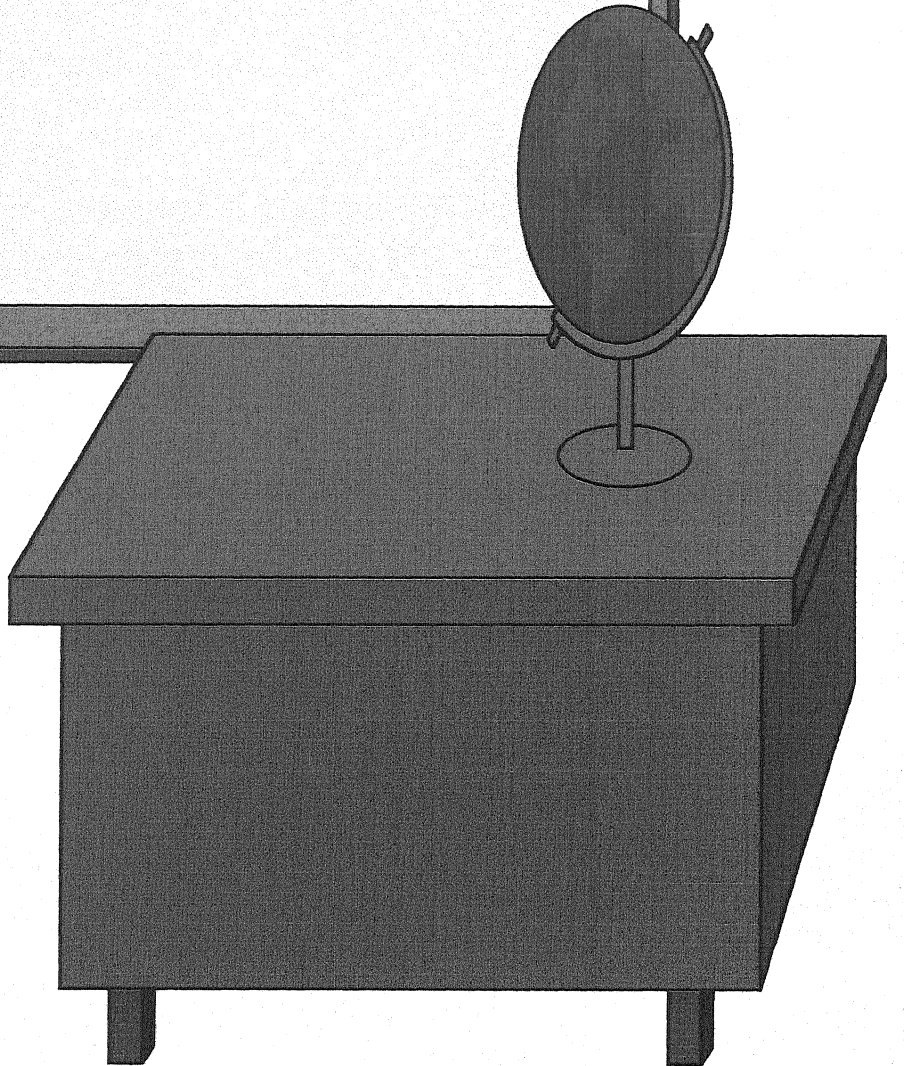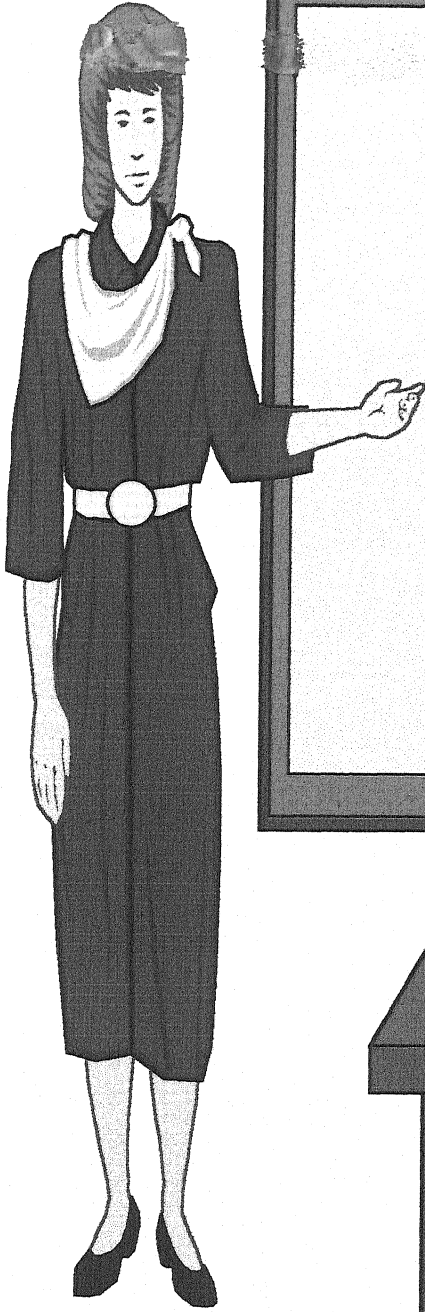
सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

शब्द कोष

(अ) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा निम्न समय में प्रकाशित की गई-

1. मानविकी शब्दाबली प्रथम-1966
2. मानविकी शब्दाबली द्वितीय-1967
3. मानविकी शब्दाबली तृतीय-1967
4. मानविकी शब्दाबली चतुर्थ-1968

(ब) शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा निम्न समय में प्रस्तुत की गई-

1. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह मानविकी खण्ड प्रथम-1973
2. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह मानविकी एण्ड द्वितीय-1974
3. शिक्षा परिभाषा कोष-1978

(स) <u>अन्य शब्द कोष</u>-

1. फादर कामिले बुल्के — अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोष, एस.चान्द एण्ड कम्पनी 1983
2. लॉरेन्स डलडेंग — दि रैन्डम हाउस डिक्शनरी, एलाइड पब्लिशर्स, दिल्ली-1969
3. वैक्टर्स — सैविन्थ न्यू कौलिजियेट डिक्शनरी-एन इण्डियन एडीसन-1971

विश्व कोष

1. बुच, एम.बी. — फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन, सी.ए.एस.ई., एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा 1972

2.	बुच.एम.बी.	सैकिण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन, सोसायटी ऑफ ऐजूकेशन रिसर्च एण्ड डबलपमेन्ट, बड़ौदा-1979
3.	बुच.एम.बी.	थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन ऐजूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली- 1984
4.	बुच.एम.बी.	फोर्थ सर्वे ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली-1991

एनसाइक्लोपीडिया

1.	एविल. आर.एल.	एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, दि मैक मिलन कम्पनी, न्यूयार्क-1970
2.	मुनरो, डब्ल्यू.एम.	एन साइक्लोपीडिया ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, द मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क- 1960
3.	मैटजिल, एच.ई.	एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, दिमेकमिलन कम्पनी, लन्दन-1982

****

पुस्तकें

1. अग्रवाल, जे.सी. (1966) — ऐजूकेशनल रिसर्च–एन इन्ट्रोडेक्शन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।
2. ओवन्स, आर.जी (1970) — ऑरगेनाइजेशनल बिहेवियर इन स्कूल्स, प्रेन्टिस हॉल, आई.एन.सी. इंग्ल बुड क्लिफ्स न्यूयार्क–1970
3. कोहलेन, आर.जी. (1952) — द साइक्लौजी ऑफ एडोलसेन्ट डबलपमेन्ट, हार्पर एण्ड ब्रदर्स, न्यूयार्क।
4. करलिंगर, एफ.एन. (1954) — फाउन्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च, न्यूयार्क, हॉल्ट, रीनहर्ट एण्ड विन्सटन आई. एन.बी.सी.।
5. कोलमैन, जे.सी. (1959) — एब्नॉर्मल साइक्लॉजी एण्ड मॉडर्न लाइफ, तारापोखाला सन्स एण्ड कम्पनी, बम्बई।
6. कुप्पूस्वामी, बी. (1976) — टैक्स्ट बुक ऑफ चाइल्ड बिहेवियर एण्ड डबलपमेन्ट, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
7. कपिल, एच.के (1984) — सांख्यिकी के मूलतंत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
8. गुड बार एण्ड स्केट्स (1938) — मैथडौलॉजी ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, एपीलटन सेन्चुरी कम्पनी, आई.एन.सी., न्यूयार्क।
9. गुड, सी.बी. (1945) — डिक्शनरी ऑफ ऐजूकेशनल, मैकग्रोहिल कम्पनी, आई.एन.सी., न्यूयार्क, लन्दन।
10. गेट्स एण्ड अदर्स (1948) — ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, थर्ड ऐडीशन, मैकमिलन, न्यूयार्क।
11. गिलफोर्ड, जे.पी. (1954) — साइकोमैट्रिक मैथड्स एडीशन मैकग्रोहिल कम्पनी, न्यूयार्क।

12. गोल्म विवस्की, आर.टी. (1960) द स्मॉल ग्रुप एन एनालैसिस ऑफ रिसर्च कन्सेप्टस एण्ड ऑपरेशन्स, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस।

13. गेज, एन.एल. (1963) पैराडिगम्स फौर रिसर्च इन टीचिंग हेन्ड बुक ऑफ रिसर्च ऑन टीचिंग, रेन्ड मैकनली शिकागो।

14. गैरिट, एच.ई. (1978) स्टैटिस्टिक्स इन साइक्लॉजी एण्ड ऐजूकेशन वकील्स, फैटर एण्ड साइमन्स, प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई।

15. चौहान, एस.एस. (1979) इननोवेशन्स इन टीचिंग, लर्निंग प्रौसिस, विकास पब्लिकेशन्स हाउस, प्राइवेट लिमिटेड 5 अन्सारी रोड, नई दिल्ली।

16. चतुर्वेदी, कुसुम शिक्षा के आधार, भार्गव बुक हाऊस, राजामण्डी, आगरा।

17. जहौदा, एम. (1966) रिसर्च मैथड्स इन सोशल रिलेशन्स, मैथ्यू एण्ड कम्पनी लिमिटेड, लन्दन।

18. जायसवाल, सीताराम समायोजन मनोविज्ञान, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रान्थ अकादमी, लखनऊ।

19. टर्मन, एल.एम. (1946) साइक्लॉजीकल सैक्स डिफरेन्सेज, इन कारमाइकेल ल्योनार्ड (एजु) मैन्युअल ऑफ चाइल्ड, न्यूयार्क, जॉन विली एण्ड सन्स, लन्दन।

20. टेट, एम. डब्ल्यू (1960) स्टैटिस्टिक्स इन ऐजूकेशन, द मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

21. पार्के, बी.आर.डी. (1969) रीडिंग्स इन सोशल डबलपमेन्ट, हॉल्ट रीनहर्ट एण्ड विन्सटन, न्यूयार्क।

22. पाठक, पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

23.	बर्ट, सी. (1937)	द बैकवर्ड चाइल्ड, एपील्टन सेन्च्युरी क्राफ्ट्स, न्यूयार्क।
24.	बक्सटर, बी. (1941)	प्यूपिल टीचर रिलेशनशिप, मैकमिलन, न्यूयार्क।
25.	बेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1959)	रिसर्च इन ऐजूकेशन, प्रेन्टिस हॉल इग्लबुड क्लिफ प्रेन्टिस हॉल, न्यू जर्सी।
26.	मैकलीलैन्ड, डी. (1953)	द अचीवमेन्ट मोटिव एपीलटन सेन्च्युरी, क्राफ्ट्स, न्यूयार्क।
27.	मेहता, पी. (1969)	द अचीवमेन्ट मोटिब्स इन हाईस्कूल बॉयज, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
28.	माथुर, एस.एस. ( )	ऐजूकेशनल साइक्लॉजी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
29.	भटनागर, सुरेश एण्ड ओवराय एस.सी. ( )	शिक्षा मनोविज्ञान, लायल बुक डिपो, मेरठ।
30.	भटनागर, सुरेश (1986)	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
31.	भाटिया, हंसराज ( )	शिक्षा के मनोविज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर।
32.	भार्गव, महेश ( )	आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, कचहरी घाट, आगरा।
33.	राय, पारसनाथ (1985)	अनुसन्धान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल मार्ग, आगरा।
34.	वोरिंग, ई.जी. (1948)	फाउन्डेशन ऑफ साइक्लॉजी, जॉन विली एण्ड सन्स, आई.एन.सी., न्यूयार्क।
35.	व्हिटनी, एफ.एल. (1961)	द ऐलीमेन्ट्स ऑफ रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग, हाउस, नई दिल्ली।
36.	वर्मा, प्रीति एण्ड श्रीवास्तव, डी.एन. ( )	मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, केलाश प्रिन्टिंग प्रेस, आगरा।

37. वशिष्ठ, के.के. विद्यालय संगठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्यायें, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।

38. माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) माध्यमिक शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

39. साइमन, पी.एम. (1939) दि साइक्लॉजी ऑफ पेरेन्ट्स चाइल्ड रिलेशनशिप, एपीलटन।

40. स्टोडार्ड, जी.डी. (1943) द मीनिंग ऑफ इन्टैलीजैन्स, द मैकमिलन कम्पनी, न्यूयार्क।

41. सोरनसन, एच. (1964) साइक्लॉजी इन ऐजूकेशन, मैकग्रो बुक कम्पनी, न्यूयार्क।

42. सुखिया एण्ड महरोत्रा (1966) ऐैलीमेन्ट्स ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च, इण्डियन एलाइड पब्लिशर्स लिमिटेड, सैकिण्ड ऐडीशन।

❊❊❊❊❊❊

रिसर्च रिपोर्ट

1. अग्रवाल, एस. (1973) — ए स्टडी ऑफ मेडीकल एप्टीट्यूट एण्ड अदर साइक्लौजीकल बेरियेबिल्स एसोसियेटिड विद प्रोफीसियेन्सी इन मैडीकल एक्जामिनेशन ऑफ यू.पी., पी–एच.डी. साइक्लौजी, आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा।

2. अरूणा, एन.एस. (1981) — ए स्टडी ऑफ फैक्टर्स इन्फ्लूऐन्सिंग द अचीवमेंट ऑफ सैविन स्टेन्डर्उ विलौमिंग टू शिडूल्डकास्ट एण्ड शिडूल ट्राइब्स इज मीडियम ऑफ इन्सट्रैक्शन्स इन कन्नड़, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, मैसूर विश्वविद्यालय।

3. आचार्यालू, एस.टी.वी.जी. (1978) — ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप अमंग क्रियेटिव थिकिंग इन्टैलीजैन्स एण्ड स्कूल अचीवमेन्ट, पी–एच.डी. साइक्लौजी, उत्कल यूनिवर्सिटी।

4. कुमार, अवधेश (1986) — ए स्टडी ऑफ ईगोइन्बाल्वेमेंट लेविल ऑफ एस्पाइरेशन एण्ड एसोसियेटिड फैक्टर्स रिलेटिड टू अचीवमेंट ऑफ ग्रेजुऐशन लेबिल, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, गोरखपुर विश्वविद्यालय।

5. कपूर, रीता (1987) — ए स्टडी ऑफ फैक्टर्स रैस्पौन्सिविल फॉर हाई एण्ड लो अचीवमेंट एट द जूनियर हाईस्कूल लेविल, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, अवध यूनिवर्सिटी।

6. गोकुल नाथन, पी. (1972) — ए स्टडी ऑफ अचीवमेंट रिलेटिड मोटीवेशन (अचीवमेंट एण्ड एक्जाइटी) एण्ड एजूकेशनल अचीवमेंट अमंग सैकेन्ड्री स्कूल प्यूपिल्स,

पी-एच.डी. ऐजूकेशन, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा।

7. गुप्ता, ओ.वी. (1977) इन्टैलीजेन्स, क्रियेटिविटी, इन्ट्रेस्ट एण्ड फ्रस्ट्रेशन ऑफ फंक्शन्स ऑफ क्लास अचीवमेंट सैक्स एण्ड ऐज, पी-एच.डी. साइक्लौजी, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

8. गान्धी, पी. (1982) एकेडेमिक अचीवमेंट इन रिलेशन टू अचीवमेंट, मोटिव एफीलियेशन मोटिव एण्ड पावर मोटिव, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, बनारस यूनिवर्सिटी।

9. चौपड़ा, एस.एल. (1982) ए स्टडी ऑफ सम इन्टलैक्चुअल कोरिलेट्स ऑफ एकेडेमिक अचीवमेंट, डी.लिट् (ऐजूकेशन), लखनऊ यूनिवर्सिटी।

10. जौर्ज, ई.आर. (1966) ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ द एडजस्टमेंट एण्ड अचीवमेंट ऑफ टेन ईयर्स एण्ड इलैविन ईयर्स स्कूल स्टूडेन्ट्स इन केरला स्टेट, डिपार्टमेंट ऑफ साइक्लौजी, केरला यूनिवर्सिटी।

11. ठाकुर, आर.एस. (1972) ए स्टडी ऑफ स्कॉलैस्टिक अचीवमेंट ऑफ सैकिण्ड्री स्कूल प्यूपिल्स इन बिहार, डी.लिट् ऐजूकेशन, बिहार यूनिवर्सिटी।

12. देशपाण्डे, ए.एस. (1984) ए स्टडी ऑफ डिटरमिनेन्ट्स ऑफ अचीवमेंट ऑफ स्टूडेन्ट्स एट द एस.एस.सी. एक्जामिनेशन इन द पुणे डिवीजन ऑफ महाराष्ट्र, पी-एच.डी. (ऐजूकेशन) महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी।

13. दीक्षित, मिथलेश (1985) ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ इन्टैलीजेन्स एण्ड ऐकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ एडौल्सेन्ट वायज

		एण्ड गर्ल्स स्टडिंग इन क्लास नाईन एण्ड टेन, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, कानपुर यूनिवर्सिटी।
14.	भागीरथ, जी.एस. (1978)	कोरलेट्स ऑफ ऐकेडेमिक अचीवमेंट ऐज परसीव्ड बाई द टीचर्स एण्ड स्टूडेन्ट्स ऑफ हाईस्कूल, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, पन्त नगर यूनिवर्सिटी।
15.	मिश्रा, एस.पी. (1978)	ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ हाई एण्ड लो अचीवर्स इन साइंस, कॉमर्स एण्ड आर्टस ऑन क्रियेटिविटी, इन्टैलीजेन्स एण्ड एक्जाइटी, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, राजस्थान यूनिवर्सिटी।
16.	मित्रा, आर. (1985)	सम डिटरमिनेट्स ऑफ एकेडेमिक परफॉरमेन्स इन प्रीएडोलसेन्ट चिल्ड्रन, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, कलकत्ता यूनिवर्सिटी।
17.	राजपूत, ए.एस. (1985)	स्टडी ऑफ ऐकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ स्टूडेन्ट्स इन मैथमेटिक्स इन रिलेशन टू देयर इन्टैलीजैन्स अचीवमेन्ट मोटीवेशन एण्ड इकॉनामिक स्टेट्स, पी-एच.डी. ऐजूकेशन, पन्त नगर यूनिवर्सिटी।
18.	देसाई, डी.बी. (1972)	डबलपिंग करिकुलम अचीवमेंन्ट मोटीवेशन डबलपमेंट एण्ड स्टडिंग द इफैक्ट्स देयर ऑफ, एस.पी. यूनिवर्सिटी बल्लभ विद्यानगर रिसर्च प्रोजेक्ट।
19.	धमी, जी.एस. (1974)	इन्टैलीजेन्स, इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड सोशियो इकोनोमिक स्टेट्स ऐज फैक्टर्स इन्डीकेटिव ऑफ सक्सैज इन स्कॉलेस्टिक

अचीवमेन्ट, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, पन्त नगर यूनिवर्सिटी।

20. पाठक, सी.सी. (1974) ए स्टडी ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशन ऐजूकेशनल नार्म्स एण्ड स्कूल परफॉरमेन्स ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, एस.पी. यूनिवर्सिटी।

21. प्रकाश चन्द्र (1975) ए स्टडी ऑफ द प्रौब्लम ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स इन द बनारस एजूकेशनल रीजन आफ यू.पी. एण्ड देयर रिलेटिड इफैक्ट ऑन अचीवमेन्ट, पी–एच.डी. ऐजूकेशनल, गोरखपुर यूनिवर्सिटी।

22. पाण्डेय, बी.बी. (1979) ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेन्ट प्रौब्लम्स ऑफ एडौलसेन्ट वायज ऑफ देवरिया एण्ड देअर ऐजूकेशनल इम्पलीकेशन, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, गोरखपुर यूनिवर्सिटी।

23. राय, बी.एन. (1974) ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ ए फ्यू डिफरेन्शियेटेर्स पर्सनेल्टी कोरलेट्स ऑफ लो एण्ड हाई अचीवर्स, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी।

24. रवीन्द्र (1977) द इफैक्ट्स ऑफ स्टेट ट्रेट एक्जाइटी साइक्लौजीकल स्ट्रैस एण्ड इन्टैलीजेन्स ऑन लरनिंग एण्ड ऐकेडेमिक अचीवमेंट, पी–एच. डी. साइक्लौजी, पन्त नगर यूनिवर्सिटी।

25. राजपूत, बी.एस. (1985) एकेडेमिक अचीवमेंट ऐज फंक्शन्स ऑफ सम पर्सनेल्टी वैरियेविल्स एण्ड सोशियो इकानोमिक फैक्टर्स, पी–एच.डी. साइक्लौजी, गुजरात युनिवर्सिटी।

26. शर्मा, प्रेमलता (1981) — ए स्टडी ऑफ फैक्टर्स रिलेटिड टू ऐकेडेमिक अन्डर अचीवमेंट ऑफ गर्ल्स ऑफ सैकेन्ड्री स्कूल्स लोकेटिड इन रूरल ऐरिया ऑफ हरियाणा, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, मैसूर यूनिवर्सिटी।

27. शशिधर (1981) — ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप विट्वीन फ्यू वैरियेविल्स एण्ड द अचीवमेंट ऑफ शिड्यूल क्लास स्टूडेन्ट्स स्टडिंग इन सैकेन्ड्री स्कूल्स ऑफ कर्नाटक, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, बनारस यूनिवर्सिटी।

28. शर्मा, आर.एम. (1982) — साइक्लौजीकल डिटरमिनेन्ट्स ऑफ बैकवर्ड नैस एट द हाईस्कूल स्टेज, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, जम्मू यूनिवर्सिटी।

29. शनमुग सुन्दरम, आर. (1983) — एन इन्वैस्टीगेशन इन टू फैक्टर्स रिलेटिड टू एकेडेमिक अचीवमेंट अमंग अन्डर ग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स अन्डर सैमिस्टर सिस्टम, पी–एच. डी. साइक्लौजी, मद्रास यूनिवर्सिटी।

30. शिवप्पा, डी. (1985) — फैक्टर्स अफैकटिंग द ऐकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, कर्नाटक यूनिवर्सिटी।

31. सिन्हा, एन.सी.पी. (1978) — ए स्टडी ऑफ नीड अचीवमेंट इन्टैलीजेन्स एण्ड पर्सनेल्टी फैक्टर्स इन रिलेशन टू ऐकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी।

32. सिद्दीकी, बी.बी. (1979) — इफैक्ट्स ऑफ अचीवमेंट मोटिवेशन एण्ड पर्सनेल्टी फैक्टर्स ऑन ऐकेडेमिक सक्सैज, पी–एच.डी. साइक्लौजी, गुजरात यूनिवर्सिटी।

33. सक्सेना, एस. (1981) — ए स्टडी ऑफ नीड अचीवमेंट इन रिलेशन क्रियेटिविटी, वैल्यूज, लेबिल ऑफ एस्प्रेशन एण्ड एक्जाइटी, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी आगरा।

34. स्वीन (1984) — ऐकेडेमिक अचीवमेन्ट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू द इन्सट्रैक्शनल डिजाइन, इन्टैलीजेन्स सैल्फ कनसेप्ट एण्ड नीड अचीवमेंट, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, पन्तनगर यूनिवर्सिटी।

35. सिंह, बी.ए. (1986) — ए स्टडी ऑफ सम पौसीबिल कन्ट्रीब्यूटिंग टू हाई एण्ड लो अचीवमेन्ट इन मैथमेटिक्स ऑफ द हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ उड़ीसा, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, सम्भलपुर यूनिवर्सिटी।

36. श्रीवास्तव, ए.के. (1966) — एन इनवैस्टीगेशन इन टू द फैक्टर्स रिलेटिड टू ऐजूकेशनल अन्डर अचीवमेंट, पी–एच.डी. साइक्लौजी पटना यूनिवर्सिटी।

37. श्रीवास्तव, डी.एन. (1975) — ए कम्पैरिटिव स्टडी ऑफ ऐकेडेमिक अटेनमेन्ट ऑफ स्मोकर्स एण्ड नॉन स्मोकर्स विद स्पेशन रैफरेन्स विद स्पेशल टू देअर एडजस्मेंट एण्ड एक्जाइटी, पी–एच.डी. साइक्लौजी, आगरा यूनिवर्सिटी।

38. श्रीवास्तव, एन. (1980) — इन्टैलीजेन्स एडजस्टमेंट एण्ड फैमिली स्टेट्स ऐज प्रैडिक्टर्स ऑफ ऐजूकेशनल अटेनमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्टस, पी–एच.डी. ऐजूकेशन, गोरखपुर यूनिवर्सिटी।

******

जरनल्स

1. इंडियन ऐजूकेशनल रिव्यू बॉल्यूम 2(1) 26-41, 1967
2. ऐजूकेशनल रिसर्च बुलैटिन 69-83, 282-294, 1925
3. ऐजूकेशनल रिसर्च बुलैटिन 6, 383-384, 1927
4. कम्पैरिटिव रिसर्च मोनोग्राफ 2, 33-66, 1960
5. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉली 13, 419-429, 1923
6. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉली 17, 23, 36, 110-124, 1926
7. जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोसल साइक्लॉली 3, 11, 401-408, 1940
8. जरनल ऑफ एक्सपैरीमेन्टल ऐजूकेशन 1942
9. जरनल ऑफ जैनेटिक साइक्लॉली 70, 29-51, 1947
10. जरनल ऑफ जैनेटिक साइक्लॉली बाल्यूम 27, 1949
11. जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोसल साइक्लॉली 68, 523-532, 1951
12. जरनल ऑफ कन्सल्टिंग साइक्लॉली 16, 292-298, 1952
13. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च बाल्यूम 46, 329-331, 1953
14. जरनल ऑफ पर्सनेल्टी 24, 145-152, 1955
15. जरनल ऑफ मैन्टल डैफीसियेन्सी 64, 457-466, 1959
16. जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एण्ड सोसल साइक्लॉली 62, 543-552, 1961
17. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉली 63, 153-159, 1972
18. जरनल ऑफ एब्नार्मल एण्ड सोसल साइक्लॉली 63, 3, 361-366, 1965
19. जरनल ऑफ साइक्लॉली 17, 1, 44-51, 1966
20. जरनल ऑफ पर्सनेल्टी 44, 1, 38-51, 1976
21. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल रिसर्च 71, 2, 233-241, 1979
22. जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉली बाल्यूम 7, 2, 241, 1979
23. प्रेडिक्टिंगऐजूकेशनल साइक्लॉलीकल मेजरमेन्ट 1, 387-398, 1941
24. पर्सनल गाइडेंस जरनल 37, 334-341, 1969
25. पर्सनल गाइडेंस जरनल 35, 214-218, 1956
26. ब्रिटिश जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी 50, 71, 73, 1980
27. ब्रिटिश जरनल ऑफ ऐजूकेशनल साइक्लॉजी 51, 235-236, 1981
28. ब्रिटिश जरनल ऑफ क्लीनिकल साइक्लॉजी 21, 43-46, 1982
29. साइक्लॉजीकल बुलैटिन 30, 60, 1965

******

परिशिष्ट

गोपनीय (सर्वाधिकार सुरक्षित है)
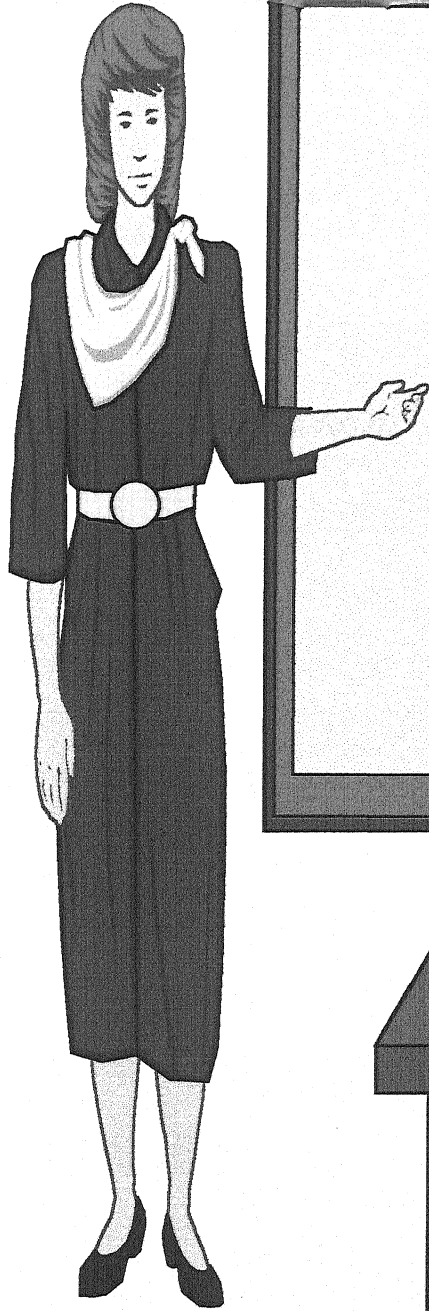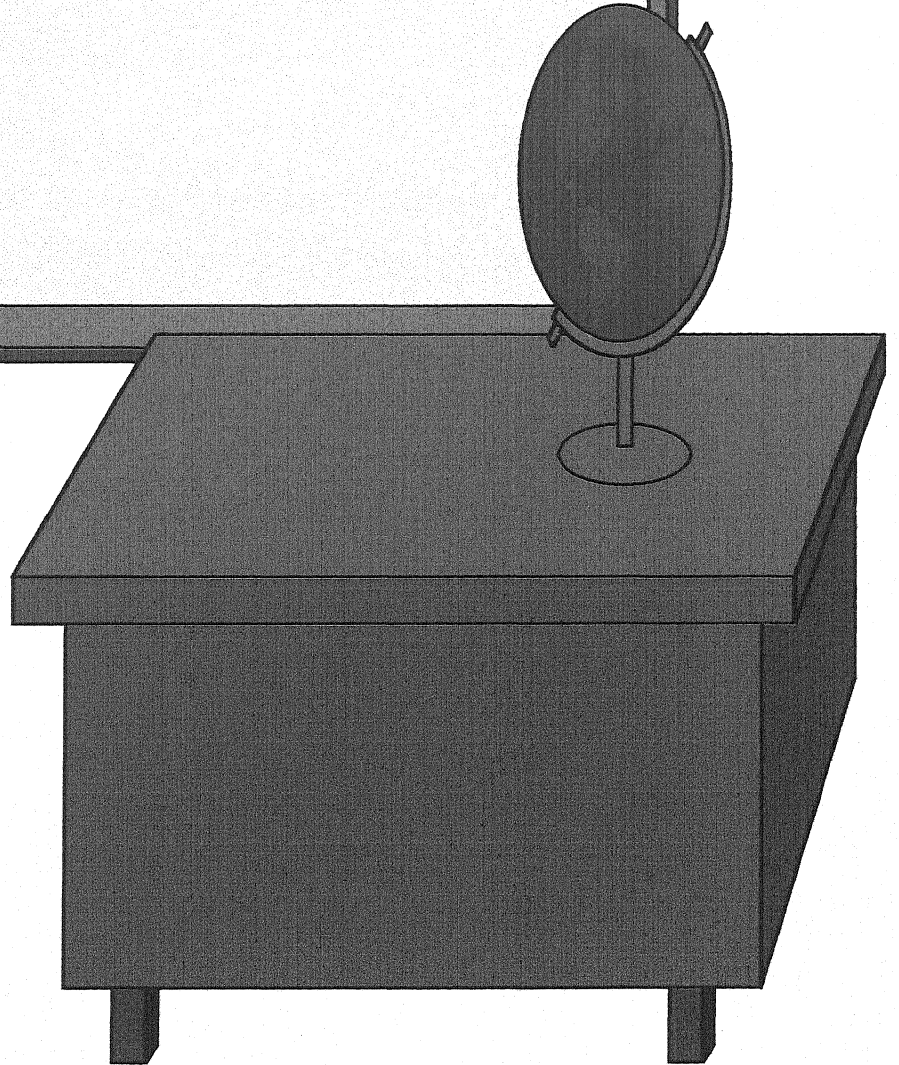
मानसिक योग्यता की सामूहिक परीक्षा (७२)

(यह पुस्तिका किसी अनाधिकारी के हाथों में न जानी चाहिए) (आवृत्ति ४1)

इस प्रश्न पुस्तिका के सभी उत्तरों की केवल उत्तर पत्र पर ही लिखना होगा।
इस परीक्षा पुस्तिका पर कुछ लिखना या चिन्ह न बनाना चाहिए।

प्रारम्भिक आदेश

हम आपकी सामान्य मानसिक योग्यता की परीक्षा करना चाहते है।
केवल 20 मिनट का समय है। आप के सामने 100 प्रश्न आयेंगे।

इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले इसमें दिए गए सब प्रकार के प्रश्नों और उनके उत्तर लिखने की विधि को उदाहरण देकर समझाया जायेगा। हमें आशा है कि आपको उचित सफलता मिलेगी। सभी प्रश्न साधारण भाषा में हैं। प्रत्येक प्रश्न के दोनों ओर प्रश्न की क्रमिक संख्या छपी है। प्रायः सभी प्रश्नों के कुछ संभव वैकल्पिक उत्तर भी दिये गये हैं। हर एक वैकल्पिक उत्तर की संख्या भी उसके साथ छपी है। आपको हर प्रश्न को समझ कर केवल उसके सही उत्तर को चुनना है, तथा उस उत्तर की संख्या को तत्काल उत्तर पत्र के क्रम अनुसार उचित स्थान पर लिखना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर संख्या में देना है। अर्थात् अक्षरों में कुछ नहीं लिखना है।

ध्यान रखें प्रत्येक प्रश्न का एक ही ठीक उत्तर है। समय अधिक नहीं है। सब प्रश्नों का सही उत्तर बहुत कम लोग दे सकते हैं। अतएव आपको खूब शीघ्रता से काम करना चाहिए। और अधिक से अधिक सही प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करना चाहिए। अगर कोई प्रश्न आपको अधिक कठिन लगता है, तब उस पर सोच विचार में अधिक समय नष्ट न करें। उसे छोड़ दें और उत्तर पत्र के निश्चित स्थान पर एक कोने में हल्का सा चिन्ह बना दें और अगले प्रश्न का उत्तर सोचकर तुरन्त उसके उचित स्थान पर लिखें। यदि अन्त में समय हो, तो अपने उत्तरों को दोहरा लीजिए तथा छूटे हुए प्रश्नों का हल सोचकर लिखिए।

X X X

आरम्भ करने की आज्ञा सुनकर ही आप प्रश्नों को पढ़ने और उत्तर लिखने का कार्य आरम्भ करें और जितनी शीघ्रता से हो सके साफ उत्तर लिखिए।

एक बात और ध्यान रखिए इस प्रश्न पुस्तिका पर आपको कुछ नहीं लिखना है और न इस पर किसी प्रकार का चिन्ह ही लगाना है।

केवल उत्तर पत्र पर यथोचित स्थान में उत्तर की संख्या ही लिखनी है।

अभ्यास के लिए उदाहरण

इस परीक्षा में जिस प्रकार के प्रश्न पूछे गये है, उनके दो-दो उदाहरण नीचे दिये गये हैं इन में से पहले का उत्तर भी उत्तर पत्र पर छपा है किन्तु दूसरे का उचित उत्तर देने का अभ्यास आप सरलता से कर सकेंगे।

आइये अब हम इनको पढ़ें और इन को हल करने की विधि समझें :- उदाहरण संख्या ↓

1. वृक्ष का अर्थ है, (1) पेड़, (2) जमीन, (3) घास, (4) फल, (1)
2. आज्ञा का अर्थ है, (1) कठोर, (2) स्वामी, (3) निर्देश, (4) पालन, (2)
3. अच्छाई का उल्टा है, (1) चालाकी, (2) बुराई, (3) लड़ाई, (4) नम्रता, (3)
4. जीवन का उल्टा है, (1) निराशा, (2) आनन्द, (3) मिट्टी, (4) मृत्यु, (4)
5. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :-
   1, 2, 3, 4, 5, 6 ...... (5)
6. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :-
   15, 14, 13, 12, 11, 10 ...... (6)
7. इन पांच शब्दों में से वेमेल शब्द की संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :-
   (1) घोड़ा, (2) मुर्गा, (3) हाथी, (4) मोर, (5) लड़का, (7)
8. इन पांच शब्दों में से वेमेल शब्द की संख्या उत्तर पत्र पर लिखें :-
   (1) निबन्ध, (2) लेखक, (3) उपन्यास, (4) कविता, (5) स्तम्भ, (8)
9. छाता एक लाभदायक वस्तु है, इसलिए कि वह (1) कपड़े का बनता है।
   (2) हमें धूप व वर्षा से बचाता है (3) वह सब देशों में मिलता है। (9)
10. लोग बिल्लियां इसलिए पालते हैं, कि (1) उनकी खाल कोमल होती है।
   (2) वे कुत्तों से डरती हैं। (3) वे चूहे पकड़ती है। (10)
11. कमल : लिखना : चाकू : (1) आम, (2) काटना, (3) लोहा, (4) खाना, (11)
12. खीर : चावल : : हलवा : (1) पूरी, (2) दही, (3) दूध, (4) सूजी, (12)
13. हरदेव से सुरजीत लम्बी है, किन्तु हरदेव से जगजीत नाटा है। तो सब से लम्बा कौन है?
   (1) हरदेव, (2) सुरजीत, (3) जगजीत, (13)
14. राम के पीछे गोविन्द खड़ा है, गोविन्द के पीछे चन्दन खड़ा है, और हरि के पीछे चन्दन खड़ा है, तो सब के पीछे कौन खड़ा है? (1) राम, (2) गोविन्द, (3) चन्दन, (4) हरि, (14)

परीक्षा आरम्भ होने से पहले अपनी सभी शंकायें पूछ लीजिये।

जब तक कहा न जाए

कृपय यह

पन्ना मत उपलटिये

मानसिक योग्यता की सामूहिक परीक्षा (72)

(उत्तर पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें) प्रश्न संख्या ↓

1. प्रकाश का उल्टा है,
(1) काला, (2) लैम्प, (3) सूट, (4) अन्धकार, (1)
2. कृपा का अर्थ है,
(1) धर्म, (2) कर्म, (3) दया, (4) दान, (2)
3. पुलिस थाना चौबीस घण्टे खुला रहता है, क्योंकि
(1) पुलिस अधिकारियों को 24 घण्टे का वेतन मिला है, (2) लूट मार और दंगे की घटनाएं किसी समय हो सकती है, (3) पुलिस वालों को दिन रात की वरदियां मिलती है। (3)
4. मोटा का उल्टा है,
(1) छोटा, (2) पतला, (3) हलका, (4) परिश्रमी, (4)
5. घर का अर्थ है,
(1) बीबी, (2) परिवार, (3) मकान, (4) खर्च, (5)
6. इन पांच शब्दों में से वेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) प्लेट, (2) चम्मचा, (3) प्याला, (4) पतीला, (5) केला, (6)
7. भीतर का उल्टा है,
(1) बाहर, (2) खुला, (3) मैदान, (4) तीव्र, (7)
8. विद्या का अर्थ है,
(1) पुस्तक, (2) ज्ञान, (3) रहस्य, (4) विज्ञान, (8)
9. लक्ष्मण से आयु में सीता बड़ी है, परन्तु लक्ष्मण से भरत छोटा है। तब इन में सबसे बड़ा कौन है?
(1) लक्ष्मण, (2) भरत, (3) सीता (9)
10. साधु का उलटा है,
(1) झगड़ा, (2) दुष्ट, (3) भजन, (4) लड़का, (10)
11. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) मोटर, (2) साइकल, (3) तांगा, (4) तार, (5) रेलगाड़ी, (11)
12. विष का उलटा है-
(1) मीठा, (2) औषध, (3) अमृत, (4) शिव, (12)
13. ऐहमद से अनवर नाटा है, किन्तु अनवर से हमीद नाटा है, तो सब से नाटा कौन है?
(1) ऐहमद, (2) हमीद, (3) अनवर, (13)
14. बलवान का अर्थ है'
(1) मोटा, (2) धनवान, (3) प्रधान, (4) शक्तिमान, (14)
15. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) चम्पा, (2) चमेली, (3) चाय, (4) गेंदा, (5) गुलाब (15)
16. अर्जुन से कमला अधिक दौड़ती है, किन्तु चपला से कमला पीछे रह जाती है, तो सब से अधिक तेज कौन दौड़ता है?
(1) चपला, (2) कमला, (3) अर्जुन, (16)
17. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर पत्र पर लिखें-
(1) मोटर, (2) रिक्शा, (3) तांगा, (4) पैदल, (5) साइकल (17)
18. 'मुख में राम बगल में छुरी' का अभिप्राय है-
(1) राम राम कहने वाले सदा बगल में छुरी रखते हैं (2) राम कहने से छुरी से रक्षा होती है, (3) अनेक दुष्ट लोग धर्म का पाखण्ड करते हैं। (18)
19. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
8, 7, 6, 5, 4, 3, ... (19)
20. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) हृदय, (2) आंख, (3) कान, (4) नाक, (5) जीभ (20)

(प्रश्न 21 के लिए देखिए पृष्ठ 2 (दूसरा) (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें) प्रश्न संख्या ↓

21. जूते चमड़े के इस लिए बनते हैं,
(1) कि यह अधिक चलता है, (2) वह मृत पशु की खाल से बनता है,
(3) यह सब देशों में पाया जाता है। (21)

22. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें-
6, 11, 16, 21, 26 .... (22)

23. सांच को आंच नहीं होती, इस लिए कहते हैं कि
(1) सच बोलने वाले को आग नहीं जलाती। (2) सच्चे की विजय होती है।
(3) सच्चे आदमी के घर में आंच नहीं मिलती। (23)

24. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें-
3, 6, 9, 12, 15, 18 ...... (24)

25. विदेश जाने के लिये लोग विमान यात्रा पसन्द करते हैं, इसलिए कि-
(1) इसमें थोड़ा समय लगता है। (2) यात्रा में खाने पीने का पूरा प्रबन्ध होता है।
(3) वह हवा में धूल से ऊपर उड़ते हैं।, (25)

26. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) हाकी, (2) फुटबाल, (3) शतरंज, (4) क्रिकेट, (5) टेनिस, (26)

27. पापी का मन सदा शंकित रहता है, इसलिए कि
(1) उसको नरक का कष्ट भोगना पड़ेगा। (2) शंकित मन वाले पाप करते हैं।
(3) पापी को पोल खुलने का डर रहता है। (27)

28. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें-
5, 11, 17, 23, 29, 35 ...... (28)

29. एक देश में रेल की बहुत सी लाइनें होनी चाहिए, इसलिये कि
(1) इन से माल और मनुष्यों के आने जाने में सुविधा होती है। (2) इन से व्यापार को लाभ होता है। (3) इनके द्वारा देश में खाद्य पदार्थों का मूल्य कम हो जाता है। (29)

30. हीरा का अर्थ है,
(1) मोती, (2) महंगा, (3) पत्थर, (4) जवाहर, (30)

31. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
3, 12, 21, 30, 39, 48, ... (31)

32. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) कालीदास, (2) तुलसीदास, (3) जयशंकर प्रसाद, (4) बुद्ध, (5) टैगोर (32)

33. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
14, 17, 20, 23, 26, 29, ... (33)

34. घोड़ा : टांग : : गाड़ी :
(1) बालक, (2) पहिया, (3) सड़क, टट्टू, (4) (34)

35. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) पास, (2) दूर, (3) परे, (4) यहां, (5) धीमा (35)

36. लिपिक : अध्यक्ष : : सैनिक :
(1) मजदूर, (2) विक्रेता, (3) कप्तान, (4) चालक (36)

37. इन पांच शब्दों में से वेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) बेलना, (2) पोना, (3) गाना, (4) दौड़ना, (5) नाचना (37)

38. तरल : ठोस : साती :
(1) बरफ, (2) मछली, (3) तैरना, (4) स्नान, (38)

39. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
1, 2, 4, 8, 16, 32, ... (39)

40. जनवरी : फरवरी : : जुलाई :
(1) मार्च, (2) अगस्त, (3) रविवार, (4) जून, (40)

(प्रश्न 41 के लिए देखिए पृष्ठ 3 (तीसरा) (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें) प्रश्न संख्या ↓

41. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें :-
21, 19, 17, 15, 13, 11, ... (41)

42. बहन : भाई : : मांसी :
(1) चाचा, (2) भुआ, (3) दादा, (4) मामा, ... (42)

43. गोवर्द्धन की मोटाई चन्द्रन से कम है, और चन्द्रन से अधिक मोटा गिरधारी है, तो सब से दुबला कौन है?
(1) चन्द्रन, (2) गिरधारी, (3) गोवर्द्धन (43)

44. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
18, 16, 14, 12, 10, 8, ... (44)

45. हंसना : रोना :: बचपन :
(1) खेलकूद, (2) बुढ़ापा, (3) मारपीट, (4) हार (45)

46. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) गाय, (2) भैंस, (3) घोड़ा, (4) भेड़, (5) बकरी, (46)

47. क्रूर का उलटा है,
(1) सज्जन, (2) भला, (3) दयालू, (4) कठोर (47)

48. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) कूदना, (2) फांदना, (3) भागना, (4) खड़े रहना, (5) चलना, (48)

49. पदमा से रणजीत अच्छी सिलाई करता है, किन्तु पुष्पा से पद्मा अच्छा कार्य करती है, तब सिलाई में सबसे अच्छा कौन है?
(1) रणजीत, (2) पद्मा, (3) पुष्पा (49)

50. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) मिट्टी, (2) लकड़ी, (3) शिला, (4) कंकर, (5) पत्थर, (50)

51. उद्यम का उलटा है,
(1) वियोग, (2) डरपोक, (3) विश्राम, (4) आलस्य (51)

52. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
78, 67, 56, 45, 34, 23, ... (52)

53. फल : सेब :: पुष्प :
(1) अनार, (2) बादाम, (3) गुलाब, (4) जामुन (53)

54. मोहन से नाटा राम है। और किशन से नाटा राम है। तब सबसे कम लम्बा कौन है?
(1) मोहन, (2) किशन, (3) राम (54)

55. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
5, 6, 8, 11, 15, 20, ... (55)

56. "झूठ के पांव नहीं होते।" यह इस कारण कहा जाता है कि
(1) लंगड़े मनुष्य बहुत झूठ बोलते हैं, (2) झूठे मनुष्य की पोल शीघ्र खुल जाया करती है।,
(3) झूठ बोलने वाले बहुत बार चलते समय ठोकर खाते हैं। (56)

57. नाव : माझी : : मोटर :
(1) स्वामी, (2) यात्री, (3) नगर, (4) चालक (57)

58. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) खाट, (2) कुर्सी, (3) प्लेट, (4) सोफा, (5) पीढ़ा, (58)

59. मकान : ईट :: सेना :
(1) सिपाही, (2) पत्थर, (3) हथियार, (4) युद्ध (59)

60. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
5, 6, 9, 10, 13, 14, ... (60)

(प्रश्न 61 के लिए देखिए पृष्ठ 4 (चौथा) (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें) प्रश्न संख्या ↓

61. सम्पादक : पत्रिका : : व्यापारी :
(1) बाजार, (2) विज्ञापन, (3) दुकान, (4) समाचार (61)
62. आश्चर्य का अर्थ है,
(1) निराला, (2) विसमय, (3) घबराहट, (4) अनुभव (62)
63. चन्द्रमा : पृथ्वी : : पृथवी :
(1) सागर, (2) मंगल तारा, (3) सूर्य, (4) मछलियां (63)
64. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) गोभी, (2) गाजर, (3) कक्कड़ी, (4) मूली, (5) धनिया, (64)
65. सोना का अर्थ है,
(1) कनक, (2) खाद, (3) धन, (4) माला (65)
66. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
9, 12, 14, 17, 19, 22, ... (66)
67. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) भूखा, (2) तरा, (3) प्यासा, (4) थका, (5) हारा, (67)
68. सदाशिव से मुरारी लम्बा है। किन्तु मुरारी से वीरेन्द्र नाटा है। और त्रिलोकी से मुरारी नाटा है, तो सब से लम्बा कौन है?
(1) सदाशिव, (2) मुरारी, (3) वीरेन्द्र, (4) त्रिलोक (68)
69. वृक्ष : लता : : फल :
(1) फूल, (2) चम्पा, (3) मोतिया, (4) भौलसिरी (69)
70. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
8, 9, 12, 13, 16, 17, ... (70)
71. नेता : जनता : : अधिकारी :
(1) चुनाव, (2) भाषण, (3) कर्मचारी, (4) निर्णय (71)
72. आरेखन कला में राम से गार्गी चतुर है। किन्तु उसकी अपेक्षा सीता चतुर है। अतः सबसे चतुर कौन है?
(1) गार्गी, (2) सीता, (3) राम (72)
73. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) घोड़ा, (2) ऊंट, (3) कंगारू, (4) गधा, (5) भैंसा (73)
74. चित्र : खड़ा : : सिनेमा :
(1) खाता, (2) चलता, (3) हंसता, (4) रोता (74)
75. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
29, 28, 26, 23, 19, 14, ... (75)
76. मेरे विचार में यदु से सीता चतुर है। किन्तु कमला से रमा निसन्देह चतुर है। सीता से रमा मन्द है तो सब से चतुर कौन है?
(1) यदु, (2) कमला, (3) रमा, (4) सीता (76)
77. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
7, 8, 10, 13, 17, 22, ... (77)
78. सभ्यता का अर्थ है,
(1) वस्त्र, (2) कला, (3) विज्ञान, (4) संस्कृति (78)
79. "जिसकी लाठी उसकी भैंस" कहने का अभिप्राय है कि-
(1) भैंस वाले के पास लाठी आवश्यक होती है (2) अधिक बलवान की बात सबको माननी पड़ती है।
(3) लाठी देख कर भैंस अधिक दूध देती है। (79)
80. जुलियट : रोमिया :: संयोगिता :
(1) स्वयंवर, (2) जयचन्द, (3) पृथ्वीराज, (4) अकबर (80)

(प्रश्न 81 के लिए देखिए पृष्ठ 5 (पांचवां) (शीघ्रता से कार्य करें)

(उत्तर पत्र पर क्रमांक के अनुकूल उचित उत्तर की संख्या लिखें) प्रश्न संख्या ↓

81. अनेक वर्षो तक हवाई जहाज सफल न हुए, क्योंकि
(1) वे बहुत भारी बनाये जाते थे। (2) उनके कल पुर्जे बहुत अधिक होते थे।
(3) एक उत्तम इंजन नहीं बन पाया था। (81)

82. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
4, 6, 9, 11, 14, 16, ... (82)

83. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) चिड़िया, (2) तोता, (3) बुलबुल, (4) कबूतर, (5) उल्लू, (83)

84. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर पत्र पर लिखें-
8, 9, 11, 12, 14, 15, ... (84)

85. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) गया, (2) पुरी, (3) प्रयाग, (4) द्वारिका, (5) दिल्ली (85)

86. दैनिक : मासिक : : पत्र :
(1) कहानियां, (2) समाचार, (3) पत्रिका, (4) संवाद (86)

87. ऋण का उलटा है,
(1) धन, (2) बचत, (3) बनिया, (4) व्यापार (87)

88. कोट : पैन्ट : : कुरता :
(1) समाचार, (2) टोपी, (3) पाजामा, (4) पगड़ी (88)

89. विस्तृत का उलटा है,
(1) विशाल, (2) कमरा, (3) पतला, (4) संकुचित (89)

90. पेनिसिल : चाक : : कापी :
(1) पुस्तक, (2) बोर्ड, (3) ताक, (4) लेख (90)

91. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) पहर, (2) प्रभात, (3) घण्टा, (4) मिनट, (5) क्षण (91)

92. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
2, 3, 5, 6, 8, 9, ... (92)

93. श्वेत : हिन : : श्याम :
(1) दिन, (2) चिड़िया, (3) कौवा, (4) रात (93)

94. नीचे दिए संख्या क्रम के अनुसार आगे की एक संख्या उत्तर-पत्र पर लिखें-
27, 26, 24, 21, 17, 12, ... (94)

95. विहंग का अर्थ है,
(1) मोर, (2) पक्षी, (3) भद्दा, (4) निषंग, (95)

96. रमा की बुद्धि देवकी से प्रखर है, पर सीता की बुद्धि सावित्री से हीन है, किन्तु देवकी की बुद्धि सावित्री से उत्तम है, तो सब से बुद्धिमान कौन है?
(1) देवकी, (2) सीता, (3) रमा, (4) सावित्री (96)

97. इन पांच शब्दों में से बेमेल शब्द का अंक उत्तर-पत्र पर लिखें-
(1) हिमाचल, (2) केरल, (3) मेघालय, (4) भोपाल, (5) हरियाणा (97)

98. नाटा का उलटा है,
(1) भारी, (2) लम्बा, (3) तगड़ा, (4) कठोर (98)

99. गरल का अर्थ है,
(1) बुरा, (2) विष, (3) कड़वा, (4) सरल (99)

100. मकड़ी : मक्खी : : बिल्ली :
(1) कुत्ता, (2) पिल्ला, (3) दूध, (4) चूहा (100)

(यदि समय बाकी है तो अपने उत्तरों को दोहराइये)

डा. श. जलोटा द्वारा मानकीकृत परीक्षा (७२) का उत्तर पत्र

आवृत्ति 84

नाम...कक्षा.............................स्कूल/कॉलेज/अन्य...

दिनांक...आयु..जन्म तिथि..

	उदाहरण
1	1
2	
3	2
4	
5	7
6	
7	5
8	
9	2
10	
11	2
12	
13	2
14	

योग्यता Ability	अंक Score	श्रेणी Grade
V शा		
N आ		
R ता		

पृष्ठ 1		पृष्ठ 2		पृष्ठ 3		पृष्ठ 4		पृष्ठ 5	
1		21		41		61		81	
2		22		42		62		82	
3		23		43		63		83	
4		24		44		64		84	
5		25		45		65		85	
6		26		46		66		86	
7		27		47		67		87	
8		28		48		68		88	
9		29		49		69		89	
10		30		50		70		90	
11		31		51		71		91	
12		32		52		72		92	
13		33		53		73		93	
14		34		54		74		94	
15		35		55		75		95	
16		36		56		76		96	
17		37		57		77		97	
18		38		58		78		98	
19		39		59		79		99	
20		40		60		80		100	
जोड़		जोड़		जोड़		जोड़		जोड़	

कुल जोड़.............................. शतयक श्रेणी.............................. परीक्षक....................................

1.	2.	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.
Poor	V. Dull	Dull	Low	Average	Bright	Superior	V. Super	Excellent
दुर्बल	अधिक मंद	मंद	कम कुशल	औसत	तीव्र	उत्तम	अत्युत्तम	प्रतिभावन

[Hindi Version]

DR. A. K. P. SINHA (Patna)

DR. R. P. SINGH Patna)

T. M. No.
458715

निम्न सूचनायें परीक्षार्थी को भरनी हैं :-

विद्यार्थी का नाम-

आयु- कक्षा- लड़का/लड़की-

स्कूल का नाम-

जिला- दिनांक-

निर्देश

आगे के पन्नों पर तुम्हारे स्कूल से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दिए हैं; जिनके सामने दो खाने (□) बने हैं। प्रत्येक प्रश्न को ध्यान से पढ़ो और यह निश्चय कर लो कि तुम किसी भी प्रश्न का उत्तर 'हाँ' के द्वारा देना चाहते हो या 'नहीं' के द्वारा। यदि 'हाँ' के द्वारा देना चाहते हो तो 'हाँ' के नीचे वाले खाने (□) में तथा यदि 'नही' के द्वारा देना चाहते हो तो 'नहीं' के नीचे वाले खाने (□) में सही (√) का निशान लगाओ। याद रहे कि तुम्हारा उत्तर किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं बताया जायेगा। इसलिए बिना किसी संकोच भाव के सभी प्रश्नों के उत्तर दो। समय की पाबन्दी नहीं है, फिर भी यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयत्न करो।

SCORING TABLE

Adjustment Areas →	Emotional (क)	Social (ख)	Educational (ग)	Total
Scores →				

Estd. : 1971 Phone : 63551

			हाँ	नहीं
1.	(क)	क्या तुमको स्कूल में हमेशा किसी बात का डर लगा रहता है?	☐	☐
2.	(ख)	क्या तुम अपने सहपाठियों से मिलने से भागते हो?	☐	☐
3.	(ग)	पढ़ी हुयी चीज को क्या तुम जल्दी ही भूल जाते हो?	☐	☐
4.	(क)	किसी सहपाठी से कुछ अनुचित बात अनजाने में बोल दी जाती है तो क्या तुम तुरन्त क्रुद्ध हो जाते हो?	☐	☐
5.	(ख)	क्या तुम दयालु स्वभाव के हो?	☐	☐
6.	(ग)	क्या तुमको परीक्षा से डर लगता है?	☐	☐
7.	(क)	किसी शिक्षक द्वारा किसी गलती के लिए डांटे जाने पर तुम चिन्तित रहते हो?	☐	☐
8.	(ख)	क्या तुम क्लास में किसी चीज को नहीं समझने पर शिक्षक से उठकर प्रश्न पूछने में हिचकिचाते हो?	☐	☐
9.	(ग)	क्या क्लास की पढ़ाई को समझने में तुम्हें कठिनाई होती है?	☐	☐
10.	(क)	क्या तुम अपने उन सहपाठियों से जिन्हें शिक्षक अधिक मानते हैं, ईर्ष्या करते हो?	☐	☐
11.	(ख)	क्या तुम शिक्षकों के बीच बेखटके चले जाते हो?	☐	☐
12.	(ग)	क्या क्लास की पढ़ाई को तुम ठीक से नोट कर लेते हो?	☐	☐
13.	(क)	क्या तुम, यह देखकर कि तुम्हारे बहुत से सहपाठी तुमसे अच्छे हैं, द्वेष करने लगते हो?	☐	☐
14.	(ख)	क्या स्कूल में तुम्हें कभी-कभी ऐसा लगता है कि तुम्हारा कोई मित्र नहीं है?	☐	☐
15.	(ग)	क्या क्लास में पढ़ाई के समय तुम प्रातः ऊँघते हो?	☐	☐
16.	(क)	कुछ विद्यार्थियों को आपस में बात करते देखकर तुम्हें लगता है कि शायद तुम्हारी निन्दा कर रहे हैं?	☐	☐
17.	(ख)	क्या तुम आसानी से दोस्ती कर लेते हो?	☐	☐
18.	(ग)	क्या तुम इस स्कूल के शिक्षकों की पढ़ाई से सन्तुष्ट रहते हो?	☐	☐
19.	(क)	क्या तुम इस स्कूल के किसी कार्यक्रम में आगे नहीं आने पर दूसरों पर अपना क्रोध प्रकट करने लगते हो?	☐	☐
20.	(ख)	जब कुछ लड़के इकट्ठे होकर बात करते हैं तो क्या तुम भी बेखटके शामिल हो जाते हो?	☐	☐

			हाँ	नहीं
21.	(ग)	क्या तुम ऐसा समझते हो कि स्कूल के शिक्षक तुम्हारी कठिनाई पर ध्यान नहीं देते हैं?	☐	☐
22.	(क)	क्या तुम स्कूल में प्रायः उदास और खिन्न रहते हो?	☐	☐
23.	(ख)	क्या तुम सहपाठियों से मिलकर एक साथ काम करना चाहते हो?	☐	☐
24.	(ग)	क्या तुम अपनी पढ़ाई की प्रगति से सन्तुष्ट हो?	☐	☐
25.	(क)	क्या तुमको ऐसा लगता है कि शिक्षक तुम्हारी अवहेलन करते हैं?	☐	☐
26.	(ख)	क्या तुम क्लास में शिक्षक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्ट करते हो?	☐	☐
27.	(ग)	क्या पढ़ना तुम्हारे लिए भार मालूम पड़ता है?	☐	☐
28.	(क)	क्या जब कोई विद्यार्थी शिक्षक से तुम्हारी साधारण शिकायत की बात करता है तो तुम आवेश में आकर उसको हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते रहते हो?	☐	☐
29.	(ख)	क्या तुम प्रायः एकान्त में रहना पसन्द करते हो?	☐	☐
30.	(ग)	क्या तुम्हारे शिक्षक पठन सम्बन्धी तुम्हारी कठिनाई को दूर करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं?	☐	☐
31.	(क)	क्या तुम अपने स्कूल से प्रायः असन्तुष्ट रहते हो?	☐	☐
32.	(ख)	क्या तुम अपने स्कूल के विद्यार्थियों से मेलजोल बढ़ाते रहते हो?	☐	☐
33.	(ग)	क्या तुम्हारे स्कूल के शिक्षक तुम्हारी प्रशन्सा करते हैं?	☐	☐
34.	(क)	क्या तुम गलती करने पर भी सीनाजोरी करने पर तुल जाते हो?	☐	☐
35.	(ख)	क्या तुम क्लास में आगे की सीटों पर बैठना पसन्द नहीं करते हो?	☐	☐
36.	(ग)	क्या परीक्षा में प्रायः तुम कम अंक पाते हो?	☐	☐
37.	(क)	क्या जब शिक्षक तुमसे कोई प्रश्न पूछते हैं तो तुम्हारे मन में उनके प्रति द्वेष का भाव उत्पन्न हो जाता है?	☐	☐
38.	(ख)	क्या तुम्हारा अपने सहपाठियों से मेलजोल रहता है?	☐	☐
39.	(ग)	क्या तुम यह चाहते हो कि स्कूल में और अधिक छुट्टियां रहें?	☐	☐
40.	(क)	क्या तुम अपने सहपाठियों द्वारा किए गए कुछ हंसी मजाक की बात पर भी तुरन्त तमतमा जाते हो?	☐	☐

			हाँ	नहीं
41.	(ख)	क्या स्कूल की गोष्ठियों में तुम खुलकर भाग लेते हो?	☐	☐
42.	(ग)	क्या तुम छुट्टी के पहले ही कभी-कभी स्कूल से चले जाते हो?	☐	☐
43.	(क)	क्या तुम अपने सहपाठी से प्रायः झगड़ लेते हो?	☐	☐
44.	(ख)	क्या तुम स्कूल के खेलकूद में भाग लेते हो?	☐	☐
45.	(ग)	क्या तुम्हारे कुछ शिक्षक तुम्हें प्रायः पढ़ाई के लिए डांटते हैं?	☐	☐
46.	(क)	क्या तुमको प्रायः स्कूल में दूसरों के प्रति शक बना रहता है?	☐	☐
47.	(ख)	क्या तुम अपने से ऊंचे क्लास के छात्रों से बातचीत करने में लज्जाते हो?	☐	☐
48.	(ग)	क्या तुम अपने शिक्षक को आदर की दृष्टि से देखते हो?	☐	☐
49.	(क)	जिस साथी से तुम्हारी पटती नहीं है उसके द्वारा कही गई अच्छी बात पर भी क्या तुम उद्‌ण्डता दिखाते हो?	☐	☐
50.	(ख)	क्या इस स्कूल में तुम्हारे कुछ घनिष्ठ मित्र हैं?	☐	☐
51.	(ग)	क्या क्लास में तुम्हारा ध्यान पढ़ाई की ओर लगा रहता है?	☐	☐
52.	(क)	क्या परीक्षा में कम अंक आने पर तुम में शिक्षक के प्रति द्वेष का भाव उत्पन्न हो जाता है?	☐	☐
53.	(ख)	क्या तुम अपने सहपाठियों की हर प्रकार की सहायता करने को तत्पर रहते हो?	☐	☐
54.	(ग)	क्या तुम स्कूल के पुस्तकालय से किताब तथा पत्र-पत्रिकायें लेकर पढ़ते हो?	☐	☐
55.	(क)	क्या तुम अपने से ऊपर क्लास के छात्रों से मिलने में प्रायः डरते हो?	☐	☐
56.	(ख)	क्या तुम स्कूल के अन्य विद्यार्थियों को चिढ़ाकर मजा लेते हो?	☐	☐
57.	(ग)	क्या तुम वाद-विवाद में भाग लेते हो?	☐	☐
58.	(क)	क्या अपने से नीचे क्लास के छात्रों से मिलने में तुम्हें ग्लानि होती है?	☐	☐
59.	(ख)	क्या तुम अपनी नोट बुक या पुस्तक अपने सहपाठियों के मांगने पर सहर्ष दे देते हो?	☐	☐
60.	(ग)	क्या तुम्हें शिक्षा सम्बन्धी बातों में दिलचस्पी रहती हैं?	☐	☐

Chaurasia Electric Press, Agra-4

T. M. No. 458715

A C M T

उपलब्धि प्रेरणा परीक्षण
(ACHIEVEMENT MOTIVE TEST)

वाक्य पूर्ति विधि पर आधारित

डॉ. वी.पी. भार्गव

अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग

आर.बी.एस. कालेज, आगरा

नाम- आयु- लिंग-

शैक्षिक स्तर- धर्म- जाति-

विवाहित/अविवाहित- कक्षा-

विद्यालय-

पिता का व्यवसाय- मासिक आय-

माता-पिता की शिक्षा का स्तर- दिनांक-

निर्देश

आगे के पृष्ठों पर कुछ अधूरे वाक्यांश (sentences) दिये गये हैं। इनमें से प्रत्येक के सामने तीन वैकल्पिक पूर्ति वाक्य सुझाव के रूप में दिये गये हैं। आपको दिये हुये इन अधूरे वाक्यों की पूर्ति करने के लिये इनमें के लिये इनमें से किसी एक, जिसे आप अपनी वर्तमान रुचि के अनुकूल एवं उपयुक्त समझते हैं, को चुनकर √ चिन्ह लगाना है। उदाहरणार्थ :-

मैं बहुत खुश होता हूँ जबकि मैं................

(क) दूसरों की सहायता करता हूँ। ☐

(ख) दूसरों के ध्यान का केन्द्र बनता हूँ। ☐

(ग) अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता हूँ। ☐

मान लीजिये, यदि उपर्युक्त वाक्यांशों में से पहले को चुनते हैं तो (क) के सामने वाले खाने में सही का चिन्ह (√) अंकित करें, यदि दूसरे वाक्यांश को चुनते हैं तो (ख) के सामने खाने में सही का चिन्ह (√) अंकित करें तथा यदि तीसरे वाक्यांश को अपनी रुचि के अनुकूल समझते हैं तो (ग) के सामने वाले खाने में चिन्ह (√) लगावें। इस प्रकार आपको केवल एक ही वाक्यांश चुनकर अपनी राय देनी है। इसी प्रकार, आपको आगे भी अपना उत्तर देता है। ध्यान रहे यहां, कोई सही या गलत उत्तर नहीं है। आपको उत्तर अपनी वर्तमान स्थितियों को सोचकर ही देना है।

यदि कोई शंका हो तो पहले पूछ लें। कार्य शीघ्रता से करें।

Estd. : 1971 Phone : 63551

नेशनल साइकलॉजिकल कारपोरेशन

4/230, कचहरी घाट, आगरा- 282004 (उ.प्र.)

1. मैं चाहता हूँ कि......................................
   (क) मेरा जीवन एक आदर्श घरेलू जीवन हो। ☐
   (ख) मैं समाज का सर्वप्रिय व्यक्ति बनूँ। ☐
   (ग) मैं ऐसा कार्य करूँ जिसमें कठिन प्रयासों की आवश्यकता हो। ☐

2. मैं...
   (क) उन समस्याओं को सुलझाना पसन्द करूंगा जो मुझे नये अनुभव प्रदान करें। ☐
   (ख) अपने देश की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को सुलझाना पसन्द करूंगा। ☐
   (ग) बहुत कठिन एवं गूढ़ प्रश्नों व पहेलियों को सुलझाना पसन्द करूंगा। ☐

3. मैं बहुत खुश होता हूं जबकि.................................
   (क) दूसरों को खुश देखता हूं। ☐
   (ख) दूसरों के ध्यान का केन्द्र स्वयं बनता हूं। ☐
   (ग) अपने कार्य में विशेष सफलता प्राप्त करता हूं। ☐

4. मेरी प्रबल इच्छा है कि...
   (क) मैं एक बड़ा राजनैतिक नेता बनूं। ☐
   (ख) मैं एक प्रसिद्ध समाज सुधारक बनूं। ☐
   (ग) मैं कुछ महत्वपूर्ण कार्य करूं। ☐

5. मेरा जीवन लक्ष्य..
   (क) एक सफल उपलब्धि को प्राप्त करना है। ☐
   (ख) समाज में उच्च स्तर प्राप्त करना है। ☐
   (ग) अपने राष्ट्र की सेवा करना है। ☐

6. मैं उन्हीं लोगों की प्रशंसा करना पसन्द करता हूं..
   (क) जिन्होंने अपने क्षेत्र में यथेष्ट इज्जत बना ली है। ☐
   (ख) जिनके अपने जीवन के कुछ सिद्धान्त हैं। ☐
   (ग) जिन्होंने अपना जीवन सेवा में लगा दिया हो। ☐

7. मैं...
   (क) अपने हाथ में लिये गये कार्यों में कैसे सफल हो सकता हूं, जानना चाहता हूं। ☐
   (ख) ईमानदारी से धन संचय करने का साधन क्या है, जानना चाहता हूं। ☐
   (ग) मोक्ष प्राप्त करने की सफल साधना कौन सी है, जानना चाहता हूं। ☐

8. मैं किसी कठिन कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व..
   (क) विस्तार से योजना बनाउंगा। ☐
   (ख) मार्ग में आ सकने वाली कठिनाइयों की कल्पना करूंगा। ☐
   (ग) दूसरों से सुझाव लूंगा। ☐

9. यह मेरा स्वभाव है कि...
   (क) मैं अपने मित्रों के लिये कुछ करता हूं। ☐
   (ख) मैं उन्हीं कार्यो को करता हूं जिसमें कौशल की आवश्यकता होती है। ☐
   (ग) मैं वस्तुओं को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित ढंग से रखूं। ☐

10. मैं प्रायः...
   (क) कठिन कार्यो को हाथ में लेने के लिये लालायित रहता हूं। ☐
   (ख) दुःखी व्यक्तियों की सहायता करने के लिसे लालायित रहता हूं। ☐
   (ग) नये स्थान, नये व्यक्तियों और नई वस्तुओं को देखने के लिये लालायित रहता हूं। ☐

11. मैं क्षुब्ध हो जाता हूं जब...
   (क) मेरे अपने ही मुझ पर दोषारोपण करते हैं। ☐
   (ख) मेरी उपेक्षा की जाये। ☐
   (ग) अपने इच्छित लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर पाता हूं। ☐

12. मैं कार्य को...
   (क) साफ सुथरे ढंग से पूर्ण करना पसन्द करता हूं। ☐
   (ख) दूसरों की अपेक्षा अधिक अचछा करना पसन्द करता हूं। ☐
   (ग) समय से पूर्व समाप्त करना पसन्द करता हूं। ☐

13. मैं...
   (क) उपन्यास पढ़ना एवं साहसिक कार्य करना पसन्द करता हूं। ☐
   (ख) अपने भविष्य के बारे में सोचना पसन्द करता हूं। ☐
   (ग) संसार के विभिन्न स्थानों की सैर करना पसन्द करता हूं। ☐

14. मैं प्रायः सोचता हूं कि...
   (क) नेता जैसा सम्मान प्राप्त करूं। ☐
   (ख) जीवन में कुछ महान कार्य करूं। ☐
   (ग) घायल और बीमार व्यक्तियों की सहायता करूं। ☐

15. मैं...
(क) अपने कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से करना पसन्द करता हूं। ☐
(ख) अपने मित्रों एवं साथियों के प्रति वफादार होना पसन्द करता हूं। ☐
(ग) अपने हाथ में लिये गये कार्य को अच्छा करना पसन्द करता हूं। ☐

16. मुझे बहुत खुशी होगी यदि...
(क) मैं बहुत धन कमा सकूं। ☐
(ख) मैं कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकूं। ☐
(ग) मैं स्वयं अपना स्वामी बन सकूं। ☐

17. मैं सदैव...
(क) सही एवं युक्तिसंगत कार्य व कारण के लिये लड़ने के लिये सदैव तत्पर रहता हूं। ☐
(ख) अपनी योग्यता को विकसित करने के लिये सदैव तत्पर रहता हूं। ☐
(ग) जातिगत भेदभाव एवं अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये सदैव तत्पर रहता हूं। ☐

18. मुझे पूर्ण विश्वास है कि पांच साल बाद...
(क) मैं अधिक धन अर्जित कर लूंगा। ☐
(ख) मैं अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति बन जाऊंगा। ☐
(ग) मैं स्वाधीन बन जाऊंगा। ☐

19. मैं चाहता हूं कि...
(क) मेरे विद्यालय का वातावरण अधिक प्रजातांत्रिक हो। ☐
(ख) मेरे शहर का वातावरण अधिक शांत एवं स्वस्थ हो। ☐
(ग) मेरे घर का वातावरण पढ़ने के अनुकूल हो। ☐

20. मैं उसी वस्तु को पसन्द करता हूं...
(क) जो मुझे अधिक धनवान बना सके। ☐
(ख) जो दूसरों से नेताओं जैसा सम्मान दिलाये। ☐
(ग) जिसे दूसरे कठिनाई से प्राप्त कर सकें। ☐

21. मुझे...
(क) प्रसिद्ध लोगों के सम्पर्क में रहने से काफी सन्तोष मिलता है। ☐
(ख) बहुत कठिन कार्य करने में काफी सन्तोष मिलता है। ☐
(ग) दूसरों का परीक्षण करने एवं निर्देशन देने में काफी सन्तोष मिलता है। ☐

22. मैं...

(क) सरल कार्य की अपेक्षा कठिन कार्य को प्राथमिकता देता हूं। ☐

(ख) बुजुर्गों एवं अनुभवी व्यक्तियों के साथ को प्राथमिकता देता हूं। ☐

(ग) मित्रों एवं दूसरे व्यक्तियों से मिलने वाले प्रोत्साहन को प्राथमिकता देता हूं। ☐

23. मैं विश्वास करता हूं कि मेरे लिये...

(क) उच्च सामाजिक स्तर प्राप्त करना सम्भव है। ☐

(ख) अपने हाथ में पर्याप्त शक्ति प्राप्त करना सम्भव है। ☐

(ग) मान्य शक्ति प्राप्त करना सम्भव है। ☐

24. मेरी इच्छा है कि मैं...

(क) अपने मित्रों के प्रति सदैव उदार रहूं। ☐

(ख) बीमार एवं गरीबों के प्रति सदैव सहानुभूति रखूं। ☐

(ग) कठिन कार्यों के करने में सफल होऊं। ☐

25. मुझे खुशी होती है जब...

(क) दूसरों के साथ चुटकुलों आदि से मनोरंजन करने का अवसर मिलता है। ☐

(ख) कठिन कार्य को सफलतापूर्वक समाप्त करता हूं। ☐

(ग) किसी पद लेने का अवसर मिलता है। ☐

26. मैं...

(क) अच्छी तरह से परीक्षा न देने के कारण दुःख का अनुभव करता हूं। ☐

(ख) किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उदासी का अनुभव करता हूं। ☐

(ग) मित्रों के प्रति अन्याय होने पर क्रोधित हो जाता हूं। ☐

27. सामान्य रूप से मुझे...कहा जा सकता है।

(क) सहनशील ☐

(ख) विनम्र ☐

(ग) आशवादी ☐

28. मेरी इच्छा है कि मैं...

(क) बहुत धनी व्यक्ति बनूं। ☐

(ख) एक सुखी एवं भाग्यशाली व्यक्ति बनूं। ☐

(ग) आश्चर्यजनक रूप से उपलब्धियां प्राप्त कर सकूं। ☐

29. समूह में कार्य करते हुये मेरी इच्छा होती है कि...
(क) इस कार्य को दूसरों से अच्छा करूं। ☐
(ख) इस समूह का नेतृत्व करूं। ☐
(ग) प्रत्येक वस्तु को व्यवस्थित ढंग से करूं। ☐

30. मैं स्वयं को उन लोगों की अपेक्षा अच्छा समझता हूँ...
(क) जो स्वभाव से असामाजिक हैं। ☐
(ख) जो उत्तरदायित्व का अनुभव नहीं करते हैं। ☐
(ग) जो अपने जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रखते हैं। ☐

31. मुझे...
(क) बच्चों के साथ आनन्द आता है। ☐
(ख) कठिन समस्याओं के सुलझाने में आनन्द आता है। ☐
(ग) मजाक पसन्द लोगों के साथ रहने में आनन्द आता है। ☐

32. मेरा विश्वास है कि...
(क) न्याय की तुलना में प्रेम अधिक ठीक है। ☐
(ख) मेरा भविष्य कुछ विशिष्ट कार्यो पर निर्भर करता है। ☐
(ग) प्रसिद्ध होने की अपेक्षा वफादार होना अच्छा है। ☐

33. मैं सामान्यतः...
(क) दूसरों के निर्णयों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता हूं। ☐
(ख) व्यवहार में विनम्र हूं। ☐
(ग) किसी कार्य को मैं तब तक करता रहता हूं जब तक समाप्त न हो जाये।

34. अधिकतर सामाजिक परिस्थितियों में...
(क) मैं परम्परागत बनने की कोशित करता हूं। ☐
(ख) मैं थोड़ा सा समाज के अनुरूप कार्य करने वाला बनने की कोशिश करता हूं। ☐
(ग) दूसरों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता हूं। ☐

35. मैं...
(क) कार्य या व्यवसाय में एक बड़ी शक्ति (authority) बनना पसन्द करता हूं। ☐
(ख) अपने सभी क्रियाकलापों को सुचारू रुप से करना पसन्द करता हूं। ☐
(ग) दुःखी लोगों के साथ मित्रता एवं सहानुभूति का व्यवहार करना पसन्द करता हूं। ☐

36. मेरी हार्दिक इच्छा..
(क) अधिक वेतन का कार्य प्राप्त करने की है। ☐
(ख) सुखी वैवाहिक जीवन का आनन्द प्राप्त करने की है। ☐
(ग) यशस्वी उपलब्धियां प्राप्त करने की है। ☐

37. मैं चाहता हूं कि मैं इतना योग्य बन सकूँ कि..
(क) ऐसे शब्दों का प्रयोग करूं जिसका अर्थ दूसरे न जानते हों। ☐
(ख) दूसरों की अपेक्षा अच्छा कार्य कर सकूं। ☐
(ग) जो मुझे हानि पहुंचाये, उन्हें माफ कर सकूं। ☐

38. मैं..
(क) अपने व्यवसाय में बड़ा आदमी बनने का भरसक प्रयास करता हूं। ☐
(ख) यथा सम्भव सत्य पर अडिग रहने का भरसक प्रयास करता हूं। ☐
(ग) असहाय लोगों की सहायता करने का भरसक प्रयास करता हूं। ☐

39. मेरी प्रायः इच्छा होती है कि..
(क) मैं ईश्वर का सच्चा उपासक बनूं। ☐
(ख) मैं गरीबों के उत्थान के लिये निःस्वार्थ कार्य कर सकूं। ☐
(ग) मैं किसी कार्य में अतिरिक्त सफलता प्राप्त कर सकूं। ☐

40. मैं..
(क) उन परिस्थितियों की उपेक्षा करता हूं जो स्पर्धात्मक नहीं है। ☐
(ख) प्रसन्नता व अनुत्तरदायी (without responsibility) सुख खोजने वाले व्यक्तियों की उपेक्षा करता हूं। ☐
(ग) मानसिक रूप से भ्रमित एवं अव्यवस्थित व्यक्तियों की उपेक्षा करता हूं। ☐

41. मैं चाहता हूं कि कि दूसरे मेरे बारे में यह सोचें कि..
(क) मैं बहुत परिश्रमी हूं। ☐
(ख) मैं बहुत अच्छे स्वभाव का हूं। ☐
(ग) मैं बहुत बुद्धिमान हूं। ☐

42. मुझे तब बहुत अच्छा लगता है जब..
(क) मैं दूसरों को अपने व्यक्तिगत अनुभव कहता हूं। ☐
(ख) मुझे दूसरों को समझाने के लिये कहा जाता है। ☐
(ग) मुझे कठिन कार्य करना होता है। ☐

43. मैं सदैव...
    (क) अपने क्रियाकलापों को अपने ढंग से करता हूं। ☐
    (ख) अपने व्यवहार से प्रत्येक को खुश रखने का प्रयास करता हूं। ☐
    (ग) अपने अधीन कार्य को अच्छे से अच्छा करने का प्रयास करता हूं।

44. अपनी योग्यता के मूल्यांकन के सम्बन्ध में सोचाता हूं कि..
    (क) मेरे शिक्षक दूसरों का पक्ष लेते हैं। ☐
    (ख) मुझे जो श्रेणी दी गई है वह मेरे परिश्रम के अनुपात में है। ☐
    (ग) मेरी श्रेणी मेरे परिश्रम के अनुपात में कम है। ☐

45. मैं...
    (क) नैतिक रूप से ठीक व्यक्ति हूं। ☐
    (ख) ऊंचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ हूं। ☐
    (ग) उन व्यक्तियों के प्रति सहिष्णु हूं जो मुझे चोट पहुंचाते हैं। ☐

46. मैं चिन्तित रहता हूं...
    (क) अपनी कमियों को जानने के लिये ताकि उन्हें दूर कर सकूं। ☐
    (ख) अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने के प्रति। ☐
    (ग) समूह में आकर्षण का केन्द्र बनने के प्रति। ☐

47. मैं कष्ट उठा लेता हूं...
    (क) कि मेरे द्वारा दूसरों की भावनाओं को कष्ट न पहुंच। ☐
    (ख) दूसरों के आरोपों से बचने के लिये। ☐
    (ग) कठिनाइयों को दूर करने के लिये एवं उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने हेतु। ☐

48. मैं...
    (क) साहसी हूं लेकिन अनावश्यक खतरों व जोखिमों से बचता हूं। ☐
    (ख) समय का पाबन्द हूं और कभी भी कार्य को स्कूल जाने या मिलने के वायदे के लिये देर नहीं करता हूं। ☐
    (ग) अपने कार्य को साफ सुव्यवस्थित ढंग से करता हूं। ☐

49. मेरे मतानुसार आनन्द और खुशी के लिये किसी व्यक्ति को...
    (क) जीवन की आधारभूत सुविधाओं को प्राप्त करना चाहिये। ☐
    (ख) अधिक उपलब्धियों को लगातार बढ़ाना चाहिये। ☐
    (ग) दानशीलता प्राप्त करनी चाहिये। ☐

50. जिस कार्य को मैं अपने हाथों में लेता हूं...
    (क) उसे पूर्ण शक्ति के साथ करना पसन्द करता हूं। ☐
    (ख) उसे पूर्ण दायित्व के साथ करना पसन्द करता हूं। ☐
    (ग) उसे पूर्व योजना बनाकर करना पसन्द करता हूं। ☐

✻✻✻✻✻✻